॥ श्रीः ॥

संस्कृतशीघ्रबोधिनी ।

प्रथमभाग ।

जिसको

पण्डितशङ्करलालशर्म्मा सुपरिण्टेण्डेण्ट

शिक्षाविभाग खेतड़ी

ने

संस्कृतविद्यार्थियों के उपकारार्थ

बनाया ।

काशी ।

भारतजीवनयन्त्रालय में मुद्रित हुई ।

1900.

प्रथम बार १००० प्रति]   [मूल्य ॥)

DEDICATED

TO

A. VENIS ESQR, M. A.

PRINCIPAL SANSKRIT COLLEGE

BENARES.



AS A TOKEN OF LOVE AND REVERENCE

BY

THE AUTHOR.

संकेत जो इस पुस्तक में दिये हैं।

उपधा—अन्त के अक्षर से पहले का अक्षर उपधा कहलाता है।

उ,—उत्तम पुरुष।
म,—मध्यम पुरुष।
प्र,—प्रथम पुरुष।
ए,—एकबचन।
द्वि,—द्विबचन।
ब,—बहुबचन।
पु,—पुल्लिङ्ग।
स्त्री,—स्त्री लिङ्ग।
न,—नपुंसक लिङ्ग।
गु,—गुणवाचक शब्द।
१—प्रथम गण (भ्वादि)।
२—द्वितीयगण (अदादि)
४—चतुर्थ गण (दिवादि)।
६—छठा गण तुदादि।
तिवादि—वे प्रत्यय हैं जो धातु में काल पुरुष और बचन के भेद से लगाये जाते हैं वे 'ति' 'त:' "अन्ति" इत्यादि हैं।
प०—परस्मैपद।
आ०—आत्मनेपद।
उ०प०—उभयपद अर्थात् आत्मने व परस्मैपद।

धातुओं में जो उपसर्ग लगने से भेद हो जाता है वे संक्षेप से इस रीति से लिखे गये हैं कि धातु पहले लिख दिया गया है और फिर उपसर्ग ऐसे ( ) कोष्ट में लिख कर उसके आगे एक छोटी लकीर होगी जिस से जानना चाहिये कि यहां धातु लगेगा—जैसे गम् [गच्छ्] १ गण-प = जाना, (अधि-) (अर्थात् अधि के साथ) = पाना, अधिगच्छति = वह पाता है॥



श्रीशङ्कर।

भूमिका ।

सर्ब विद्वान् व पण्डितजन जानते हैं कि संस्कृत का पढ़ना भी आज कल अधिक हो चला है इसकी ओर सबका मन झुकता है और सबकी रुचि संस्कृत सीखने की अधिक रहती है परन्तु इसका व्याकरण इतना कठिन है कि कोई मनुष्य साधारण रीति से सहज में सीखना चाहे तो नहीं सीख सकता क्योंकि पाणिनीय सिद्धान्त कौमुदी इत्यादि में जो रीतें हैं वे पूर्णता को तो लिये हुए हैं पर कठिन इतनी हैं कि सहज में वह जाल सुलझ नहीं सकता इस कारण से बहुत से विद्वानों ने अंगरेज़ी में और कई एक विद्वानों ने हिन्दी भाषा में भी संस्कृत के व्याकरण बनाये हैं परन्तु जितने बने हैं उनमें से किसी में भी सिवाय डाक्टर रामकृष्ण गोपाल भण्डार के संस्कृत वाक्य नहीं दिये हैं इससे विद्यार्थी को केवल व्याकरण के सूखे नियम याद करने पड़ते हैं और उदाहरण के वाक्य होने से वे नियम हृदय में खचित हो जाते हैं और समझ में अच्छे प्रकार से बैठ जाते हैं—यह बात विचार के मैंने यह पुस्तक हिन्दी में ऐसी रीति पर बनाई है कि हिन्दी भाषा जाननेवाले भी इस रीति से संस्कृत सहज में सीख लें ॥

इस बार यह पुस्तक शीघ्रता के साथ बनाई गई और छपवाई गई है इस कारण से जो इसमें कोई अ-शुद्धि वा भूल चूक रह गई हो उसको विद्वान् लोग क्षमा करके यदि मुझ को सूचित करेंगे तो मैं उनका अतिही कृतज्ञ हूँगा और पुनरावृत्ति में वे अशुद्धियाँ निकाल दी जावेंगी—

इसके पढ़ने से संस्कृत विद्यार्थीगण यदि उपकार उठावेंगे तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूँगा और इसके प्रचार हो जाने पर दूसरा भाग भी प्रकाशित किया जायगा । और सर्वशक्तिमान् परमेश्वर मेरे इस श्रम को सफल करें ।

पण्डित शङ्करलालशर्म्मा ।

संस्कृत शीघ्रबोधिनी ।

पाठ पहला ।

वर्णमाला ।

स्वर ।

अ आ इ ई उ ऊ

ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ

ओ औ (अनुस्वार ं विसर्ग :) *

इस प्रकार से १४ स्वर हैं—परन्तु मुख्य स्वर तीनही ज्ञात होते हैं अर्थात् अ, इ, उ, और इन्हीं के दीर्घ हो जाने से यह छः हो जाते हैं प्लुत † हो जाने से ये ९ हो जाते हैं अर्थात् प्रत्येक तीन स्वरों के ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, ये तीन २ भेद हो जाने से इन्हीं तीन स्वरों के ९ भेद हो गये और ऋ ॠ ऌ ॡ ये स्वर उच्चारण में तो स्वर से प्रतीत नहीं पड़ते परन्तु इनका बर्ताव स्वरों का सा होता है इसी कारण से स्वरों में लिखे गये हैं और ए, ऐ, ओ, औ ये संयुक्त अक्षरों में हैं जैसा कि आगे ज्ञात होगा—

* स्वरों के साथ इसलिये लिखे गये हैं कि ये स्वरों ही के आगे आते हैं॥

† ह्रस्व स्वर के उच्चारण में जितना काल लगता है उससे दूना दीर्घ में, और तिगुना प्लुत में और यह इस प्रकारसे लिखा जाता है (ओ३)

व्यञ्जन ।

क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण् त् थ् द् ध् न्
प् फ् ब् भ् म् य् र् ल् व् श्
ष् स् ह् ।

इस प्रकार से ३३ व्यञ्जन हैं—और संस्कृत के अक्षर मुख के जिस स्थान व प्रयत्न से उच्चारण होते हैं उनके अनुकूल इनके भेद किये गये हैं जैसा कि नीचे के कोष्ट कों से जान पड़ेगा—

ए, ऐ, का स्थान कण्ठ तालु और ओ, औ का कण्ठ ओष्ठ है।

स्थान ।	अघोष		घोष		सानुनासिक	अन्तस्थ	ऊष्माण	स्वर	
	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण				ह्रस्व	दीर्घ
कण्ठस्थानीय	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्		ह्	अ	आ
तालुस्थानीय	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	य्	श्	इ	ई
मूर्द्धस्थानीय	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	र्	ष्	ऋ	ॠ
दन्तस्थानीय	त्	थ्	द्	ध्	न्	ल्	स्	ऌ	ॡ
ओष्ठस्थानीय	प्	फ्	ब्	भ्	म	व्		उ	उ

श, ष, स, को भी अघोष जानो ॥

पाठ २

(१) संस्कृत में पद के दो भेद हैं-(१) संज्ञा (या सुबन्त) (२) क्रिया (या तिङन्त)।

(२) संज्ञा पद में-तीन लिङ्ग, (पुल्लिङ्ग, स्त्री, व नपुंसक) और ८ कारक (१) कर्ता, (२) कर्म, (३) करण, (४) सम्प्रदान, (५) अपादान, (६) सम्बन्ध, (७) अधिकरण, (८) सम्बोधन और प्रत्येक कारक में तीन बचन, एक बचन, द्विबचन, बहुवचन होते हैं, इन कारकों के नाम प्रथमा, द्वितीया इत्यादि भी हैं।

(१) कर्ता—काम के करनेवाले को कहते हैं।

(२) कर्म—जिस पर काम किया जाय, या जो काम किया जाय।

(३) करण—जिसके द्वारा काम किया जाय।

(४) सम्प्रदान—जिसको दिया जाय, या जिसके अर्थ किया जाय।

(५) अपादान—जिससे कोई काम आरम्भ हुआ हो।

(६) सम्बन्ध—दो संज्ञा पदों में सम्बन्ध को बताता है।

(७) अधिकरण—जिस स्थान में कोई काम हुआ।

(८) सम्बोधन—बुलाने या पुकारने में काम आता है।

(३) क्रिया में लिङ्गभेद नहीं है बचन तीनही हैं और तीन पुरुष हैं उत्तम, मध्यम, प्रथम उत्तम जैसे मैं, मध्यम जैसे तू, प्रथम जैसे वह।

काल के अनुसार लकार १० हैं, परन्तु इस प्रथम पुस्तक में चारही लकार दिये हैं।

(१) लट्—वर्तमानकाल में आता है।

(२) लङ्—अनद्यतन भूतकाल में।

(३) लोट्—आज्ञा में, प्रेरणा में।

(४) लिङ्—इच्छा, प्रार्थना में।

इन चारों लकारों में प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं। परस्मैपद और आत्मनेपद। कई धातु केवल आत्मनेपद में आते हैं कई केवल परस्मैपद में और कई दोनों में आते हैं। प्रत्यय लगाने से पहले और कुछ भी लगता है इस कारण से कुल धातुओं के दस भेद हैं उनको गण कहते हैं, इन गणों के नाम धातुओं के नाम से हैं और संख्या के नाम से भी—जैसे भ्वादि या पहला गण, अदादि या दूसरा गण, दिवादि या चौथा गण, तुदादि या छठा गण, चुरादि या दसवां गण, और गणों का वर्णन इस पुस्तक में नहीं किया जायगा इस कारण उनके नाम भी नहीं लिखे हैं।

अव्यय-शब्द वे हैं जो वैसे के वैसे रहते हैं अर्थात् इनमे कोई विभक्ति नहीं रहती।

(४) संस्कृत में विशेषण अर्थात् गुणवाचक शब्द का कारक, बचन, व लिङ्ग वही रहता है जो कि विशेष्य अर्थात् उस पद का जिस्का कि वह गुण वर्णन करता है और कर्ता और क्रिया दोनों समान बचन और पुरुष के होते हैं।

(५) संस्कृत में वाक्य बनाते समय पद को आगे पीछे रखने का कुछ नियम नहीं है। चाहे तो पहले कर्त्ता, फिर क्रिया, फिर कर्म इस रीति से जैसे अंगरेजी में होती है या कर्त्ता, कर्म, क्रिया इस रीति से जैसे हिन्दी भाषा में आता है या क्रिया, कर्म, कर्त्ता या और किसी रीति से रक्खें कुछ अन्तर नहीं होता है—

जैसे रामो रावणं जयति, या रामो जयति रावणम् या जयति रावणं रामः इत्यादि—

वाक्य तीन प्रकार के होते हैं एक कर्तृवाच्य, जिसमें कि कर्त्ता या काम का करनेवाला प्रथमा विभक्ति में बोला जावे। दूसरे कर्मवाच्य, जिसमें कर्म प्रथमा के रूप में रहता है (यह सकर्मक धातु का होता है) और तीसरे भाववाच्य, यह अकर्मक धातु का होता है। कर्मवाच्य व भाववाच्य, में कर्त्ता तृतीयान्त होता है॥

पाठ ३

क्रिया।

बर्तमानकाल।

परस्मैपद।

एक बचन के प्रत्यय।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
मि	सि	ति

प्रथम गण * अर्थात् भ्वादि गण के धातु।

पच्—पकाना या रींधना।
पत्—गिरना।
गम्—[गच्छ†] जाना।
नी (नय्‡) चलाना लेजाना

बुध्—(बोध्) जानना समझना।
भू (भव्) होना।
वस्—रहना।

* संस्कृत में कुल धातुओं के १० भेद हैं प्रत्येक को गण कहते हैं और इन गणों के नाम पहला, दूसरा इत्यादि इस प्रकार से भी हैं या उस धातु के नाम से हैं जौन सा धातु कि उस गण के धातुओं में से पहले बोला जाता है जैसे भ्वादि गण नाम इस कारण से है कि पहले गण के जितने धातु हैं उनमें जो धातु पहिले बोला जाता है वह भू है।

† धातुओं का स्वरूप जो प्रत्यय लगाने से पहले बदल जाता है वह ऐसे [ ] कोष्ठ के भीतर लिखा गया है जैसे गम् धातु के आगे जब "मि" "सि" या "ति" इत्यादि इनमें से कोई प्रत्यय लगाया जाय तो गम् का गच्छ् होकर वह प्रत्यय लगेगा॥

‡ धातु के अन्त के स्वर और उपधा के ह्रस्व स्वर को पहले गण में अ, के पहिले गुण हो जाता है। इ या ई का गुण ए, और उ या ऊ का गुण ओ, ऋ या ॠ का अर्, और ऌ का अल् है—जैसे 'नी' का हुआ 'ने' और उसके आगे लगता है अ और फिर ति—संस्कृत में यह नियम है कि दो स्वर बिना मिले बहुधा पास २ नहीं रह सकते और इस स्थान में जो नियम लगना चाहिये वह यह है कि ए, ओ, ऐ, औ के आगे स्वर आवे तो इनका क्रम से अय्, अव्, आय्, वा आव् हो जाता है और आगे स्वर से जा मिलता है—जैसे ने + अ = नय् + अ = नय, और फिर जोड़ा ति, तो नय + ति = नयति। इसी तरह से भू का भवति—और इस ऊपर के नियम से धातु का जो स्वरूप हो जाता है वह ऐसे ( ) कोष्ट में लिखा है॥

सृ (सर्) सरकना, चलना।
रक्ष्—पालना, बचाना।
वद्—बोलना।
चर्—जाना, चलना खाना
जीव्—जीना।
त्यज्—छोड़ना।
दह्—जलाना।
नम्—झुकना।
जि (जय्) जीतना।
धाव्—दौड़ना भागना।
दृश् [पश्य्] देखना।

प्रथम गण के धातुओं में प्रत्यय लगाने से पहले अ, और जोड़ा जाता है॥

उत्तम पुरुष के उन प्रत्ययों से पहिले जिनका प्रथम अक्षर म्, या व्, हो उससे पूर्व का अ, दीर्घ हो जाता है।

पचामि ।	वदति ।	चरति ।	जयति ।
गच्छामि ।	बोधसि ।	जीवसि ।	धावति ।
नयसि ।	भवामि ।	त्यजामि ।	पश्यामि ।
पतसि ।	वसति ।	दहति ।	
रक्षति ।	सरति ।	नमामि ।	

(वह) पकाता है	(मैं) जीतता हूँ	(तू) रहता है।
(तू) जाता है	(तू) बोलता है	(मैं) चलता हूं
(वह) चलाता है	(वह) झुकता है	(वह) सरकता है
(वह) गिरता है	(मैं) समझता हूँ	(मैं) गिरता हूं
(तू) देखता है	(तू) जलाता है	(वह) दौड़ता है
(वह) छोड़ता है	(वह) होता है	(मैं) पालता हूं
(तू) दौड़ता है	(तू) छोड़ता है	(मैं) ले जाता हूं
(तू) पालता है	(मैं) जीता हूं	

पाठ ४

दूसरागण * (अदादि)

अस्—होना । अद्—खाना ॥

चौथा (दिवादि) गण

कुप् = गुस्से होना । क्षुभ् = भड़कना । नश् = नाश होना, न दीखना । नृत् = नाचना । पुष् = पोसना, पालना । मुह् = बेहोश होना, मूर्छित होना । लुभ् = लोभ करना ।

छठा (तुदादि) गण

इष् [इच्छ्] चाहना । क्षिप् = फेंकना । तुद् = दुःख देना । दिश् = दिखाना, समझाना । प्रच्छ् [पृच्छ्] = पूछना । मुच् [मुञ्च्] = छोड़ना । विश् = बड़ना, भीतर जाना । सृज् = छोड़ना, पैदा करना । स्पृश् = छूना ॥

बहुबचन प्रत्यय ।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुप	प्रथम पुरुष
मस्	थ	अन्ति †

* दूसरा गण बहुत कठिन है इसलिये उसके केवल दो धातु इस प्रथम भाग में दिये गये हैं इन धातुओं का पूर्ण प्रकरण दूसरे भाग में होगा ॥

† ऐसे प्रत्ययों के पहले जिनके आदि का अक्षर अ होता है धातुओं का अ लोप हो जाता है ॥

दूसरे गण के धातुओं में (तिवादि) प्रत्यय लगाने से पहले और कुछ नहीं जोड़ा जाता है।

चौथे गण में 'य' और छठे गण में 'अ' प्रत्यय लगाने से पहले जोड़ दिये जाते हैं *।

अस् धातु का 'अ' द्विवचन व बहुवचन प्रत्ययों के पहिले गिरा दिया (लोप हो) जाता है।

असि †।	भवन्ति।	अत्थः +।	दिशथ।
अस्मि।	वसथ।	कुप्यामः।	मुह्यथ।
पचामः ‡।	स्मः।	क्षुभ्यथः।	लुभ्यामः।
धावन्ति।	विशथ।	नृत्यन्ति।	स्पृशन्ति।
पतथ।	दहन्ति।	क्षिपामः।	जीवामः।
गच्छामः।	स्थ।	तुदन्ति।	नमथ।

* इन गणों के धातुओं में उनके स्वरों का गुण नहीं होता है जैसा कि प्रथम गण भ्वादि के धातुओं के स्वरों में होता है॥

† अस् धातु के अन्त का अक्षर स्, सि प्रत्यय के पहले लोप हो जाता है।

‡ पदान्त सकार के आगे कोई अक्षर हो या न हो और पदान्त रकार के आगे यदि अघोष अक्षर हो या कोई अक्षर न हो तो इन (स्–र्) दोनों का विसर्ग हो जाता है॥

+ अघोष प्रयत्नवाले अक्षरों के पहले जो व्यञ्जन आता है वह सिवाय सानुनासिक अक्षरों के अपने वर्ग का प्रथम अक्षर बन जाता है जैसे ककुभ् + प्रान्त = ककुप्प्रान्त और दृषद् + पतति = दृषत्पतति॥

प्रथम (भ्वादि) गण

पा [पिब] = पीना । यज् = पूजा करना, यज्ञ करना। वह् = ले जाना, बहना । स्मृ (स्मर्) = याद रखना । हृ (हर्) = ले आना ।

चौथा (दिवादि) गण

अस्–फेंकना । कुस्–मिलना (बाथ घालकर)। तुष्–तृप्त, राजी होना । लुट्–लोटना । शुष्–शोषना, सूखना।

छठा (तुदादि) गण

उञ्छ् = दाना चुगना । कृष् = हल चलाना । स्फुर् = फरकना । सिच् [सिञ्च्] छिड़कना या सींचना ॥

(वे) बोलते हैं ।	(तुम) दुःखदेते हो	(हम) मूर्छित होते हैं ।
(तुम) खाते हो ।	(हम) पीते हैं ।	(वे) लोभ करतेहैं
(वे) छोड़ते हैं ।	(वे) पूजा करते हैं	(हम) चाहते हैं ।
(हम) चलाते हैं ।	(तुम)गुस्से होतेहो	(तुम)दिखलातेहो
(वे) हैं ।	(वे) भड़कते हैं ।	(हम) पूछते हैं ।
(तुम) बसते हो ।	(तुम)नाशहोतेहो	(तुम)भीतर जाते हो ।
(हम) जाते हैं ।	(हम) पालते हैं ।	(वे) याद करते हैं
(वे) फेंकते हैं ।	(तुम) लोटते हो ।	(हम) चुगते हैं ।
(तुम) लेजाते हो।	(वे) सूखते हैं ।	(तुम)हलचलातेहो
(हम) बाथ घालकर मिलते हैं ।	(तुम) राजीहोते हो ।	(हम) सींचते हैं
(तुम) जीते हो।	(वे) नाचती हैं।	

पाठ ५

द्विवचन।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
वस्	थस्	तस्

दशवें (चुरादि) गण के धातु *

कथ् = कहना। गण्–गिनना, समझना, मानना। घुष्—(घोष्) प्रसिद्ध करना। चिन्त् = विचार करना। चुर् † (चोर्) = चोरी करना। पीड् = दुःख देना। प्रथ् = छापना, फैलाना। प्री [प्रीण्] प्रसन्न करना। रच् = रचना। स्पृह् = चाहना॥

दशवें गण के धातुओं में प्रत्यय लगाने से पहले "अय" जोड़ा जाता है॥

* इस गण के धातु बहुधा दोनों (परस्मै व आत्मने) पद में आते हैं।

† कुछ धातुओं के (सिवाय कथ्, गण्, रच्, प्रथ् इत्यादि के) अन्त के स्वर व उपधा के "अ" की वृद्धि हो जाती है। अ की वृद्धि आ और इ ई की वृद्धि ऐ, उ ऊ की वृद्धि औ, ऋ ॠ की वृद्धि आर्, और ऌ की आल् है। और उपधा का ह्रस्व स्वर (सिवाय कुछ धातुओं के जैसे स्पृह्, मृग् आदि के) गुण हो जाता है जैसे चि का चै और उसके आगे अय लगाने से चायय रूप हुआ और ति, लगाने से चाययति सिद्ध हुआ— तड्+अय+ति = ताडयति— घुष् + अय + ति = घोषयति॥

कथयावः ।	अस्यथः ।	स्फुरतः ।	रचयथः ।
वदावः ।	तुष्यावः ।	सिञ्चावः ।	स्पृहयावः ।
यजथः ।	घोषयतः ।	चोरयथः ।	प्रीणयतः ।
गणयतः ।	कृषथः ।	वहतः ।	प्रथयथः ।
पिवथः ।	लुट्यावः ।	पीडयथः ।	
कुप्यावः ।	चिन्तयावः ।	स्मरावः ।	

भ्वादि गण ।

अट्—फिरना । चल्—चलना । जल्प्—बोलना । निन्द्—निन्दा करना । शंस्—प्रशंसा करना ।

दिवादि गण ।

श्लिष्—मिलना या आलिङ्गन करना ।

चुरादि गण ।

पूज्—पूजना । वर्ण्—वर्णन करना । सान्त्व्=ठराढा करना ।

(हम दो) दुःख देते हैं ।	(तुमदो) रचतेहो	(हमदो) प्रसन्न करते हैं ।
(वेदो) कहते हैं ।	(हमदो) चाहतेहैं	(तुमदो) निन्दा करते हो ।
(हमदो) गिनते हैं	(तुमदो) बिचारते हो ।	(वेदो) क्रुद्धहोते हैं
(तुमदो) देखते हो	(हमदो) प्रसिद्ध करते हैं ।	(हमदो) हल चलाते हैं ।
(वेदो) पैदा होते हैं ।	(वेदो) कांपते हैं	

(वे दो) पूजते हैं।
(हम दो) बिचरते हैं
(तुम दो) बोलते हो
(तुम दो) भड़कते हो
(वे दो) चुगते हैं।
(हम दो) वर्णन करते हैं।
(वे दो) आलिङ्गन करते हैं।

(हम दो) शान्ति करते हैं।
(वे दो) बोलते हैं।
(तुम दो) प्रशंसा करते हो।
(हम दो) हैं।
(वे दो) पकते हैं।
(तुम दो) समझते हो।

(हम दो) खाते हैं।
(वे दो) सन्तुष्ट हैं।
(हम दो) लालच करते हैं।
(तुम दो) लोटते हो
(वे दो) छूते हैं।
(हम दो) पूछते हैं

पाठ ६

भ्वादि गण।

क्षि (क्षय्) नाश होना, क्षीण होना। द्रु (द्रव्) पानी टपकना, गीला होना, चलना। रुह् (रोह्) उगना। स्था [तिष्ठ्] खड़ा होना, ठहरना। ह्वे (ह्वय्) बुलाना, पुकारना॥

दिवादि गण।

मद् (माद्) पागल होना, गलती करना। शम् (शाम्) शान्ति, चैन में होना। श्रम् (श्राम्) थकना, मेहनत करना॥

चुरादि गण ।

क्षल् (क्षाल्) धोना। तड् (ताड्) मारना, पीटना। तुल् (तोल्) तोलना। भूष् गहना पहनना या पहनाना॥

पुष्यति ।	स्पृशसि ।	पीडयसि ।	ताडयन्ति ।
नृत्यामि ।	विशति ।	क्षयति ।	मुह्यति ।
जयामि ।	पिबावः ।	स्वः ।	रचयथ ।
वसतः ।	स्पृहयन्ति ।	रोहति ।	पचावः ।
गच्छथ ।	इच्छसि ।	कथयसि ।	घोषयति ।
हरामि ।	दहथ ।	तुष्यसि ।	तुष्यन्ति ।
लुभ्यथ ।	गच्छथ ।	ह्वयामः ।	पूजयथ ।
श्राम्यसि ।	यजामि ।	तोलयति ।	स्मरामि ।
कथयथ ।	क्षालयन्ति ।	विशामि ।	
इच्छामि ।	चोरयति ।	चोरयन्ति ।	

(तू) बोलता है ।	(वे) उगते हैं ।	(हमदो) देखते हैं।
(तुम) रहते हो ।	(वह) जीतता है।	(मैं) गिरता हूं ।
(हम) समझते हैं।	(तुम) छोड़ते हो।	(तुम) याद रखते हो ।
(वह) मूर्छित होता है ।	(वे) पूजा करते हैं	(तुम) चाहते हो।
(वह) पीटता है ।	(वे) पीटते हैं ।	(वह) पुकारता है
(वेदो) ले जाते हैं	(वह) बचाता है ।	(वे) ले जाते हैं ।
(मैं) चाहता हूँ ।	(वह) कूता है।	(वेदो) सहते हैं ।
	(मैं) खड़ा हूँ।	

(वह) धोता है ।	(तू) नाश होता है	(वे) पकाते हैं ।
(तू) जीतता है ।	(मैं) तृप्त होता हूं	(हम) हल चलाते हैं ।
(वे) दुःख देते हैं	(हम) जीते हैं ।	(तुमदो) पूछते हो
(तुमदो) खाते हो	(तुम) प्रसिद्ध करते हो ।	(तुम) प्रशंसा करते हो ।
(तू) सींचता है ।	(वे) नाचते हैं ।	(मैं) पालता हूं ।
(वेदो) नाश होतेहैं	(तुमदो) फेंकते हो	(वे) पानी देते हैं।
(हम) पूजते हैं ।	(तुम) छोड़ते हो ।	(वह) विचारता है
(वे) हैं ।	(वह) गिनता है ।	
(वे) लोटते हैं ।	(हम) भीतर जाते हैं ।	
(मैं) खाता हूं ।	(मैं) कहता हूँ ।	
(मैं) मेहनत करता हूँ ।		

उदाहरण—पिछली बातों के ।

भ्वादि गण ।

	एकबचन	द्विबचन	बहुबचन ।
उत्तम पुरुष	जीवामि	जीवावः	जीवामः ।
मध्यम पुरुष	जीवसि	जीवथः	जीवथ ।
प्रथम पुरुष	जीवति	जीवतः	जीवन्ति ।

दिवादि गण ।

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब० ।
उत्तम पु०	तुष्यामि	तुष्यावः	तुष्यामः ।
मध्यम पु०	तुष्यसि	तुष्यथः	तुष्यथ ।
प्रथम पु०	तुष्यति	तुष्यतः	तुष्यन्ति ।

छठा (तुदादि) गण।

	एकव०	द्विव०	ब०व०
उत्तम पु०	दिशामि	दिशावः	दिशामः ।
मध्यम पु०	दिशसि	दिशथः	दिशथ ।
प्रथम पु०	दिशति	दिशतः	दिशन्ति ।

चुरादि गण।

	एकव०	द्विव०	ब०व०
उत्तम पु०	भूषयामि	भूषयावः	भूषयामः ।
मध्यम पु०	भूषयसि	भूषयथः	भूषयथ ।
प्रथम पु०	भूषयति	भूषयतः	भूषयन्ति ।

परीक्षा के प्रश्न।

(१) अन्त का स् और र् का बदल कर क्या हो जाता है? और कहाँ बदलता है ?॥

(२) लट् लकार अर्थात् वर्तमान काल के प्रत्यय बताओ॥

(३) इ उ ऋ लृ इनके गुण और वृद्धि बताओ ॥

(४) कण्ठस्थानीय, दन्तस्थानीय, घोष, अघोष, तालुस्थानीय, ओष्ठस्थानीय, मूर्द्धस्थानीय, अन्तस्थ अल्पप्राण महाप्राण अक्षर कौन २ से हैं ? अलग २ बताओ ॥

(५) पहलो, दूसरो, चौथो, छठो, दशवों गण, के चिन्ह क्या हैं ?

(६) उत्तम पुरुष के व, और म, के पहले अकार का बदल कर क्या हो जाता है ? ॥

(७) ए, ओ, ऐ, औ, के आगे जब स्वर आता है तो इन-का बदल कर क्या हो जाता है ? उदाहरण सहित बताओ ॥

(८) अघोष प्रयत्न के पहले किसी व्यञ्जन का बदल कर क्या हो जाता है ? उदाहरण सहित लिखो ॥

(९) मुख्य स्वर कितने हैं ? उनके कितने भेद हैं ? प्लुत किसको कहते हैं ?

(१०) लट् लकार अर्थात् वर्तमानकाल के रूप ले जाओ। यहाँ विद्यार्थी को उचित है कि प्रत्येक गण में से जितने गण उसने पढ़े हैं उतने धातुओं के रूप ले जावे कि जिससे उसके हृदय में ये रूप खचित हो जावें ॥

धातुओं के पहले उपसर्ग लगाने से धातुओं के अर्थ में भेद हो जाता है इस कारण से नीचे कुछ उपसर्ग लिखे जाते हैं और उदाहरण के सहित भेद दिखलाये गये हैं ॥

अति—अधिक जैसे अतिभवति = उगता है, अतिपतति = पार होता है ॥

अधि—(कभी २ धि) = ऊपर, अधिक, जैसे अधिगच्छति आगे या ऊपर जाता है, जानता है या पाता है ॥

अनु—पीछे, समान = अनुसरति, अनुगच्छति,—पीछे जाता है ॥

अप—दूर जैसे अपनयति—दूर ले जाता है ॥
अपि—ऊपर (कभी २ पि)—वेद में आता है और लोक में अभि हो जाता है ।
अभि + को—पास में—जैसे अभिपतति = उसके तरफ जल्दी से भागता है ॥
अव—नीचे (कभी २ व) जैसे अवरुहति—वह उतरता है
आ—पास में—उलटा = आगच्छति—आता है ।
उद्—ऊपर—उत्पतति—कूदता है ।
उप—पास—उपतिष्ठति = पास खड़ा है ।
दुः—बीमार, बुरा, दुःख–दुरागच्छति–दुःख से आता है ।
निः—विना–निरिगच्छति–नहीं चाहता है ।
परा—उल्टा, दूर—पराजयते–हारता है ।
परि—चारोंओर—परिधावति–चारों तरफ दौड़ता है ।
प्र—सामने—प्रणमति = सामने झुकता है ।
प्रति—पीछे—फिर–उल्टा – प्रतिगच्छति–उल्टा जाता है
वि—अलग—विसृजामि—विदा करता हूँ ।
सम्—मिला हुआ—संगच्छति—मिल कर जाता है ।
सु—अच्छा—सुवदति = अच्छा बोलता है ।

पाठ ७

संस्कृत में आठ विभक्ति या कारक हैं और तीन बचन हैं उनमें से इस पाठ में कर्त्ता या पहिली विभक्ति के तीनों बचनों के प्रत्यय लिखे जाते हैं ॥

अकारान्त शब्दों के प्रत्यय।

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०।
पुल्लिङ्ग	स्	औ	अस्।

नपुंसक में औ, अस्, की जगह ई, इ, हो जाते हैं और अकारान्त में स् की जगह म् हो जाता है और ह्रस्व इ, के 'न्' और जुड़ जाता है और 'न्' के पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है॥

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०।
पुल्लिङ्ग	नरः	नरौ *	नराः †
नपुं०	धनम्	धने ‡	धनानि।

नपुंसकलिङ्ग में नि, प्रत्यय के पहले स्वर दीर्घ हो जाता है॥

---

* अ या आ के आगे ए, ऐ, ओ, औ, आवें तो ये मिल कर ए, ऐ, के स्थान में तो ऐ, और ओ, औ, के स्थान में औ, हो जाते हैं—जैसे तव + एव = तवैव, सा + ऐच्छिष्ठ = सैच्छिष्ठ।

† जब कि अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ह्रस्व व दीर्घ के आगे उसी वर्ण का स्वर ह्रस्व व दीर्घ आवे तो दोनों के स्थान में उसी वर्ण का दीर्घ स्वर हो जाता है—जैसे नदी + ईदृशी = नदीदृशी। कर्तृ + ऋजु = कर्तॄजु। भानु+उदय = भानूदय॥

‡ अ या आ के आगे इ, उ, ऋ, ऌ, ह्रस्व या दीर्घ आवें तो दोनों के स्थान में गुण हो जाता है। जैसे तव + इन्द्रः = तवेन्द्रः सा+उल्का = सोल्का, सा+ऋद्धि = सर्द्धि या सऋद्धि, तव+ऌकारः = तवल्कारः॥

पुलिङ्ग—शब्द ।

अगद—दवा, औषधि ।
अनल—आग ।
अश्व—घोड़ा ।
ईश्वर—परमेश्वर ।
ओदन—पकेहुए चावल ।
कर—हाथ ।
किङ्कर—नौकर ।
कोश—खजाना ।
खञ्ज—लङ्गड़ा ।
जन—मनुष्य, आदमी ।
जनक—बाप, पिता ।
जीव—जी, जानवर ।
नर—आदमी, पुरुष ।
नाविक—मल्लाह ।
नृप—राजा ।
पाद—पैर ।
पवन—हवा ।
पुत्र—बेटा ।
भिक्षुक—भिखारी ।
बायस—कव्वा ।

नपुंसक लिङ्ग ।

अरण्य—जंगल ।
अन्न—नाज ।
अर्घ—पूजा की सामग्री, अर्घा ।
इन्धन—लकड़ी जलाने की ।
कमल—कंवल ।
खनित्र—फावड़ा ।
गृह—घर ।
चक्र—पहिया ।
जल—पानी ।
दुःख—दुःख ।
धन—धन ।
नगर—गांव, शहर ।
नेत्र—आंख ।

वाक्य ।

नृपा * रक्षन्ति ।	नाविका नयन्ति ।	खड्गः पतति ।
अश्वा उत्पतन्ति ।	ईश्वरो रक्षति ।	अरण्यं दहति ।
पवना वहन्ति ।	जनकाः पुष्यन्ति ।	पुत्रः प्रीणयति ।
ईश्वरः सृजति ।	जना नृत्यन्ति ।	नराः कृषन्ति ।
अश्वा धावन्ति ।	दुःखं पीड़यति ।	करौ स्फुरतः ।
जना वदन्ति ।	नरावुपगच्छतः ।	नृपः पृच्छति ।
अनलो† दहति ।	नरश्चलति + ।	जलं वहति ।
गृहाणि‡रक्षन्ति ।	किंकरः पचति ।	नेत्रं स्फुरति ।
नृपो यजति ।	जनका वसन्ति ।	

* विसर्ग के पहले आ हो और उसके आगे कोई स्वर या घोष प्रयत्न का व्यञ्जन आवे तो विसर्ग का लोप हो जाता है और विसर्ग के पहले अ हो और उसके आगे अ, के सिवाय कोई स्वर आवे तो भी विसर्ग का लोप होता है और फिर उन दोनों स्वरों में सन्धि नहीं होती जैसे नराः + इमे = नराइमे, बुधः + इच्छति = बुधइच्छति ।

† विसर्ग के पहले अ, हो और उसके आगे अ अथवा घोष प्रयत्न का कोई व्यञ्जन आवे तो उस विसर्ग का उ, हो जाता है और यह उ, अपने से पहले वाले अ, से मिलकर ओ, हो जाता है ।

‡ ऋ, र् या ष् के आगे जब न आवे तो उसको ण, हो जाता है और जब कि ऋ, र्, या ष्, "न्" के बीचमें कोई स्वर, या अन्तस्थ (ल को छोड़कर) या ह, या कण्ठस्थ, या ओष्ठ स्थान का कोई अक्षर आ जावे तब भी न बदलता है पर पद के अन्त में कभी नहीं बदलता ।

+ विसर्ग के आगे जब च्, या छ्, हो तो श् और त् या थ् हो तो स्, और ट् या ठ् आवे तो ष् हो जाता जैसे जनः+चरति = जनश्चरति ॥

राजा जीतता है ।	(दो) आँखे देखती हैं ।	(दो) हाथ ले जाते हैं ।
(दो) नौकर उछलते हैं ।	धन खुशी देता है	पानी सूखता है
आदमी बोलते हैं	जानवर बेहोश होते हैं ।	(दो) नाचते हैं ।
मनुष्य चाहते हैं		आदमी जाते हैं।
		राजा बुलाता है।

पाठ ८

द्वितीया विभक्ति या कर्म ।

प्रत्यय ।

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०
पु०लि०	अम्	औ	अस्

अम् और अस् का "अ" अ, इ, उ, ऋ, से परे पुल्लिङ्ग में गिर जाता है और इन्हीं स्वरों के आगे पुल्लिङ्ग में द्वितीया के अस् के 'स्' का 'न्' हो जाता है ।

ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०
नरम्	नरौ	नरान्

कर्म के बहुबचन के 'न्' के पहले स्वर दीर्घ हो जाता है । नपुंसकलिङ्ग के द्वितीया के रूप सदैव प्रथमा के तुल्य होते हैं ।

पुलिङ्ग—शब्द ।

कूर्म्म–कछुआ ।	भार—बोझ ।	शठ—दुष्ट ।
गज–हाथी ।	मूर्ख—मूरख ।	शर—तीर ।
ग्राम–गांव ।	मेघ—बादल ।	शिष्य—चेला ।
देह–शरीर ।	मोक्ष–मुक्ति, मोक्ष	समुद्र—समुद्र ।
पुरुष–आदमी नर	योध–लड़नेवाला सिपाही ।	सिंह—शेर ।
प्रज्ञ—बुद्धिमान आदमी ।	राम—नाम ।	सूद—रसोंइया ।
बाल—बच्चा ।	वृक्ष—बोझा, पेड़	सूर्य—सूरज ।
विड़ाल–विलाव ।	वेद—वेद ।	स्तेन—चोर ।
बुध–बुद्धिमान ।	व्याघ्र–बघेरा, बाघ	स्वर्ग—स्वर्ग ।

नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

तत्त्व–सच्चाई, असलियत ।	पुस्तक—किताब, पोथी ।	वस्त्र—कपड़ा ।
तृण—घास ।	फल—फल ।	विष—जहर ।
धान्य—नाज ।	मांस—मांस ।	सुवर्ण—सोना ।
पर्ण—पत्ता ।	मित्र–मित्र, दोस्त	सुख—सुख, आराम ।
पाप—पाप ।	मुख—मुँह ।	हृदय–दिल, मन

चुरादि गण के धातु ।

दण्ड्—सजा देना । भक्ष्—खाना । मार्ग्—ढूंढ़ना ।

न—नहीं (अव्यय) *

* जिन शब्दों के कारक में रूप नहीं बदलते हैं अर्थात् विभक्ति नहीं रहती है उनको अव्यय कहते हैं ।

रामो व्याघ्रम्पश्यति *	ईश्वरो नरान् रक्षति	पुस्तकानि रचयन्ति
अश्वाः कोशं वहन्ति	ग्रामो विश्रामः	ओदनमत्थ
प्रज्ञः स्वर्गमारोहति	पुत्रो जनकं तुष्यति	मित्राणि रामंस्मरन्ति
सिंहागजान्भक्षयन्ति	पादान् चालयन्ति	जना नृपान् प्रशंसन्ति
फलानि गणयति	मूर्खौ विषं पिवतः	प्रज्ञा जनान्नयन्ति
योधश्शरौ मुञ्चति	नृपाः स्तेनान् दण्डयन्ति।	तत्वं बोधामि
		वेदाः सूर्यं शंसन्ति

व्याघ्रो मांसं भक्षयति।	सूदोऽन्नं पचति †।
वस्त्रं देहं रक्षति।	सुवर्णमिच्छामि।
बुधाः शठं ताड़यन्ति।	मित्राणि स्मरामि।
मूर्खा न पश्यन्ति।	शठांस्ताड़यति नृपः ‡।

* पद के अन्त का म् अनुस्वार में बदल जाता है और कभी २ जौन सा व्यंजन उसके आगे आता है उसी वर्ण के पञ्चम सानुनासिक अक्षर में बदल जाता है जैसे—किम् + करोषि = किंकरोषि या किङ्करोषि, परन्तु श, ष, स, ह, र इनके पहले अनुस्वार ही में बदल जाता है क्योंकि इनका सानुनासिक नहीं है। और य, ल, व इनके पहले यँ, वँ, लँ में भी बदलता है—सत्वरम् + याति = सत्वरंयाति या सत्वरँय्याति। परन्तु सब स्थान में अनुस्वार करना सहज और सीधी रीति है॥

† जब कि पद के अन्त में ए या ओ हो और उसके आगे अ, आवे तो पिछला अ, उसमें मिल जाता है अर्थात् न तो उसका उच्चारण होता है और न लिखा जाता है उसके स्थान में एक ऐसा ऽ चिन्ह हो जाता है।

‡ अन्त के न्, के आगे जब च्, छ्, त्, थ्, ट्, ठ्, आवे तो उस न् का बदल कर अनुस्वार व विसर्ग हो जाता है और विसर्ग का जो कुछ हो जाता है उसके वास्ते पृष्ट २५ के ऐसे + चिन्ह को देखो।

पवना मेघान् वहन्ति । गजो जलं प्रविशति ।	मित्राण्युपगच्छति × ।
मनुष्य ईश्वर पूजते हैं। राजा खराब आदमी को सजा देता है। राम घोड़े पर चढ़ता है। योधा तीरों को छोड़ता है शेर मांस खाते हैं। देवदत्त दोनों हाथों को धोता है। (वह) धन का लोभ करता है। चोर नाज को चुराता है। (मैं) नगर को जाता हूँ * (तू) पापी से बोलता है। (तू) मित्रों को याद करता है। घोड़ा घास खाता है।	बुद्धिमान मनुष्य मुक्ति चाहते हैं। बीमारी आदमियों को दुःख देती है। (तुम) जल पीते हो। कवि (दो) बुद्धिमान मनुष्यों की प्रशंसा करता है। लड़का मित्रों को खुश करता है। (मैं) पुस्तक ढूंढ़ता है। (हम) सोना तोलते हैं। (हम) दो गावों में फिरते हैं (मैं) फल खाता हूँ। (वह) कमलों को देखता है नौकर बोझ ले जाता है। मनुष्य शरीर को छोड़ता है

× इ उ ऋ लृ ह्रस्व या दीर्घ के आगे कोई दूसरा स्वर आवे जो इनके समान न हो अर्थात् इनके वर्ण का न हो तो इनका क्रम से य, व, र, ल, हो जाता है - जैसे दधि+अत्र = दध्यत्र, कर्तृ + उत = कर्त्रुत, मधु + इव = मध्विव, नदी + ऐडस्य = नद्यैडस्य।

* वे धातु जिनका अर्थ चलना है उनका कर्म दो विभक्तियों में आता है द्वितीया और चतुर्थी जैसे ग्रामं गच्छामि या ग्रामाय गच्छामि।

पाठ ९

इकारान्त संज्ञा शब्द ।

प्रथमा व द्वितीया कारक ।

ह्रस्व इकार से आगे "औ" का "ई" हो जाता है और प्रथमा के अस् के आगे इसको गुण हो जाता है ।

अरिः अरी (अरे + अस्) = अरयः

अरिम् अरी अरीन्

नपुंसक लिङ्ग ।

नपुंसकलिङ्ग शब्दों में उन प्रत्ययों के पहले जिनके आदि का अक्षर स्वर हो न् और जोड़ा जाता है और अकारान्त को छोड़ शेष शब्दों के प्रथमा के एक वचन की बिभक्ति गिर जाती है ।

वारि वारिणी वारीणि

पुल्लिङ्ग शब्द ।

अग्नि—आग ।	असि—तलवार ।	गिरि—पहाड़ ।
अतिथि–महमान पाहुना, बटाऊ	उदधि—समुद्र ।	धूर्जटि—महादेव
अधिपति—मालिक, स्वामी ।	ऋषि—ऋषि ।	नृपति—राजा ।
अरि—बैरी ।	कपि—बन्दर ।	पवि–इन्द्रका वज्र
अलि—मक्खी, भौंरा ।	कवि—कवि ।	पाणि—हाथ ।
	कलि—लड़ाई, झगड़ा ।	बलि–बलिदान ।
	किरि—सूअर ।	मणि–जवाहिर ।

यति—साधू जितेन्द्री ।	व्याधि—रोग ।	सारथि-रथवान ।
रवि—सूर्य्य ।	व्रीहि—चावल ।	नपुंसकलिङ्ग
राशि—ढेर ।	हरि-आदमी का नाम, व इन्द्र देवताका नाम	वारि—पानी ।
बिधि—कर्म या भाग्य, रीति ।		

धातुः—

क्षल्-१० गण, प्र के साथ धोना ।	नन्द-१ग० अभि के साथ खुश होना ।
नी-१ गण, आ के साथ ले जाना ।	सृ-१ गण, अनु के साथ पीछे २ जाना ।
दा-[यच्छ्] १ गण, देना, भेट्ट करना ।	

अपि-अव्यय = भी

वाक्य ।

धूर्जटी रक्षति * ।	नृपतयो नयन्ति ।
कपयो धावन्ति ।	यतयो न स्पृहयन्ति ।
कविर्वर्णयति ।	ऋषयश्शाम्यन्ति † ।

* स या विसर्ग से पहले अ, या आ से अतिरिक्त और कोई स्वर हो और उस से आगे कोई स्वर या घोष प्रयत्न का व्यञ्जन आवे तो स , वा र् हो जाता है और र् के आगे र् आवे तो पहिले र् का लोप होकर उस से पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है ।

† विसर्ग के आगे जब श् , ष , स् , आवें तो या तो विसर्ग ही बना रहता है या उसके स्थान में क्रम से श् ष् स् हो जाता है ॥

असिः पतति ।	पाणी प्रक्षालयामि ।
अरी जयतः ।	नृपतिररिं जयति ।
हरिः कुप्यति ।	व्याधिर्जनाँस्तुदति ।
पाणिः सिञ्चति ।	नृपतिर्बलिं यच्छति ।
कवय ऋषीन् शंसन्ति ।	योधः किरिं मार्गयति ।
रामः कवीन् नमति ।	वीरो दुःखं न गणयति ।
यतिर्गिरिं गच्छति ।	व्याघ्रस्तृणं न चरति ।
कपी प्रहरामि ।	कपिर्मांसं न भक्षयति ।
हरी राशीनानयति ।	नृपतिर्मणिमपि यच्छति ।
योधोऽसिं क्षिपति ।	योधो किरिमनुसरति ।
मणीन् स्पृहयामि ।	अश्वो राशिं वहति ।
उदधिमटति ।	कविर्नरानभिनन्दति ।
मनुष्योऽग्निं विशति ।	गजो राशिमानयति ।
सारथी पृच्छतः ।	गजोऽपि मांसं न भक्षयति
पविः पतति ।	नृपतिर्ग्रामं विशति ।
अग्निरिन्धनं दहति ।	नृपतिर्ग्रामं विशति ।
सूदो व्रीहीन् पचति ।	योधाः शरान् मुञ्चन्ति ।

समुद्र भड़का हुआ है ।	पानी सूखता है ।
बन्दर फलों को फेंकते हैं ।	आग जलती है ।
(दो) ऋषि चिन्ता करते हैं ।	कवि प्रशंसा करते हैं ।
वैरी दुःख देता है ।	पानी नहीं है ।
दो हाथ ले जाते हैं ।	पहाड़ सहता है ।
राजा पूजा करता है ।	व्याधि नाश होती है ।

कव्वा बलि खाता है ।
राजा वैरियों को जीतता है
बीमारी हरि को सताती है
बादल पानी छिड़कते हैं
कमल मक्खियों को खुश करता है ।
राम सूर्य को नमस्कार करता है ।
(हम) (अपने) दोनों हाथ धोते हैं ।
(हम दोनों) समुद्र को जाते हैं ।

(हम) ऋषि को नमस्कार करते हैं ।
बघेरा सुअरों को खाता है
(हम) रथवान् को बुलाते हैं
ईश्वर कर्म्म को जीतता है
(वे दोनों) रात्रि को ले जाते हैं ।
भिखारी चावल चुगता है
(वे) पहाड़ पर चढ़ते हैं ।
ऋषि जंगल में रहते हैं ।

पाठ १०

करण कारक व तृतीया विभक्ति
अकारान्त व इकारान्त शब्द ।

प्रत्यय ।

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०
पुल्लिङ्ग	आ	भ्याम्	भिस्

अकारान्त में "आ" का "इन्" और इकारान्त में "आ" का "ना" हो जाता है । अकारान्त में भिस् के 'भि' का 'ए' हो जाता है ।

ए॰ व॰	द्वि॰ व॰	ब॰ व॰
दण्डेन	दण्डाभ्याम् *	दण्डैः ।
अरिणा †	अरिभ्याम्	अरिभिः ।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा, द्वितीया, व सम्बोधन के सिवाय और सब कारकों में पुल्लिङ्ग के समान रूप होते हैं ।

वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः

पुल्लिङ्ग—शब्द ।

अश्वपति–घोड़े का मालिक ।
अलङ्कार–आभूषण, गहने
आचार्य–गुरु, अध्यापक ।
आतप—धूप ।
इन्द्र–इन्द्र, देवराज ।
उपहार–भेट, इनाम ।
कृषीवल—किसान ।
कृष्ण—कृष्ण ।
कौशिक–कुश के वंश का ।
क्रोध—क्रोध ।
क्रोस—कोस ।
देव—देवता ।
नद—नदी ।
वाण—तीर ।
ब्राह्मण—ब्राह्मण ।
मन्त्र—देवता का मन्त्र ।
यजमान—यजमान ।
यत्न—उपाय ।
प्रभूत—बहुत ।
रथ—रथ, बग्गी ।
रावण—लङ्का का राजा ।
श्लोक—श्लोक ।
दण्ड—छड़ी ।

† पृष्ट २५ के ऐसे ॐ चिन्ह को देखो ॥
* भ्याम् के पहले अ दीर्घ हो जाता है ।

नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

अज्ञान—अज्ञान ।	नख—नुँह ।
आकाश—आसमान ।	पुण्य-पुण्य, पवित्र, धर्म ।
आसन—बैठक ।	यन्त्र—कल ।
उद्यान—बाग ।	रत्न—जवाहिर ।
कल्याण—शुभ ।	शरीर—देह, बदन ।
कुसुम—फूल ।	शास्त्र—शास्त्र ।
क्षेत्र—क्षेत्र ।	शीर्ष—सिर ।
गोत्र—वंश ।	सूक्त—वेद के सूक्त ।

भ्वादि गण के धातु ।

खन्—खोदना ।	हृ—प्र के साथ-मारना ।
गम्—अव के साथ-जानना, समझना ।	सह—साथ-(अव्यय)

चुरादि गण ।

दृ—(दार्)—फाड़ना ।

नम्—अव के साथ-झुकना, नीचे को मुड़ना ।

राज्—वि के साथ-चमकना, सुन्दर लगना ।

वाक्य ।

रामो रत्नैश्शरीरम्भूषयति ।	नरा देहानन्नेन पुष्यन्ति ।
जना मुखैर्वदन्ति ।	शीर्षैर्भारम्वहन्ति नराः ।

हरिर्यलैर्ऋषीन्प्रीणयति ।
नृपा उपहारैस्तुष्यन्ति ।
ब्राह्मणा देवं श्लोकैराह्वयन्ति
ईश्वरं विधिना पूजयति ।
श्लोकाभ्यां रामं शंसति ।
नरोऽरिमसिना प्रहरति ।
रामः सारथिना सह गच्छति
खनित्रेण क्षेत्रं खनति ।
सिंहः किरिं दारयति ।
वृक्षाः फलैरवनमयन्ति ।

ब्राह्मणा अर्घ्येन देवान् पूजयन्ति ।
चक्राभ्यां चलति रथः ।
स्तेनं दण्डेन ताड़यति नृपः
व्याधिश्शरीरन्तुदति ।
रामोबाणैर्जयति रावणम् ।
कवयःश्लोकैः प्रीणयन्ति नृपं
ब्राह्मणादेवान्मन्त्रैराह्वयन्ति
पत्तिःपादेन ग्रामं गच्छति ।
कृषीवलाः क्षेत्रं कृषन्ति ।
नाविका जनान्नदेनानयन्ति

आदमी चोर को छड़ी से पीटता है ।
(वह) शरीर को गहनों से शृङ्गारता है ।
नदी से मल्लाह समुद्र में घुसता है ।
सिपाही बैरियों को तीर से जीतता है ।
वह पैर से लँगड़ा है ।
हरि (अपने) बेटे का साथ गांव को जाता है ।
रथ दो घोड़ों से चलता है

राम ऋषियों को पूजने की सामग्री से पूजता है ।
(वह) फावड़े से खोदता है
कवि राजा की प्रशंसा श्लोकों से करता है ।
बुद्धिमान मनुष्य सुखी रहते हैं ।
आदमी दो आखों से देखते हैं ।
(वह) सिर को (दोनों) हाथ से छूता है ।
(वह) पानी से दोनों हाथ धोता है ।

शेर हाथी को नाखूनों से फाड़ता है।

(वह) घर को आग से जलाता है।

बुद्धिमान सचाई को शास्त्र से जानता है।

सिपाही पैरों से चलता है

बच्चे (दोनों) पैरों से दौड़ते हैं।

(वह) ईश्वर को धर्म्म से देखता है।

राम रावण को बन्दरों की मदद से जीतता है।

मैं कौशिकवंश का हूं।

राजा गहनों से सुन्दर लगता है।

मनुष्य अन्न से जीते हैं।

पाठ ११

सम्प्रदान व अपादान कारक वा चतुर्थी व पञ्चमी विभक्ति अकारान्त के प्रत्यय।

		ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०
पु०	चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
	पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्

अकारान्त में 'ए' का 'अय' और 'अस्' के 'स्' का 'त्' हो जाता है।

	ए०	द्वि०	ब०
चतुर्थी	नराय	नराभ्याम्	नरेभ्यः
पञ्चमी	नरात्	नराभ्याम्	नरेभ्यः

इकारान्त शब्द ।

		ए॰	द्वि॰	ब॰
पु॰ न॰	चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
	पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्
पु॰	चतुर्थी	हरे* + ए = हरये,	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
	पञ्चमी	हरे + अस् = हरेः †,	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
	चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
	पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः

पुल्लिङ्ग शब्द ।

अंकुश—अंकुश ।
अवकाश—फ़ुरसत
आचार—चाल चलन ।
खड्ग—तलवार ।
ग्रीष्म—गरमी का मौसिम ।
चन्द्र—चाँद ।
तिल—तिल ।
द्वीप—टापू ।

निष्क—एक सुवर्ण का सिक्का या मोहर ।
पर्वत—पहाड़ ।
पाप—पापी ।
प्रासाद—देवता या राजा का महल ।
भृत्य—नौकर ।

माष—उड़द ।
मोदक—लड्डू या मिठाई ।
याचक—मँगता, भिखारी, मांगनेवाला ।
लोक—आदमी संसार ।
बध—मारना ।
बराह—सूअर ।

* अन्त की इ, या उ, का पुल्लिङ्ग शब्दोंमें, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी के ए व के प्रत्ययों के पहले बदलकर गुण हो जाता है ॥

† अस् का अ, ए या ओ के आगे लोप हो जाता है ।

नपुंसक ।

औषध—दवा ।
कारण—सबब ।
घृत—घी ।
चरित—जीने का ढंग, चरित्र ।
चित—मन ।
जाड्य—सुस्ती ।
ज्ञान—समझ ।
तारक—तारा ।
पद—पैर ।
पल्वल—छोटा तालाव ।
भोजन—खाना ।
मौन—चुप ।
योजन—चार कोस
राज्य—राज्य ।
बन—जंगल ।
शत—सौ–१००
सिंहासन—गद्दी, तख्त ।
सुकृत— अच्छा कर्तव्य ।

गुणवाचक ।

आम—कच्चा ।
आभ्यन्तर—भीतर ।
उपज्ञात—नई निकालीहुई
कड़—गूंगा ।
कनिष्ट—सब से छोटा ।
मूक—चुप, गूंगा ।
रत्तक—पालनेवाला, पहरायती ।
रङ्क—भिखारी, दीन ।
रजत—चाँदी का बनाहुआ चाँद ।
रम्य—खुश करनेवाली, खूबसूरत, सुन्दर ।
रिष्व—दुःख देनेवाला ।
रुक—दाता, सखी ।
लाहल—लोहे का बना हुआ ।
वक्रित—टेढ़ो, मुड़ा हुआ
बिस्पष्ट—साफ, चौड़े ।
सजन—मनुष्यों से वसा हुआ ।

धातु ।

गम्—१ ग,—प्रति और आ के साथ लौटना । अधि-के साथ, पाना।
दा—प्रति के साथ, बदलना ।
भज्—भजना ।
भू—उद् के साथ—उत्पन्न होना, पैदा होना ।
स्था—उद् के साथ उठना ।
दिश्—६ ग०—उप के साथ, सिखाना ।
धृ—(धार्) १० ग०—पकड़ना, पहनना, देनदार होना ।

अव्यय-शब्द ।

नमस्—नमस्कार करना । (इसके साथका शब्द चतुर्थी में आता है)
बिना—बगैर (इसके साथ द्वितीया तृतीया, पञ्चमी, में) ।
स्वस्ति—कल्याण (इसके साथ चतुर्थी में) ।

वाक्य ।

रामोऽन्नाय गृहं गच्छति ।
वृक्षात् फलानि पतन्ति ।
आमानि फलानि वृक्षान्न * पतन्ति
याचकेभ्यो द्रव्यं यच्छामि ।
हरिरश्वपतये शतं धारयति ।
प्रजा ईश्वरं मोक्षाय यजन्ति ।
नृपाङ्गनमधिगच्छन्ति ब्राह्मणाः ।
समुद्रात् क्रोशौ पर्वतः ।
हरिरुद्यानं कुसुमेभ्यो गच्छति ।
पापाद् दुखमुद्भवति ।
देवाः पापानाकाशादस्यन्ति ।
सुकृतेभ्यो माद्यति रामः ।
राशिभ्यां ब्रीहीनानयन्ति ।
रजतेनालङ्कारेण भूषयामि ।
कृषीवलास्तिलेभ्यः क्षेत्राणि कृषन्ति
नृपो रम्यमुद्यानं विशति ।
अङ्कुशेन गजस्खलति ।
सिंहासनान्नृप उत्तिष्ठति ।
आचार्य उपदिशति शिष्यान् ।
देवेभ्यो नमः ।
चक्राभ्यां विना रथो न चलति ।
नृपो एकोस्ति ।
प्रासादान्नृपतिर्याचकान्निष्कान् यच्छति ।
पापः पर्वतात्पतति ।

* शब्द के अन्त का व्यञ्जन जब उसके आगे कोई सानुनासिक आवे तो वह अपने वर्ण के पंचम अक्षर में विकल्प से बदलता है—यथा—दिक् + नागः = दिग्नागः या दिङ्नागः ॥

हार ब्राह्मणों को मोहर देता है।
(एक) मनुष्य गांव को जाता है।
(वह) कल्याण के निमित्त हरि को भेजता है।
(मैं) फलों के वास्ते जाता हूं।
राजा हरि पर क्रुद्ध है।
बालक मिठाई चाहता है।
(वह) नगर से आता है।
(वह) घोड़े से गिरता है।
(वह) मेहमानों को भोजन देता है
(वह) उड़द व तिल का बदला करता है।
गुरु आसनों से उठते हैं।
वैरी बिना उसके मारे शान्त नहीं होता।

आदमी सूर्य से सुख पाते हैं।
राजा मनुष्यों को महल से देखता है।
देवताओं को नमस्कार है।
हरि को स्वस्ति।
(वह) शिष्यों को विद्या सिखाता है
कलह से दुःख होता है।
हाथी से मनुष्य गिरता है।
राम नौकरों को लकड़ी से पीटता है।
नगर जंगल से ८ मील है।
सूअर कीचड़ से उठते हैं।
राम हरि के लिये एक मोहर मांगता है।

पाठ १२

सम्बन्ध, अधिकरण, व सम्बोधन कारक प्रत्यय।

अकारान्त संज्ञावाचक शब्द।

		ए०	द्वि०	ब०।
पु०	षष्ठी	अस्	ओस्	आम्।
	सप्तमी	इ	ओस्	सु *।

* "अ" और "आ" को छोड़ कर सब स्वरों के आगे और कवर्ग, और ह, य, व, र, ल के आगे प्रत्यय के स् को ष् हो जाता है—पदान्त में नहीं होता॥

अकारान्त में अस् (षष्ठी के) का 'स्य' हो जाता है और आम् का नाम् और "नाम्" के पहिले ह्रस्व स्वर को दीर्घ हो जाता है और 'ओस्' और 'सु' के पहिले अन्त के अ, का ए, हो जाता है।

इकारान्त संज्ञा शब्द।

इकारान्त, उकारान्त शब्दों में प्रत्यय की "इ" को "औ" हो जाता है और 'औ' के पहिले 'इ' उ, गिर जाता है॥

सम्बोधन में—अकारान्त शब्दों के एक वचन में कुछ भी बदलाव नहीं होता और इकारान्त के एक वचन में ह्रस्व 'इ' का बदल कर ए हो जाता है और द्वि० व; व व० के रूप सदैव प्रथमा के समान होते हैं जैसे—

	ए०	द्वि०	ब०
षष्ठी	नरस्य	नरयोः	नराणाम्।
सप्तमी	नरे	नरयोः	नरेषु
सम्बोधन	नर	नरौ	नराः
षष्ठी	अरेः	अर्योः	अरीणाम्
सप्तमी	अरौ	अर्योः	अरिषु
सम्बोधन	अरे	अरी	अरयः

इकारान्त नपुंसक शब्द।

	ए०	द्वि०	ब०
षष्ठी	अस्	ओस्	नाम्
सप्तमी	इ	ओस्	सु

सम्बोधन के एक बचन का रूप 'वारे' या 'वारि' के तुल्य होता है।

	ए०	द्वि०	ब०
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु

पुल्लिङ्ग।

दीप–दीया।	प्रकाश–चाँदना।	सुमन्त्र–राम का रथवान।
धनपति–कुबेर, धन का देनेवाला	प्रसाद–मेहरवानी	विनय—नम्रता।
धनिक–धनवान।	यक्ष—कुबेर का नौकर।	शिखर—चोटी।
धर्म्म—धर्म।	वर्ण—जात, रंग।	सार्थ–भुण्ड, क़ाफ़ला।
निधि–खज़ाना, कोष।	वास—रहने की जगह।	सेनापति—फ़ौज का अफ़सर।
पराक्रम—ज़ोर, वीरता।	वीर—बहादुर।	सैनिक–सिपाही।
पालक—पालने-वाला।	वृष–वैल, सांड।	
	श्वापद–शिकारी चौपाये।	

नपुंसकलिङ्ग शब्द।

प्रमाण—सबूत, गवाही।	लाङ्गूल—पूंछ।	सौन्दर्य—खूबसूरती।
युद्ध—लड़ाई।	वचन—कथन।	हर्म्य—महल।
यूथ—भुण्ड।	वैर—दुश्मनी।	हिम—बर्फ़।

गुणवाचक शब्द ।

आह्लादक—खुश करनेवाले ।	दीर्घ—बड़ा ।	लवण—नमक खारी ।
गर्ह्य-धिक्कारयोग्य	प्रथम—पहला ।	श्रेष्ठ—अच्छा ।
चण्ड—भयानक ।	प्रशस्य—सराहने योग्य ।	

धातु ।

क्षम् [क्षाम्] ४ ग० क्षमा करना, माफ करना ।

रुह्—'प्र' के साथ उगना, बढ़ना—आ के साथ चढ़ना ।

विश्—"उप" के साथ-बैठना । क्व—अव्यय—कहां ?

वाक्य ।

कपेर्लाङ्गूलं दीर्घम् ।	वृक्षस्य पर्णमानयति ।
कवीनाङ्कालिदासः प्रथमः ।	घृतमग्नौ क्षिपामि ।
नरस्य किङ्करो ग्रामङ्गच्छति	वैरं युद्धस्य कारणम् ।
नृपा वसन्ति प्रासादेषु ।	आममन्नं मूर्खा अदन्ति ।
हर्म्येषु वसन्ति धनिकाः ।	नृपतेर्निधिं सैनिकारक्षन्ति
नराणां रामः श्रेष्ठः ।	युद्धे वीराः प्रशस्याः सन्ति ।
कासाराणाञ्जलं लवणम् ।	कपीनां यूथमाह्लादकमागच्छति ।
गिरेः शिखरे हिममस्ति ।	ब्राह्मणेभ्यो व्रीहिषु घृतं सूदो यच्छति ।
स्तेनो ब्राह्मणस्य धनं चोरयति ।	खञ्जोऽश्वमारोहति ।
उद्यानानां सौन्दर्येण तुष्यामि ।	

नृपस्य प्रसादेन शतं निष्का-नधिगच्छति ।	धनपतेश्चित्तं कोशे वसति।
गजानां यूथमरण्ये वसति।	आचार्यः शिष्यानाचारं कथयति ।
मित्रस्य वचनमाह्लादकमस्ति ।	मूर्खस्यौषधं नास्ति ।
राजा आदमियों का पालक है ।	सूर्य की धूप गर्मी में गरम हो जाती है ।
समुद्र का पानी खारा है।	बुरे मनुष्यों की चाल चलन निन्दनीय है ।
(मैं) ईश्वर की मेहरवानी से जीता हूं।	हरि की पुस्तक कहां है।
बुद्धिमान मनुष्य विद्या के तत्व को जानते हैं।	मनुष्य नगरों में रहते हैं।
(दो) योधाओं में लड़ाई होती है।	राम के लड़के जंगल को जाते हैं ।
समुद्र जल का खजाना है।	शिकार के जानवर जङ्गल में हैं ।
वे आसनों पर बैठते हैं ।	दवाई से मनुष्यों की बीमारी जाती है।
सांड पहाड़ की चोटी से गिरता है।	चान्द की चान्दनी मनुष्यों को आनन्द देनेवाली है।
कँवल झीलों में होते हैं।	

उदाहरण—इन्द्र-शब्द ।

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब० ।
कर्त्ता	इन्द्रः	इन्द्रौ	इन्द्राः

कर्म	इन्द्रम्	इन्द्रौ	इन्द्रान्
करण	इन्द्रेण	इन्द्राभ्याम्	इन्द्रैः
सम्प्रदान	इन्द्राय	इन्द्राभ्याम्	इन्द्रेभ्यः
अपादान	इन्द्रात्	इन्द्राभ्याम्	इन्द्रेभ्यः
सम्बन्ध	इन्द्रस्य	इन्द्रयोः	इन्द्राणाम्
अधिकरण	इन्द्रे	इन्द्रयोः	इन्द्रेषु
सम्बोधन	इन्द्र	इन्द्रौ	इन्द्राः

रवि-पुल्लिङ्ग

कर्त्ता	रविः	रवी	रवयः
कर्म	रविम्	रवी	रवीन्
करण	रविणा	रविभ्याम्	रविभिः
सम्प्रदान	रवये	रविभ्याम्	रविभ्यः
अपादान	रवेः	रविभ्याम्	रविभ्यः
सम्बन्ध	रवेः	रव्योः	रवीणाम्
अधिकरण	रवौ	रव्योः	रविषु
सम्बोधन	रवे	रवी	रवयः

नपुंसकलिङ्ग—फल शब्द ।

कर्ता कर्म	फलम्	फले	फलानि
करण	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
सम्प्रदान	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
अपादान	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः

सम्बन्ध	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
अधिकरण	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	फल	फले	फलानि

वारि—शब्द ।

कर्ता कर्म	वारि	वारिणी	वारीणि
करण	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
सम्प्रदान	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
अपादान	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
सम्बन्ध	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
अधिकरण	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	वारि वारे	वारिणी	वारीणि

परीक्षा सम्बन्धी प्रश्न ।

(१) कुल कारक कितने हैं ? उनके नाम लेजाओ ।

(२) जाने के अर्थ की क्रिया के साथ और क्रोध, ईर्षा, द्रोह, असूया के अर्थ वाली क्रिया के साथ और धृ उधार अर्थ में जब आता है और स्पृह धातुओं की क्रिया के साथ कौन सा कारक आता है ? ।

(३) सह, नमस्, स्वस्ति और बिना के साथ कौन सा कारक आता है ? ।

(४) ऐसे धातु बताओ जिनके दो कर्म होते हैं ।

(५) नीचे लिखे हुए स्थानों में सन्धि के नियम उदाहरण सहित बताओ—

(अ) अ, इ, उ, या ऋ, ह्रस्व या दीर्घ के आगे जब उसका सवर्ण स्वर ह्रस्व या दीर्घ आवे।

(इ) जब अ, या आ, के आगे इ, उ, ऋ, या लृ, ए, या ओ, ह्रस्व या दीर्घ आवे।

(उ) जब इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ह्रस्व या दीर्घ के आगे इनके सवर्ण स्वर से अतिरिक्त और कोई स्वर आवे।

(क) पदान्त ए या ओ के आगे अ आवे।

(ग) स और तवर्गीय व्यञ्जन के साथ श, और चवर्गीय व्यञ्जन, या ष, और टवर्गीय व्यञ्जन आवे।

(ख) पांचो वर्गों का कोई व्यंजन (सानुनासिक को छोड़ कर) अघोष प्रयत्न के व्यञ्जनों के पहले या किसी पद के प्रथम स्वर के पहले आवे।

(घ) र, के आगे जब र, आवे और ऋ जब ए, ऐ, ओ, औ, को छोड़ कर और किसी स्वर के आगे आवे।

(६) पद के अन्त का म् क्या होता है?।

(७) किस २ स्थानों में सन्धि नहीं होती?।

(८) न्, का ण्, कब होता है?।

(९) विसर्ग को ओ, र्, ष्, स्, और श्, कब होता है और कब विसर्ग गिर जाता है?।

(१०) अन्त का न्, बदल कर विसर्ग और अनुस्वार कब होता है?।

अव्ययानि ।

अतः—यहां से इसलिये ।
अत्र—यहां ।
अथ—इस प्रकार से, आरम्भ में आता है ।
अद्य—आज ।
अद्धा—सचमुच ।
अधुना—अब ।
अलम्—बस ।
इति—ऐसा, इस प्रकार (अन्त में आता है)
इत्थम्—इसप्रकार ।
इद्धा—सचमुच, ठीक ।
इव—समान, तरह, जैसा ।
ईषत्—थोड़ा कुछ कुछ ।
उच्चैस्—ऊँचा ।

ऋते—बिना, सिवाय, बग़ैर ।
एव—ही, केवल ।
एवम्—इसप्रकार ।
कथम्—किस प्रकार ।
कदा—कब ।
किन्तु—परन्तु ।
कुतः—कहां से ।
कुत्र या क्व—कहां ।
च *—और ।
चिरम्—देर ।
जोषम्—आनन्द पूर्वक ।
ततः—वहां से, बाद
तत्र—वहां ।
तथा—उसप्रकार ।
तदा—तब ।
तूष्णीम्—चुपचाप
तिरस्—बुरी तरह, टेढ़ेपने से ।

दिवा—दिन ।
दोषा—रात में ।
धिक्—धिक्कार ।
नीचैस्—नीचे ।
पुनर्—फिर ।
पुरा—पहिले ।
प्रायस्—बारबार बहुधा लगभग ।
प्रातर्—सबेरे ।
बहिस्—बाहर ।
मा, माह—मत, नहीं ।
यतः—जहां से ।
यत्र—जहां ।
यथा—जिस प्रकार से ।
यदा—जब ।
वत्—समान ।
वा *—या ।
वृथा—बेफ़ायदे

* च या वा प्रत्येक शब्द के साथ में या उनके अन्त में आते हैं जिन जिन को वह जोड़ता है—जैसे हरिश्च, गोविन्दश्च या हरिर्गोविन्दश्च जल्पतः ॥

शम्—सुख ।	सर्वत्र—सब जगह।	सुष्ठु—अच्छा ।
शनैस्—सहज २, धीरे धीरे ।	सहसा—अचानक जल्दी से ।	स्वयम्—अपने आप
श्वस्—कल का दिन जो आवेगा	समया—पास ।	हे—ओ ! सम्बोधन
सदा—नित्य, हमेशा ।	सामि—आधा ।	हिरुक्—विना ।
	सायम्—साँझ मे	ह्यस्—कल का दिन जो बीत गया।

पाठ १३

आत्मने पद के प्रत्यय, वर्त्तमानकाल (लट्)

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब० ।
उ० पु०	इ	वहे	महे
म० पु०	से	इथे	ध्वे
प्र० पु०	ते	इते	अन्ते
उ० पु०	भाषे *	भाषावहे	भाषामहे
म० पु०	भाषसे	भाषेथे	भाषध्वे
प्र० पु०	भाषते	भाषेते	भाषन्ते

धातु, प्रथम गण या भ्वादि के ।

ईक्ष्—देखना, (अप के साथ, आशा करना, प्र के साथ, देखना और परि के साथ परीक्षा करना)	कत्थ्—प्रशंसा (झूठी) करना
	कम्प्—कांपना, हिलना।
	क्षम्—क्षमा करना ।
	काश्—प्र के साथ चमकना।

* गणों के चिन्ह और सन्धि के नियम जैसे पहिले कह आये हैं उसी प्रकार से इनमें भी काम में आते हैं ॥

गल्भ्—प्र के साथ बड़बड़ाना
डी—(डय) उड़ना ।
भाष्—बोलना ।
भिक्ष्—मांगना ।
मुद्—(मोद) खुशी मनाना, सुखी होना ।
यत्—यत्न करना ।
याच्—मांगना ।
रभ्—आ के साथ, शुरू करना, काम में लाना ।
रम्—खेलना, दिल बहलाना ।
रुच् (रोच्) खुश या प्रसन्न करना, पसन्द होना ।
लभ्—पाना, प्राप्त करना ।
वन्द्—प्रणाम करना, नमस्कार करना ।

वृत् (वर्त्)—होना ।
वृध् (वर्ध्)—बढ़ना ।
वेप्—काँपना ।
शङ्क्—शङ्का करना, सन्देह करना ।
शिक्ष्—सीखना ।
शुभ् (शोभ्) शोभा को प्राप्त होना, सुन्दर लगना ।
शस्—आ के साथ आशा करना ।
श्लाघ्—प्रशंसा करना ।
सह्—सहना ।
सेव्—सेवा करना ।
स्पन्द्—फड़कना ।
स्मि (स्मय्) मुस्कराना, हँसना (वि–) अचम्भे में आना ।
स्वाद्—चाखना ।

४ ग०—युध्—लड़ना ।
रुध्—अनु के साथ, आज्ञा मानना ।

६ गण*—मृ (म्रिय) मरना ।
विद् [विन्द्] प्राप्त करना पाना ।

* इस गण के धातुओं में 'अ' लगाने से पहले उनके अन्त के स्वर इ, ई, को इय्, और उ, ऊ, को उव, और ऋ, का रिय् और ॠ का इर्, हो जाता है जैसे ऋ का रियति, नु, का नुवति, मृ का म्रियते, कॄ, का किरति रूप हो गये ॥

१० गण—धीर् अव के साथ = अपमान करना, नफ़रत करना।

* मृग्—ढूँढ़ना।

सूद्—नि के साथ [निषूद्] = तवा करना, मारना, क्षीण करना।

वाद्—अभि के साथ = आदर करना, नमस्कार करना।

संज्ञा शब्द।

अध्ययन-न०-पढ़ना, पाठ	दण्ड-पु०-सजा, लकड़ी।
अपराध—पु० = कसूर।	दुराचार-पु०-खोटा चलन
अभ्युदय = पु०—तरक्की, बढ़ोतरी।	द्रव्य = न०—रुपये आदि।
अर्चन = न०—पूजन।	ध्यान = न०—ध्यान, मन लगाना।
असत्य = न—झूठ।	नाश-पु०—बरबादी।
असंख्येय-गु०-अनगिनत।	न्याय-पु०-दर्शन ग्रन्थ।
अस्त्र = न०—हथियार।	निर्देश = पु०—आज्ञा।
आध्यात्मिक—गु०-दैवी।	नृत्य = न०-नाच।
उद्गम—पु०—जन्म।	पारितोषिक-न०-इनाम।
उद्यम—पु०-कोशिश, उद्योग, मेहनत।	प्रबल—गु०—बलवान, मजबूत।
कट—पु०—चटाई।	बिम्ब-न०-मण्डल।
क्लेश-पु०-दुःख, तकलीफ़।	भक्त-पु०-भक्त, सेवक।

* इस धातु में गुण नहीं होता और यह केवल आत्मने पदी है।

भय—न०—डर ।
भङ्ग—पु०—टूटना ।
भोग = पु०—खुशी ।
मणिकार–पु०–जौहरी ।
मास—पु०—महीना ।
मयूर—पु०—मोर ।
लाभ–पु०–फायदा ।
वात–पु०–हवा ।
वातायन = न०–खिड़की, जाली ।
विश्वामित्र–पु०–एक ऋषि का नाम ।
विहग–पु०–पक्षी, चिड़िया
शासन—न०–हुकुम, आज्ञा
शुक = पु० – तोता, सुआ
शुक्लपक्ष = पु० – सुदी ।
सदाचार–पु०–नेकचलन ।
स्नेह–पु०–मोहब्बत, प्यार ।
स्वास्थ्य–न०–तन्दुरुस्ती ।
हितकर–गु०–लाभदायक ।

वाक्य ।

वृक्षात् फलानि लभामहे ।
असत्यं भाषध्वे ।
गिरयः कम्पन्ते ।
न्यायस्याध्ययनमारभे ।
दुःखं सहसे ।
कृष्णो बालकेन सह रमते
वृक्षः कम्पते ।
नृपं सेवसे ।
धनं विन्दे ।
ऋषीन् वन्दते ।
वीरोऽरिणा सह युध्यते ।
पारितोषिकमाशंसे ।
मित्राणाङ्कल्याणाय मोदे ।
नृपस्य शासनानि शठोऽवधीरयते ।
कपिमीक्षे ।
तारका विप्रकाशन्ते ।
नृत्यं शिक्षध्वे ।
नारायणस्य मित्रेऽभ्युदयाय यतेते ।

नृपं सेवावहे ।
आमानि फलानि बुधान-खादन्ते ।
प्रासादस्य शिखरे मयूरं प्रेक्षामहे ।
बालावुद्याने रमेते ।
हरेः कल्याणमपेक्षावहे ।

मित्राणामपराधान् क्षमेथे ।
बुधस्य गुणान् श्लाघन्ते ।
क्लेशाः पापाज्जायन्ते ।
नरा म्रियन्ते ।
याचका द्रव्यं याचन्ते ।
शुका वातायने डयन्ते ।

ब्राह्मण मिठाई खाते हैं ।
(दो) भिखारी धनवान से रुपया मांगते हैं ।
(तुम दोनों) अपने गुणों का बखान करते हो ।
(तुम) परिश्रम से धन प्राप्त करते हो ।
(तुम) निष्फल बकते हो ।
(तुमदो) धोखे का सन्देह करते हो ।
डर से हृदय कांपता है ।
सूर्य्य चमकता है ।
शेर मरता है ।
(तू) झूठ बोलता है ।
मित्रों के अभ्युदय पर मनुष्य प्रसन्न होते हैं ।
(हमदो) ऋषियों का आदर करते हैं ।

(तुझे) डर का संदेह है ।
(मैं) ईश्वर को प्रणाम करता हूँ ।
पेड़ों पर फूल हैं ।
योधा वैरियों का नाश करता है ।
मिठाई बालकों को अच्छी लगती है ।
(तुम) अपने गुरु की आज्ञा मानते हो ।
(हम) नौकरों के अपराध को क्षमा करते हैं ।
राम की दोनों आखें फड़कती हैं ।
मनुष्यों की भलाई के वास्ते राजा उद्योग करता है ।

पाठ १४

कर्मवाच्य व भाववाच्य।

कर्मवाच्य व भाववाच्य में धातुओं के आगे य, लगाकर आत्मने पद के प्रत्यय लगाये जाते हैं। (कर्मवाच्य, व भाववाच्य, किसको कहते हैं यह जानने के वास्ते पाठ १ को देखो—)

इनमें गणों का कुछ भेद नहीं समझा जाता अर्थात् असल धातु में उसी तरह "य" और प्रत्यय लगा दिये जाते हैं जैसे—पच् + य + ते = पच्यते, पच्यसे, पच्ये इत्यादि।

यदि धातु ऋकारान्त हो और उसके पहले कोई संयुक्त व्यञ्जन न हो तो कर्मवाच्य के य, के पहले उस ऋ के स्थान में 'रि' हो जाता है, जैसे कृ, का क्रि, हो जाता है और धातु के अन्त के इ, या उ, "य" के पहले दीर्घ हो जाते हैं जैसे—"जि" का "जी" कर्मवाच्य में भी 'प्रच्छ्' का 'पृच्छ' हो जाता है॥

धातु।

अर्थ = प्र के साथ—अर्ज करना।	दा [दी] = देना।
कृ = करना।	दिश = आ के साथ = आज्ञा करना।
ज्ञा = जानना।	

पठ्-१ ग०-प० = पढ़ना, सीखना ।
पा = [पी] = पीना ।
रुद् = रोना ।
श्रु = सुनना ।
स्था = [स्थो] = खड़ा होना।
हन् = मारना ।

संज्ञावाचक शब्द ।

आदेश = पु०-हुकुम, आज्ञा
आम्र = न०-आम ।
आराधन = न०-राजी करना, सेवा ।
उद्योग = पु०-कोशिश ।
उपालम्भ = पु० - झिड़की।
कपट = न० पु०—धोखा ।
काष्ठ = न०—लकड़ी ।
गात्र = न०—अङ्ग, बदन ।
गायक = पु०—गानेवाला, गवैया ।
गान = न०—गाना ।
गुण = पु०-नेकी, गुण ।
चातुर्य्य = न० - चतुराई ।
चाप = पु०-कमान, धनुष।
छात्र = पु० - शिष्य, चेला।
तण्डुल = पु० - चावल ।
ध्वनि = पु० - आवाज ।
नयन = न० - आंख ।
नारायण = पु० - नाम ।
पौर = पु० - नगर का वासी
प्राज्ञः = पु० - बुद्धिमान् ।
वचनीय = गु० - निन्दनीय
वसन्त = पु० - वसन्तऋतु ।
वाक्य = न० - वाक्य ।
विविध = गु० - कई प्रकारसे
वैयात्य = न० - गवारपना ।
शस्त्र = न० - हथियार ।
सङ्गीत = न० - गान आदि
स्वीय = गु० - अपनाही ।

वाक्य ।

शरेणारिर्हन्यते ।	भोजनेन शरीरं पुष्यते ।
बालकानां पाणयी जलेन प्रक्षाल्यन्ते ।	सैनिकाः सेनापतिना गण्यन्ते
कविभिः श्लाघ्यसे ।	स्तेनैरध्वौ क्रियेते ।
जनेन मृग्यध्वे ।	ध्वनिः श्रूयते ।
ईश्वरेण रक्ष्यामहे ।	वृक्षेषु वारि दीयते ।
लोकैर्नीयेथे ।	नृपैः स्तेना दण्ड्यन्ते ।
गजा आरुह्यन्ते ।	धान्यस्य राशयः क्रियन्ते ।
पौरैः प्रार्थ्यावहे ।	हरिणा फले भक्ष्येते ।
कृष्णस्य शरीरमलङ्कारैर्भूष्यते	नरैः सदा सुखमिष्यते ।
कविभिर्बुधस्य गुणाःप्रथ्यन्ते	शरौ मुच्येते ।
नरैः सेव्ये ।	समुद्रस्य जलं न पीयते ।
यतिभिस्त्यज्यते संसारः ।	नृपेणादिश्यध्वे ।
	ईश्वरः सदाचारेण तुष्यते ।

मोहरें ब्राह्मणों को दी जाती हैं ।	(तू) नौकरों से सेवा किया जाता है ।
राजा की आज्ञा की गई है।	(मैं) मित्रों से छोड़ा गया हूँ।
लकड़ी आग से जलाई जाती है।	(हम) आदमियों से देखे गये हैं ।
गुरुओं से कर्त्तव्य सिखाया जाता है।	(तुम) रोग से पीड़ित किये गये हो ।

(तू) मनुष्यों से देखा गया है।
(तुमदो) पुत्रों से पूजे जाते हो
नाज का ढेर लेजाया जाता है।
बुद्धिमानों से तत्व जाना जाता है।
बैरी राजा से जीते गये हैं।
(वह) बालकों से रोया गया है
(दो) सारथी मारे गये हैं।

ऋषी मनुष्यों से बन्दना किये गये हैं।
(वह) सूर्य्य से प्रकाशित किया गया है।
(वह) ईश्वर से बनाया गया है।
(तुम) आदमियों से तारीफ किये जाते हो।
(हमदो) मनुष्यों से बन्दना किये गये हैं।

उदाहरण—

भाष्—कर्मवाच्य।

उ०	भाष्ये	भाष्यावहे	भाष्यामहे
म०	भाष्यसे	भाष्येथे	भाष्यध्वे
प्र०	भाष्यते	भाष्येते	भाष्यन्ते

प्रश्न।

(१) 'च' और 'वा' का वर्त्ताव कैसा होता है?

(२) छठे गण तुदादि धातुओं के अन्त के स्वर का 'अ' लगाने से पहले कैसा रूप हो जाता है? उदाहरण सहित लिखो।

(३) भाववाच्य व कर्मवाच्य के बनाने की रीति लिखो।

(४) रुच् और इसी अर्थ के और धातुओं के साथ में कौन सा कारक आता है ?।

(५) वृत्, वृध्, डी, स्मि, मृ—इत्यादि के लट् लकार के रूप ले जाओ (अध्यापक को उचित है कि इस प्रश्न में शिष्य से इतने धातुओं के रूप लिखावे कि उसको आत्मनेपद का पूर्ण अभ्यास हो जावे।)

(६) दा, पा, कृ, श्रु, स्था, इत्यादि के कर्म व भाववाच्य के रूप ले जाओ—(इसमें भी अध्यापक प्रश्न ५ के अनुकूल करे।)

पाठ १५

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग—शब्द।

प्रथम से चतुर्थ कारक तक।

आकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग में 'स्' गिर जाता है और आकारान्त में 'औ' का ई हो जाता है सम्बोधन में 'स्' भी 'इ' हो जाता है।

तृतीया के एकवचन का प्रत्यय लगाने से पहिले शब्द के अन्त का आ बदल कर 'अ' हो जाता है।

आकारान्त शब्दों के तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, व सप्तमी के एक वचन के प्रत्यय लगाने से पहिले य, और जोड़ा जाता है।

गङ्गा के रूप में ।

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
कर्त्ता	गङ्गा	गङ्गे	गङ्गाः
कर्म	गङ्गाम्	गङ्गे	गङ्गाः
करण	गङ्गया	गङ्गाभ्याम्	गङ्गाभिः
सम्प्रदान	गङ्गायै	गङ्गाभ्याम्	गङ्गाभ्यः

शब्द स्त्रीलिङ्ग ।

आज्ञा—हुकुम ।
कथा—कहानी ।
कन्या—लड़की ।
कला—कारीगरी, हुनर ।
कान्ता—बहू, स्त्री ।
क्रीड़ा—खेल ।
क्षमा—माफी ।
गङ्गा-गङ्गा नदी ।
चिन्ता—सोच, फिकर ।

जरा—बुढ़ापा ।
ज्योत्स्ना—चान्दना, प्रकाश ।
देवता—देवता ।
पाठशाला—पढ़ने का स्थान, मदरसा ।
पूजा—पूजा ।
प्रजा—पिरजा, रैयत ।
प्रभा—चान्दना, प्रकाश ।
प्रमदा—जवान औरत ।
भार्या—बहू ।
माला—माला ।
मुक्ता—मोती ।
लज्जा—लाज, शरम ।
लता—बेल ।
ललना—स्त्री, औरत ।
वाचा—बोली ।
व्यथा—दरद, पीड़ा ।
शोभा—सुन्दरता ।
सीता—राम की बहू ।

सामान्य—शब्द ।

अनुराग—पु०—प्यार ।
आत्मीय—गु०—अपनाही।
आधार—पु०—ठहराव, सहारा ।
आरम्भ—पु०—शुरू, आदि।
उपवन—न०—बाग ।
कण्ठ—न०—भाड़, गला, कण्ठ ।
करभक—पु०—हाथी का बच्चा ।
गमन—न०—जाना ।
गीत—न०—गीत ।
जनक—पु०—सीता का बाप ।
जरठ—पु०—बूढ़ा ।
दूत—पु०—दूत, वकील।
नाग—पु०—हाथी ।

नाटक—न०—खेल, तमाशा
नारद—पु०—ऋषी का नाम
पल्लव—पु०—पत्ता ।
तल—न०—सतह ।
प्रासादतल—न०—महल के ऊपर की छत ।
बल—न०—सेना, फौज ।
भूषण—न०—गहना, जेवर
रत्न—न०—लाल ।
विरूप—गु०—कुरूप ।
सन्देश—पु०—सन्देसा ।
सूत्रधार—पु०—नाटक में मुख्य काम करनेवाला
स्वस्थ—गु०—चैन में ।
हरिण—पु०—हिरण, मृग।
हित—न०—लाभ ।

धातु ।

गम्—निर् के साथ, चल सम् के साथ, आत्मने पद, मिलना ।

चर्—आ के साथ, अभ्यास करना ।
तन्त्र—१० ग०, उ०प० खबरदारी रखना ।

तॄ-(तर्) १ ग०, प०प०-
पार होना, तिरना,
अव के साथ, उतरना।
दा-प्र के साथ देना।
द्युत् (द्योत्) १ ग०, आ-
चमकना।
नी—परि के साथ, विवाह
करना।

पत्—उद् के साथ, उठना
उछलना।
वृ—परि के साथ, घेरना*
वृत्—नि के साथ, लौटना।
हि—प्र के साथ, भेजना *
ह्लाद्-१० ग०, आ के साथ,
खुश करना।

वाक्य।

नारदो लोकमवतरति स्व-
र्गात्।
नृपस्य कथां कृष्णो वदति
प्रमदा उपवने रमन्ते।
कुसुमानां माले कण्ठे धा-
रयति।
कृष्णो मित्राणि वाचया
सांत्वयति।
क्षमयानरश्चित्तस्य स्वास्थ्यं
विन्दते।
रामः स्वकन्यायै अलङ्कारं
यच्छति।

कन्ये पश्यामः।
शरीरं मालया भूषयति।
ग्रामे कूपौस्तः।
जरठस्य कथया सुखमधि-
गच्छति।
रामस्य भार्यां सीतां वन्दते
पुरुषो भार्यां रक्षति।
लतया वृक्षः परिव्रियते।
हरिः कथा देवतामाह्लाद-
यति।
जनकस्य कन्या सीता रा-
मेण परिणीयते।

* इनका केवल कर्म वाच्य व भाव वाच्य ही बरताव में आवेगा।

नाटकस्यारम्भे सूत्रधारः जान्तामाह्वयति ।

रामः सीतया सह गङ्गामवतरति ।

हरेः कन्याः पाठशालाङ्गच्छन्ति ।

नृपति रात्मीयां प्रजां पुत्रमिव रक्षति ।

सीता राम की बहू है ।

महलों की खिड़कियों से स्त्रियां देखती हैं ।

कृष्ण कलायें सीखता है ।

गङ्गा समुद्र में गिरती है ।

राजा की दो लड़कियां बाग में खेल रही हैं ।

(वह) दो बैलों को छूता है ।

मूर्ख लज्जा को छोड़ देता है

(वह) बाग की शोभा देखता है ।

स्त्रियां महल की छत पर चढ़ती हैं ।

ब्राह्मण पृथ्वी पर फिरते हैं

राजा प्रजा का लाभ चाहता है ।

देवताओं की पूजा से वह सुख पाता है ।

मोतियों की चमक से महल शोभा को प्राप्त हो रहा है ।

वह लज्जा से घर में घुसता है ।

गङ्गा से नगर दो कोस है

कूँयें से पानी बहता है ।

लड़के पाठशाला में जाते हैं

पाठ १६

अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, व सम्बोधन आकारान्त शब्द ।

अन्त का "आ" "ओस्" के पहिले बदल कर "ए" हो जाता है ।

आकारान्त, ईकारान्त, व ऊकारान्त शब्दों के सप्तमी के एक बचन में 'इ' को 'आम्' हो जाता है।

	ए० ब०	द्वि० ब०	ब० ब०
अपादान	गङ्गायाः	गङ्गाभ्याम्	गङ्गाभ्यः
सम्बन्ध	गङ्गायाः	गङ्गयोः	गङ्गानाम्
अधिकरण	गङ्गायाम्	गङ्गयोः	गंगासु
सम्बोधन	हे गङ्गे	गङ्गे	गंगाः

शब्द।

अतीव—अव्यय—बहुत।
अनुष्ठान—न०—करना।
अयोध्या—स्त्री—एक नगर का नाम।
अवचय—पु०—समाज, इकट्ठा होना।
उदक—न०—जल।
चकोर—पु०—एक प्रकार की चिड़िया।
छाया—स्त्री०—छाया।
जयन्त—पु०—इन्द्र के पुत्र का नाम।
तीर—न०—किनारा।
तृष्णा—स्त्री०—प्यास, इच्छा।
दण्डका—स्त्री०—जंगले का नाम।
दक्ष—गु०—परिश्रमी, मेहन्ती
देश—पु०—देश।
निरतिशय—गु०—पूरा, जिससे बढ़कर न हो।
निशा—स्त्री०—रात।
निशाचर—पु०—राक्षस।
परम—गु०—बहुत।
प्रतिज्ञापन—न०—ठहरना
प्रवर्तन—न०—स्थापित करना, भड़काना, प्रवर्त। करना।

प्रवाह—पु०—बहना ।
प्रावीण्य—न०—प्रवीणता ।
प्रिय—गु०—प्यारा ।
वाहुल्य—न०—अधिकता ।
मण्डप—पु०—झोपड़ा, मांडा
मत्स्य—पु०—मच्छ, मछली
मानव—पु०—मनुष्य, आदमी ।
माधुर्य—न०— मीठापन, मिठास ।
रथ्या—स्त्री०—सड़क, गली।
वचन—न०—उपदेश, प्रार्थना, बोली ।
वल्लभ—पु०—पति, प्यारा ।
विवाह—पु०—व्याह, शादी ।
शकुन्तला—स्त्री०—एक औरत का नाम ।
शिला—स्त्री०—पत्थर, सिल ।
शूद्रक—पु०—एक राजा का नाम ।
श्रद्धा—स्त्री०—भरोसा ।
संघात—पु०—समूह, संग्रह ।
संभार—पु०—तयारी, सामग्री, सँभालना ।
संमार्जन—न०—बुहारना, साफ करना ।
सदैव—अव्यय—सदाही, हमेशा ।
स्निग्ध—गु०—चिकना, प्यारा, साफ ।

धातु ।

अर्ह्—भ्वादि—प० = योग्य होना ।
ऋध्—४ ग०—सम् के साथ बढ़ना ।
क्रीड़्—भ्वादि—प० = खेलना
चर् = टहलना, फिरना ।
फल्—१ ग० —प० = फलना, पूरा होना ।

रुध्—नि के साथ = ढकना, रोका जाना।	हृ—वि के साथ = खेलना, अपने आपको बहलाना हवा खाना।

वाक्यानि।

अयोध्यायां रामो वसति।
गङ्गायास्तीरे वृक्षाः सन्ति।
इन्द्रस्य पुत्रो जयन्तः ।
प्रियाणि मित्राणि राम-मनुगच्छन्ति।
चकोरी ज्योत्स्नायान्तु-ष्यति।
लतायाः कुसुमान्यानयति।
हरिरात्मीयानां कन्यानां पुण्यानि शंसति ।
उदके मत्स्याः सन्ति।
अयोध्याया रथ्यायां रथं पश्यामि।
शकुन्तला मित्राणां स्नेह-मर्हति।
रामस्य वचने माधुर्यमस्ति।
सीतायाः पुत्राः कुत्र सन्ति?

ऋषेराश्रमे।
दण्डकायां निशाचराः सन्ति।
समुद्रे द्वीपा वर्तन्ते।
नदस्य प्रवाहः शिलानां राशिना निरुध्यते ।
किङ्करोऽर्घ्यमानयति।
वृक्षस्य छायायां मानवान् पश्यामि।
निशाचरा निशायामटन्ति।
गङ्गाया जलं पुण्यमस्ति।
शूद्रकस्याज्ञया स्तेना दण्ड्यन्ते।
कलानाम्बाहुल्यात्समृध्यति देशः।
नृपस्याज्ञाया अनुष्ठाने दक्षोस्ति।

नगर में मनुष्य बसते हैं।
मछलियां पानी में रहती हैं।
हाथी का बच्चा क्रीड़ा कर रहा है।
गङ्गा में पानी बहुत है।
बुद्धिमानों का बचन सदा मीठा होता है।
प्रजाओं का धर्म में लगाना राजाओं से किया जाता है।
स्त्री का बचन पुरुष से किया जाता है।
नगर में शिव की पूजा में स्त्रियां नाचती हैं।
मदरसे नियत करने से मनुष्यों का ज्ञान बढ़ता है।
हे हरि! मैं नदी के किनारे जाता हूँ।
मनुष्यों से (अपने) घर के रस्ते का बुहारना किया जाता है।

गङ्गा के जल में हाथी खेलता है।
अयोध्या का राजा राम है।
गर्मी में नदियों के पानी में राजा खेलते हैं।
बुढ़ापे में भी मनुष्यों की इच्छा शान्ति नहीं होती।
तालाब में कँवल उगते हैं।
(वह) वृक्षों की छाया में पत्थर पर बैठता है।
कृष्ण (अपनी) स्त्री के विनय की प्रशंसा करता है।
चान्द रात का स्वामी है।
(दो) लड़कियों के विवाह की तैयारियां की जा रही हैं।
राम पिता के हुकम को मानता है।
राम और लक्ष्मण अयोध्या से (दण्डक नाम के) जंगल को जाते हैं।

गलियों में मनुष्य इकट्ठे हो रहे हैं।
मेहनती मनुष्य सदा प्रवीणता पाते हैं।
(एक) आदमी वृक्ष के नीचे झोपड़े में जाता है।

(एक) मनुष्य (अपनी) मीठी बोली से नगर के सब आदमियों को प्रसन्न करता है।

पाठ १७

ईकारान्त—शब्द स्त्रीलिङ्ग

पृथ्वी = धरती।

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्रथमा	पृथ्वी	पृथ्व्यौ	पृथ्व्यः
द्वितीया	पृथ्वीम्	पृथ्व्यौ	पृथ्वीः
तृतीया	पृथ्व्या	पृथ्वीभ्याम्	पृथ्वीभिः
चतुर्थी	पृथ्व्यै	पृथ्वीभ्याम्	पृथ्वीभ्यः

चतुर्थी, पञ्चमी, व षष्ठी, के ए० व० में प्रत्यय से पहिले 'अ' और लगता है।

शब्द स्त्रीलिङ्ग।

अरुन्धती = वसिष्ठऋषि की बहू।
अवन्ती = एक नगरी का नाम, उज्जैन।

कुमारी = कुँवारी कन्या।
कौशाम्बी = एक नगर का नाम।

जननी = माता ।
दासी = चेरी, बांदी ।
नटी = नाटक करनेवाली
नटनी = नाचनेवाली ।
नदी = नदी ।
नारी = लुगाई, स्त्री, औरत
पञ्चवटी = किसी जगह का नाम, नासिक ।
पत्नी = बहू ।

पुरी = नगरी, शहर ।
पृथ्वी = धरती ।
महिषी = पटरानी ।
मही = धरती ।
रजनी = रात ।
वापी—बावली, कुवाँ ।
सखी—भायली, सहेली ।
सहचरी—दासी, साथ चलनेवाली ।

वाक्यानि ।

नारदः स्वर्गादवतरति महीम् ।
रामस्य पत्न्यरुन्धतीं वन्दते ।
हरिणस्य सहचरी हरिणमनुगच्छति ।
सूत्रधारी नटीमाह्वयति ।
हरिर्नदीं गच्छति ।
जनन्यौ रामस्य बने गमनं शोचतः ।
नार्यः कूपान् गच्छन्ति ।
नदीभिः पुरी परिव्रियते ।

वुधाः पृथ्व्याः स्वर्गं गच्छन्ति
वसिष्ठोऽरुन्धत्या सहागच्छति ।
महिषी दास्यै कुप्यति ।
नारायणस्य पत्न्यौदनः पच्यते ।
नृपतेराज्ञयावन्तीं गच्छामि ।
कुमारीभ्यां बलिः क्रियते ।
सीतासख्यागीतं शिष्यते ।

अरुन्धती वसिष्ठ की बहू है

स्त्रियां महलों की बारियों से देखती हैं।

राम (अपनी) मा को बुलाता है।

रात चान्द के कारण से चमकती है।

दो नदियां मिल कर बहती हैं।

एक कुँवारी कन्या दो भायलियों से बोलती है।

नटी सूत्रधार की बहू है।

स्त्रियां महलों की छत पर चढ़ती हैं।

ब्राह्मण पृथ्वी पर फिरते हैं

एक लुगाई को सन्देसा भेजा गया है।

वह अवन्ती को जाता है

राम की बहू को फल अच्छे लगते हैं।

दूत कौशाम्बी को लौटता है।

पटरानी की सेवा एक दासी से की गई है।

सीता दासियों से घेरी गई है।

राम पञ्चवटी को चलता है।

कूयें से पानी बहता है।

पाठ १८

ईकारान्त शब्द।

पञ्चमी से—सम्बोधन तक।

ईकारान्त व ऊकारान्त में ह्रस्व इ, उ, कर देने से सम्बोधन का एक वचन हो जाता है जैसे जननि—और द्विवचन व बहुवचन प्रथमा के सदृश होते हैं।

	ए०व०	द्वि०व०	ब०व०
पञ्चमी	पृथ्व्याः	पृथ्वीभ्याम्	पृथ्वीभ्यः
षष्ठी	पृथ्व्याः	पृथ्व्योः	पृथ्वीनाम्
सप्तमी	पृथ्व्याम्	पृथ्व्योः	पृथ्वीषु
सम्बोधन	हे पृथ्वि	पृथ्व्यौ	पृथ्व्यः

शब्दाः स्त्रीलिङ्ग ।

इन्द्राणी–इन्द्र की स्त्री ।
कौमुदी–चान्द की चान्दनी ।
गोदावरी–एक नदी का नाम ।
निशाचरी–राक्षसी, भूतनी
पुत्री—बेटी ।
वाणी–बचन, बोली ।

वाक्यानि ।

इन्द्राण्याः पुत्रो जयन्तः ।
गोदावर्यास्तटे वृक्षाः सन्ति ।
रामस्य मित्राणि कौमुद्यामटन्ति ।
कौमुद्यां चकोरस्तुष्यति ।
हरिः पुत्र्याः पुण्यं प्रशंसति
नद्यामत्स्याः सन्ति ।
रामस्य वाण्याम्माधुर्यमस्ति ।
जनन्याश्चित्तं पुत्र्यां स्निग्धमस्ति ।
दण्डकायां निशाचर्यःसन्ति
महिष्या आज्ञया शठा दण्ड्यन्ते ।
सीतायाः पुत्रौ कुत्रस्तः ?
पृथ्व्यां द्वीपाः सन्ति ।
नद्याः प्रवाहः शिलानां राशिना निरुध्यते ।
दास्यर्घ्यमानयति ।
रामो गोदावर्याः पञ्चवटीं गच्छति ।
रजनी ज्योत्स्नया शोभते

नदी का गाना अच्छा है।
हरि अवन्ती से कौशाम्बी को आता है।
नदी में नावें जा रही हैं।
रात में चोर चोरी करते हैं।
नारद पृथ्वी से स्वर्ग को को जाता है।
स्त्रियां इन्द्राणी की पूजा में लग रही हैं।
रात को चान्द के चान्दने में गोदावरी के किनारे देवता बिहार कर रहे हैं।

दण्डकबन में रात को राक्षसी फिरती हैं।
राम दण्डकबन से अयोध्या जो आते हैं।
नदी के किनारे पर वृक्ष होते हैं।
गङ्गा और यमुना दोनों नदियों का पानी प्रयाग में मिलता है।
सीता गोदावरीनदी का जल पीती है।

परीक्षा के प्रश्न।

सामान्य भूत

गङ्गा नदी।

	ए०व	द्वि०ब०	ब०ब०
कर्त्ता	गङ्गा	गङ्गे	गङ्गाः
कर्म	गङ्गाम्	गङ्गे	गङ्गाः
करण	गङ्गया	गङ्गाभ्याम्	गङ्गाभिः
सम्प्रदान	गङ्गायै	गङ्गाभ्याम्	गङ्गाभ्यः
अपादान	गङ्गायाः	गङ्गाभ्याम्	गङ्गाभ्यः

सम्बन्ध	गङ्गायाः	गङ्गयोः	गङ्गानाम्
अधिकरण	गङ्गायाम्	गङ्गयोः	गङ्गासु
सम्बोधन	गङ्गे	गङ्गे	गङ्गाः

मही—धरती ।

कर्त्ता	मही	मह्यौ	मह्यः
कर्म	महीम्	मह्यौ	महीः
करण	मह्या	महीभ्याम्	महीभिः
सम्प्रदान	मह्यै	महीभ्याम्	महीभ्यः
अपादान	मह्याः	महीभ्याम्	महीभ्यः
सम्बन्ध	मह्याः	मह्योः	महीनाम्
अधिकरण	मह्याम्	मह्योः	महीषु
सम्बोधन	महि	मह्यौ	मह्यः

(१) आकारान्त व ईकारान्त के प्रत्ययों में क्या २ विशेष नियम हैं ? सो कहो ।

(२) आकारान्त व ईकारान्त शब्दों के रूप ले जाओ पर वे छः से कम न हों ॥

पाठ १९

लङ् लकार अनद्यतन भूत ।

यह लकार वर्तमान दिन से पहिले की क्रिया के वास्ते आता है ।

परस्मैपद--प्रत्यय ।

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
उ० पु०	अम् *	व	म
म० पु०	स्	तम्	त
प्र० पु०	त्	ताम्	अन्

इस लकार में धातुओं के पहिले अ, जोड़ा जाता है। गणों के चिन्ह इस लकार में भी उसी प्रकार से लगाये जाते हैं जैसे पहिले बता दिये हैं ॥

त् और स् प्रत्ययों के पहले अस् धातु में तो ई और अद् धातु में अ और जोड़ा जाता है जैसे— आसीत्, आसीः आदत्, आदः ।

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम
म० पु०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्

स्वरादि धातुओं के पहिले जो अ लगता है उसका इ या ई से मिल कर ऐ, और उ या ऊ से मिल कर औ, और ऋ, या ॠ से मिल कर आर्, हो जाता है। जैसे आ + ईचत = ऐचत ।

* देखो पृष्ठ ८ के + चिन्ह को

शब्दाः ।

अज—पु० = बकरा ।

असारता—स्त्री० = निकम्मापन ।

आशा—स्त्री० = उम्मेद ।

आशीर्बाद-पु० = असीस ।

उज्ज्वलम्-गु०-चमकीला ।

गोप—पु० = ग्वाल ।

गोष्ठ = न० = गायों के बन्द करने का बाड़ा।

ग्रन्थ-पु० = पुस्तक, किताब

ग्रन्थन-न० = गूथना, माला बनाना ।

चन्द्रापीड़-पु० = एक राजकुँवर का नाम ।

चित्रकूट—पु० = एक पहाड़ का नाम ।

तनय—पु० = बेटा ।

दशरथ—पु० = एक राजा का नाम, राम के पिता।

देवी—स्त्री० = बड़ी श्रेष्ठ स्त्री या देवी ।

देवदत्त-पु० = नाम एक मनुष्य का ।

धार्तराष्ट्र—पु० = धृतराष्ट्र का बेटा ।

नृशंस-गु० = खोटा, पापी, हत्यारा ।

पञ्जर—पु० = पिंजरा ।

पण्डित—पु० = पढ़ालिखा ।

पाण्डव—पु०-पाण्डु राजा का बेटा ।

पुरतस्-अव्यय-सामने में ।

बलि—पु०-एक राजा का नाम ।

महिष—पु०—भैंसा ।

मदिरा—स्त्री०-शराब ।

माणवक—पु०-एक मनुष्य का नाम ।

मारुत—पु०-हवा, वायु ।

मार्ग—पु०-सड़क, रास्ता।

मुष्टि—पु०—मूठी भर ।

राक्षस-पु०-दुष्ट पुरुष, भूत ।

लव—पु०-राम के बेटे का नाम।
वसुधा-स्त्री०-धरती, पृथ्वी
विराव-पु०-चिल्लाहट, शब्द।
शव—न०—लाश, मुरदा।
शृगाल—पु०—गीदड़।
शंकट—न०—कठिन, मुश्किल।
संचलन-न०—इधर उधर फिरना।
समराङ्गण-न०-लड़ाई का मैदान।
सेना—स्त्री—फौज।
स्थान—न०—जगह।

वाक्यानि।

कासारस्य जलमशुष्यत्।
सेनापतिः सेनां समराङ्गणेऽनयत्।
सार्थो नगरान्नगरमाटत्।
ग्रन्थमकथयाम *
मित्रे राममस्मरताम्।
हरेरुद्यानात् फलान्यहरतम्।
रामाय कथामकथयः *
रामस्य सदाचारेणातुष्यः।
गोष्ठे व्याघ्रावधावताम्।
ऋषीनशाम्याव।
कृष्ण आत्मीयपादौ प्राक्षालयत्।
ईश्वरः पृथ्वीमसृजत्।
हरिमुपालम्भमत्यसृजम्
जनावुपवनमगच्छताम्।
अजोऽन्नमादत्।
वने वसतम्।
योधोऽरेर्नारीनरक्षत्।

* कभी कथ के दो कर्म होते हैं और यह दूसरा कर्म चतुर्थी या षष्ठी में आ जाता है।

महिषी नृपतेः सभामगच्छत् ।

कूर्मः शनैश्शनैरचलत् ।

वृक्षस्य तलमुपाविशाम ।

कारणेन विना ग्राममदहन् ।

कौशाम्बी नगर्यासीत् ।

कौशाम्ब्याः पौराः पण्डिता आसन् ।

बलेः पुरतो भिक्षुक आगच्छत् ।

माली ने अपने बेटे को माला गूँथना सिखाया।

राम गङ्गा के पार उतरे।

तुम पुत्रों का धर्म कहो।

राजा के सामने बुरे मनुष्यों ने झूठ बोला।

(हम) देवताओं को पूजते हैं ।

मैंने भिखारी को रुपये दिये ।

जङ्गल में मैंने भैंस देखे।

हवा ज़ोरसे चली ।

सन्ध्या समय गीदड़ चिल्लाये ।

माणवक ने (अपने) बेटे को बुलाया ।

व्याघ्र ने बकरी को मारा और खाया ।

घोड़ों ने व्याघ्र को देखा और भागे ।

हाथी के बच्चे जङ्गल में बहुत थे ।

किसानों ने खेत बोया ।

राजा के मन्त्री राजा के पास बैठे ।

शूकर ने रात को धरती खोदी ।

व्याघ्र ने भैंसे को फाड़ डाला ।

मन्त्री राजा के सामने झुके और बैठ गये ।

वह गूंगा था सभा में न बोला ।

भिखारी को चांदी का बरतन दिया ।	खेत में नाज उगा ।
(उसने) चांदी से सोने का बदला किया ।	बाग में कच्चे फल थे ।
	राम के बिना दशरथ मर गये ।

पाठ २०

लङ् लकार

आत्मनेपद के प्रत्यय ।

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०
उ०पु०	इ	वहि	महि
म०पु०	थास्	इथाम्	ध्वम्
प्र०पु०	त	इताम्	अन्त
उ०पु०	अवन्दे	अवन्दावहि	अवन्दामहि
म०पु०	अवन्दथाः	अवन्देथाम्	अवन्दध्वम्
प्र०पु०	अवन्दत	अवन्देताम्	अवन्दन्त

धातु ।

ध्वंस्—१ ग०—आ०प० – नाश होना, नीचे गिरना ।

मन्—४ ग०—आ०प० – अव के साथ = न मानना, अनादर करना ।

मन्त्—१० ग० – आ०प०नि के साथ = बुलाना, न्योतना ।

मृश्—६ ग०—प०प०—वि के साथ=जांचना, परीक्षा करना ।

लज्ज्—६ ग०—आ०प०=लज्जित होना ।

स्पर्ध्—१ ग०—आ०प०=ईर्षा करना, बराबरी करना ।

स्रंस्—१ ग०—आ०प०=गिर जाना ।

हस्—१ ग०—वि के साथ=हँसना ।

शब्दाः ।

अनिष्ठ—न०—बुराई ।

अवधीरणा—स्त्री०—पीछे को हटना, नफ़रत करना, बेइज़्जती ।

असुर—पु०—राक्षस ।

आरोपण—न०—लगाना, बोना ।

उपदेश—पु०—नसीहत, सलाह सीख ।

कबरी—स्त्री०—बालों की लटी, चुटला ।

कार्य—न०—काम ।

गन्धर्व—पु०—आकाशी मनुष्य, देवगायन ।

ग्रहण—न०—पकड़ना ।

चोर—पु०—चोर ।

जाल—न०—जाल ।

त्याग—पु०—छोड़ना ।

दर्शन—न०—देखना ।

दुष्कृत—न०—बुरा काम, पाप ।

नायक—पु०—अगुवा, ले जानेवाला, मालिक ।

परम्—अव्यय—पर, परन्तु ।

पान्थ—पु०—मुसाफिर, बटेऊ ।

प्राची—स्त्री०—पूर्व दिशा ।

प्राश्निक—पु०—परीक्षा लेनेवाला ।

बल–न०–ताकत, ज़ोर ।
बीज–न०–बीज, कारण ।
वीर्य–न०—बहादुरी, पराक्रम ।
भूप—पु०—राजा ।
रमण—पु०—पति, प्यार करनेवाला ।
व्याध—पु०— शिकारी, पारधी ।
सचिव–पु०–मन्त्री ।
समूह–पु०–झुण्ड, भीड़ ।

वाक्यानि ।

रावणो देवेभ्योऽस्पर्धत ।
रामं न्यमन्त्रये ।
नृपते राज्ञामवामन्यथाः ।
भूपस्य कोशमध्वंसामहि ।
नायकस्य चातुर्यं धार्तराष्ट्रो व्यहसत ।
प्राश्निकः प्रश्नपत्राणि व्यमृश्यत ।
असुरा अनिष्टैररमन्त ।
कपयो ऽसुरेण सहायुध्यन्त
रामस्य दर्शनाय पौरा अयोध्याया वहिरधावन् ।
सचिवस्योपदेशेन भूपः प्रसन्नोऽभवत् ।
मारुतेन वृक्षावस्रंसेताम् ।
माणवकस्य दुष्कृतेनालज्जध्वम् ।
रुक्मं रंकोऽयाचत ।
कपर्दिकामपि नाविन्दत ततस्तूष्णीमगच्छत् ।
मार्गे धनमलभामहि ।
वसुधायां पर्वतानद्यश्चावर्तन्त ।
मदिरया मनुष्या अमुह्यन् ।
व्याधस्य भयाद्विहगा अवेपन्त ।
नार्यः कबर्या ऽशोभन्त ।
रामस्य बाहावस्पन्देताम् ।

धनिकाः भृत्यैरसेव्यन्त ।
मदिरयानिष्टं कार्यमक्रियत

रामेण ब्राह्मणाय धनमदीयत ।

पक्षियों ने व्याध को देखा और उड़ गये ।

राजा की बहादुरी लड़ाई में प्रगट हुई ।

स्त्री अपने पति के साथ खुश थी ।

मन्त्री ने राजा को अच्छी सलाह दी ।

गुरुओं को चेलों ने प्रणाम किया *

बटाऊ नदी के किनारे २ गया ।

(उसने) एक व्याघ्र देखा और वहां से भागा ।

मन्त्री राजा के पास गया।

किसान ने बीज बोना आरम्भ किया ।

भीड़ से वह घेरा गया।

गन्धर्व आकाश से उतरे और नाचे ।

गीदड़ों के चिल्लाने से बालक डर गये ।

हनुमान् को मूर्छा हुई और राक्षस उसको ले गये ।

पिँजरे में पक्षी हैं ।

राजा ने शराब बहुत पीई और पागल हो गया ।

विश्वामित्र रामचन्द्र जी के गुरु थे ।

फावड़े से धरती खोदी गई ।

छड़ी से चोर पीटा गया।

राजा को भेंट दी गई ।

* यहां यदि आचार्य के आगे शिष्य शब्द लगाया जाय तो नीचे लिखी सन्धि काम में आवेगी कि दन्तस्थानीय व्यञ्जन के आगे तालुस्थानीय या मूर्द्धस्थानीय व्यञ्जन आवें तो पहले वर्ण का व्यञ्जन बदल कर पिछले वर्ण में हो जाता है जैसे स् का श् या ष्, त् का च् या ट् थ् का छ् या ठ्, द् का ज् या ड्, ध् का झ् या ढ्, न् का ञ् या ण्।

परीक्षा।

(१) दा, पृच्छ्, ह्लाद् आ के साथ, वृ–परि के साथ, हि प्र के साथ, इन धातुओं के कर्मवाच्य लङ् लकार के रूप ले जाओ।

(२) नीचे लिखे धातुओं के रूप ले जाओ—

नी—परि के साथ, वृध्—सम् के साथ, हृ, डी, स्पन्द्, रुध् अनु के साथ, वाद्–अभि के साथ, खाद्, चम्

पाठ २१

सर्वनाम के रूप।

अस्मद्–मैं (या हम)

	ए॰ब॰	द्वि॰ब॰	ब॰ब॰
कर्त्ता	अहम्	आवाम्	वयम्
कर्म	माम् (या मा)	आवाम् (या नौ)	अस्मान् (या नः)
करण	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
सम्प्र॰	मह्यम् (या मे)	आवाभ्याम् (या नौ)	अस्मभ्यम् (या नः)
अपा॰	मत्	आवाभ्यम्	अस्मत्
सम्बन्ध	मम (या मे)	आवयोः (या नौ,	अस्माकम् (या नः)
अधि॰	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्–तू (या तुम)

कर्त्ता	त्वम्	युवाम्	यूयम्
कर्म	त्वाम् (या त्वा)	युवाम् (या वाम्)	युष्मान् (या वः)

करण	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
सम्प्र०	तुभ्यम् (या ते)	युवाभ्याम् (या वाम्)	युष्मभ्यम् (या वः)
अपा०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
सम्बन्ध	तव (या ते)	युवयोः (या वाम्)	युष्माकम् (या वः)
अधि०	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

शब्द पुलिङ्ग।

ऋतुपर्ण—एक राजा का नाम
कपोल = गाल।
जामातृ = जँवाई।
तड़ाग = तालाब।
दुर्जन = खराब आदमी।
परशुराम = नाम एक ब्राह्मण का।

भीम = पाण्डु के बेटे का नाम।
भ्रमर = भौंरा, मक्खी।
लक्ष्मण = राम का भाई।
विघ्न = रोक, रुकावट।
विमार्ग = खराब रास्ता।

स्त्रीलिङ्ग।	गुणवाचक।	अव्यय।
अमरावती—इन्द्र की राजधानी।	अग्र—सिरा, नोक	अनेकशस्—बार २
जिह्वा—जीभ।	क्षुधित—भूखा।	तु—परन्तु (वाक्य के आदि में नहीं आता है।
	श्याम—काला।	
	राष्ट्र—न०—देश।	

धातु।

दूष्—४ गण—प०पद—अनु के साथ—ढूँढ़ना।

गम्—अनु के साथ—पीछे २ जाना।

गल्—१ गण-प॰पद-गिरना

नी—प्र के साथ-लिखना, या बनाना पुस्तक का।

भृ—(भर्) १ गण-उ॰पद-भरना।

मन्—अनु के साथ-मानना, राज़ी होना।

मा—[मी] ४ गण-आ॰पद निर् के साथ-पैदा करना

वाञ्छ्—१ ग॰—प॰पद=चाहना।

व्यञ्जनादि पदों के पहले तो 'अ' और स्वरादि के पहले 'अन्' जोड़ देने से नहीं का अर्थ हो जाता है॥

वाक्यानि।

ऋतुपर्णो मां समया*गच्छत्

अहं विमार्गमेवागच्छन्दुःखमालभे।

क्षुधितो रङ्को भूपमयाचतान्नञ्चाविन्दतेतिमामवदत्

न्यायेन राज्यं वर्धत एव†महमभाषे।

त्वां पुनरप्याह्वयम्परन्तुत्वंनागच्छः।

परशुरामोऽमरावत्या धरामवातरत्।

सामयच्छः।

पश्यामि देवांस्तव देव देहे।

रामस्योऽङ्गमेऽयोध्यायामुत्साहोऽभवत्।

* समया अभितः, परितः, निकषा, हा, इनके साथ द्वितीया आती है॥

† जब कि पदान्त में ए, ऐ, ओ, औ, आवें और उनके आगे स्वर होने से जो उनका 'अय्', आय्, अव्, और आव् हो जाता है सो इनमें य्, और व्, गिर भी जाता है फिर अगले स्वर से सन्धि नहीं होती जैसे वर्धते+एवम्=(वर्धत+ए)=वर्धत्+अय्+एवम्=वर्धतयेवम् या वर्धत एवम्॥

दशरथेन भृत्येभ्यो द्रव्यमदीयत ।	त्वम्मयि दुराचारमशङ्कथाः ।
सख्येयन्नृत्यस्त्वाक्रियते ।	नमस्ते । नमस्तुभ्यम् ।
मे पुस्तकानि क्व सन्ति ।	त्वां वन्दे । नोऽसेवेथाम् ।
तव पुस्तकं मम गृहे वर्तते ।	यूयमस्मभ्यन्द्रव्यमयच्छत ।
त्वम्बुधः ।	त्वया सभा शोभते ।
आसीदयोध्यायाम्पुर्यां दशरथो भूपतिः ।	दुराचारात्ते नाशोऽभवत् ।
	अस्माकं पुस्तकानि तव गृहयासन् ।

मैंने तुमको तुम्हारे मकान पर ढूंढ़ा परन्तु तुम वहां नहीं थे ।

मेरी पुस्तक के वास्ते मैं तुम्हारे पीछे २ गया पर तुमने नहीं दी ।

मैं तुम से द्रव्य चाहता हूँ ।

(एक) भूखे ने मुझ से द्रव्य माँगा ।

लक्ष्मण ने राम से कहा कि मैं आपका नौकर हूँ ।

हम में हरि मुझ से अच्छा है ।

मेरे वास्ते तू धन नहीं चाहता है ।

हे देव मैं तुझको नमस्कार करता हूं ।

हम दोनों तालाब पर गये । वहां मुंह हाथ धोये ।

तुम दोनों के मा बाप कहां हैं ?

प्रश्न।

(१) अस्मद् और युष्मद् शब्द के रूप ले जाओ।

(२) दुहरे रूप कौन २ सी विभक्ति में आते हैं उनके नाम लो।

(३) क्या अस्मद् और युष्मद् के दुहरे रूप एकसेही कारकों में आते हैं ?

पाठ २२

उकारान्त और ऋकारान्त पुलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग शब्द।

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इकारान्तही के तुल्य होते हैं केवल इतना अन्तर है कि इ, ई, ए, य, के स्थान में क्रम से उ, ऊ, ओ, व, हो जाता है।

ऋकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के कर्त्ता के सब बचनों में और कर्म के ए०ब० व द्वि०ब० में ऋ का बदल कर आर् हो जाता है परन्तु कई एक शब्द जैसे पितृ, भ्रातृ, जामातृ, देवृ, नृ, सव्येष्टृ ऐसे हैं जिन में ऋ का केवल अर् होता है और कर्त्ता के एक वचन में इनमें भी आर् ही होता है और यह र् और प्रत्यय का स् गिर जाता है इसलिये सब का कर्त्ता का एक बचन आकारान्त ही होता है॥

अपादान और सम्बन्ध कारकों का ए० ब० 'ऋ' के स्थान उ बदलने और प्रत्यय के 'अ' गिराने से होता है। अधिकरण के प्रत्यय 'इ' के पहिले ऋ का अर् हो जाता है और 'नाम्' के पहिले दीर्घ हो जाती है—

नृ शब्द में दीर्घ विकल्प से होता है—सम्बोधन का ए०ब० ऋ के स्थान में अर् करने से होता है और द्विवचन व बहुव० कर्त्ता के समान होते हैं और उकारान्त, ऋकारान्त नपुंसक शब्दों के रूप बारि के सदृश होते हैं केवल अन्तर इतना है कि इ के स्थान उ, वा ऋ और ई के स्थान ऊ वा ॠ और ए के स्थान में ओ वा अर् हो जाता है।

तरु–पु०–(पेड़)।

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०
कर्ता	तरुः	तरू	तरवः।
कर्म	तरुम्	तरू	तरून्।
करण	तरुणा	तरुभ्याम्	तरुभिः।
सम्प्रदान	तरवे	तरुभ्याम्	तरुभ्यः।
अपादान	तरोः	तरुभ्याम्	तरुभ्यः।
सम्बन्ध	तरोः	तर्वोः	तरूणाम्।
अधिकरण	तरौ	तर्वोः	तरुषु।
सम्बोधन	तरो	तरू	तरवः।

धातृ-पु०(सृष्टि करने वाला)

	ए०व०	द्वि०व०	ब०व० ।
कर्ता	धाता	धातारौ	धातारः ।
कर्म	धातारम्	धातारौ	धातॄन् ।
करण	धात्रा	धातृभ्याम्	धातृभिः ।
सम्प्रदान	धात्रे	धातृभ्याम्	धातृभ्यः ।
अपादान	धातुः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः ।
सम्बन्ध	धातुः	धात्रोः	धातॄणाम् ।
अधिकरण	धातरि	धात्रोः	धातृषु ।
सम्बोधन	धातः	धातारौ	धातारः ।

नृ इत्यादि शब्दों के रूप धातृ शब्द के समान ही होते हैं केवल प्रथम के ५ वचनों में भेद होता है सो नीचे लिखते हैं—

देवृ-पु० देवर ।

	ए०व०	द्वि०व०	ब०व० ।
कर्ता	देवा	देवरौ	देवरः ।
कर्म	देवरम्	देवरौ	

इत्यादि—

वसु-न० धन ।

	ए०व०	द्वि०व०	ब०व० ।
कर्ता व कर्म	वसु	वसुनी	वसूनि ।

करण	वसुना	वसुभ्याम्	वसुभिः ।
सम्प्रदान	वसुने	वसुभ्याम्	वसुभ्यः ।
अपादान	वसुनः	वसुभ्याम्	वसुभ्यः ।
सम्बन्ध	वसुनः	वसुनोः	वसूनाम् ।
अधिकरण	वसुनि	वसुनोः	वसुषु ।
सम्बोधन	वसो, वसु	वसुनी	वसूनि ।

इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त, विशेषण वाचक शब्द के रूप नपुंसक में करण से लेकर स्वरादि प्रत्ययों में पुल्लिङ्ग व नपुंसक दोनों प्रकार के होते हैं ।

दातृ-न० देनेवाला ।

	ए०व०	द्वि०व०	ब०व० ।
कर्ता व कर्म	दातृ	दातृणी	दातॄणि ।
करण	दातृणा, दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः ।
सम्प्रदान	दातृणे, दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः ।
अपादान	दातृणः दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः ।
सम्बन्ध	दातृणः, दातुः	दातृणोः, दात्रोः	दातॄणाम् ।
अधिकरण	दातृणि, दातरि	दातृणोः, दात्रोः	दातृषु ।
सम्बोधन	दातः वा दातृ	दातृणी	दातॄणि

शब्द पुलिङ्ग ।

ऋकारान्त व उकारान्त—

इन्दु—चान्द ।
कुरु—एक देश का नाम, (बहुवचन ही में)
तरु—पेड़, बोझा ।
त्वष्टृ-देवताओं को चेजारा, कारीगर, मेमार, खाती।
देवृ—देवर ।
धातृ—सृष्टि करनेवाला ।
नृ—आदमी, नर ।
नप्तृ—पोता, दौहिता ।
परशु—कुल्हाड़ा, फरसा ।
पशु—चौपाया ।
पांसु—रेत ।
पितृ—बाप ।
प्रभु—स्वामी, मालिक ।
बन्धु—सम्बन्धी, रिश्तेदार ।
बाहु—भुजा ।
बिन्दु—बूँद ।
भर्तृ—पति, स्वामी ।
भ्रातृ—भाई ।
मृत्यु—मौत ।
मनु-हिन्दुओं का कानून कर्त्ता, आदि पुरुष ।
रघु-(बहुवचन में) रघुराजा के वंश के ।
वक्तृ-(गुणवाचक भी) बोलनेवाला ।
वायु—हवा ।
शत्रु—बैरी ।
शम्भु—शिवदेवता ।
शिशु—बच्चा, बालक ।
श्रोतृ-(गु० वा० भी)—सुननेवाला ।
सव्येष्टृ—रथवान् ।
साधु-ऋषि, पवित्र मनुष्य (गुणवाचक) अच्छा ।
स्रष्टृ-(गुणवाचक) रचनेवाला, बनानेवाला ।

गुणवाचक शब्द ।

कर्त्ता—करनेवाला ।
गन्तृ—जानेवाला ।
दातृ—देनेवाला ।
द्रष्टृ—देखनेवाला ।
द्वेष्टृ—नफरत करनेवाला, बैरी ।
रक्षितृ—बचानेवाला ।

नपुंसकलिङ्ग ।

अवस्तु—वस्तु नहीं, झूठी वस्तु ।
अश्रु—आंसू ।
तालु—तालवा ।
मधु—शहद ।
वसु—धन ।

शब्दाः ।

अनुज्ञा-स्त्री०—इजाजत, आज्ञा ।
अप्रिय—गु०—दुप्यारा, बेस्वाद ।
अर्जुन-पु०-पाण्डवों में से एक का नाम ।
अलङ्घनीय-गु०—जिसके पार न हो सके, जिसको तोड़ न सके ।
आदर—पु०—सत्कार ।
आरोप—पु०—लगाना ।
आर्य—पु०—श्रेष्ठ मनुष्य, हिन्दुओं के बड़े बूढ़े ।

इच्छा-स्त्री०—चाह ।
उत्कण्ठा-स्त्री०-अतिइच्छा ।
उत्साह-पु०—खुशी, प्रसन्नता, उमंग, शक्ति ।
कर्ण-पु०—एक राजा का नाम ।
कलङ्क-पु०-धब्बा, दाग, चिह्न ।
कारुण्य-न०—दया, मेहरबानी ।
कृतज्ञता—स्त्री०—अहसानमन्दी ।
कृपा-स्त्री०—अनुग्रह, मेहरबानी ।

ज्ञाति—पु॰—बन्धु, रिश्ते-दार, जाति।
तूल—पु॰—रूई।
द्विज—पु॰—पहले के तीन वर्णों की जातियों में से कोई।
निर्बन्ध—पु॰—तकाज़ा, हठ
निशित—गु॰—तेज, तीखा, पैना।
पथ्य—पु॰—खाने में उचित
पात—पु॰—गिरना।
पितृव्य—पु॰—चचा, कका।
भारतवर्षीय—पु॰—हिन्दुस्तान का।
भूत—न॰—जानवर।
मद—पु॰—नशा, गुस्ताखी।
मृग—पु॰—हिरण।
रमा—स्त्री॰—लुगाई का नाम, लक्ष्मी।
लक्ष्मी—स्त्री॰—विष्णु की स्त्री, धन की देवी।
वार्ता—स्त्री॰—खबर, हाल।
विभव—पु॰—धन, जीविका।
वैकुण्ठ—न॰—विष्णु के रहने की जगह, विष्णुलोक।
लङ्घ्—१ गण—उ॰प॰ = कूदना, छलाग मारना, पार जाना, चढ़ना।

वाक्यानि।

शत्रून् शम्भुरजयत्।
रघुषु रामः श्रेष्ठः।
दुन्दुभिशङ्खललनाश्च प्रीणयति।
सिंहमहमपश्यन्तरुमारोहम्।
लङ्घामरावत्यक्रियत।
सीतात्मीयं देवरमाह्वयत्।
धाता यथेच्छति तथा मया क्रियते।
तरोर्नापतदमुद्याच्च।
कर्तुरहम्पुस्तकमलभे।

विष्णोर्भार्या लक्ष्मीः ।
तव नप्ता मामसेवत ।
मूर्खः स्वीये पादे परशुम्प्राहरत् ।
शिशुना तूलोऽदह्यत ।
रामः सर्व्वैष्ट्रावनमनीयत ।
श्रोतुः क्षमां याचते ।
जनको रथमारोहच्च रामस्य पुरतोऽगच्छत् ।

दशरथो जामातॄणामश्वानपश्यत् ।
आर्याः कुरुष्ववसन् ।
शुकस्तरावुपविशतीति माणवकोऽपश्यत् ।
आकाशः पांसुभिरभरत् ।
तनयः पितुर्वचनान्येवामन्यत ।
परशुरामः स्वीयांश्छत्रून् परशुना प्राहरत् ।

तुम से मैंने खबर अचानक सुनी ।

दशरथ राम के जङ्गल में जाने से बेहोश हो गये ।

सिपाही लड़ाई के मैद न में जीते इस सबब से राजा ने (उनको) इनाम दिया और बहुत खुश किया ।

मैंने कल तुम से कहा था कि तुम दिन में मेरे पास आना पर तुम नहीं आये—मै जानता था कि तुम अपने मकान से आ रहे हो ।

आदमी ने एक हाथी का बच्चा देखा ।

देवदत्त गुरु की आज्ञा को मानता है ।

विना गुरु की इजाज़त के कहीं नहीं जाता है ।

और (उनको) सेवा अच्छी तरह से करता है ।

चांद में धब्बे दिखलाई देते हैं ।

(१) इन्दु, तरु, परशु, पांसु, शिशु, अश्रु, तालु, मधु, वसु, भ्रातृ, श्रोतृ, वक्तृ, भर्तृ, देवृ के रूप ले जाओ ।

(२) ऋकारान्त पुलिङ्ग शब्दों की ऋ, का पहले के पांच प्रयों में बदल कर क्या होता है और ऐसे शब्द बताओ जिनमें यह नियम नहीं लगता हो ।

पाठ २३

आज्ञा—लोट् लकार—आशीर्बाद या प्रेरणा ।

परस्मैपद—प्रत्यय ।

	ए०व०	द्वि०व०	ब०व०
उ०पु०	आनि	आव	आम ।
म०पु०	(कुछ नहीं) तात्	तम्	त ।
प्र०पु०	तु, तात्	ताम्	अन्तु ।
उ०पु०	बोधानि	बोधाव	बोधाम ।
म०पु०	बोध, बोधतात्	बोधतम्	बोधत ।
प्र०पु०	बोधतु, बोधतात्	बोधताम्	बोधन्तु ।

आत्मनेपद—प्रत्यय ।

उ०पु०	ऐ	आवहै	आमहै ।
म०पु०	स्व	इथाम्	ध्वम् ।
प्र०पु०	ताम्	इताम्	अन्ताम् ।
उ०पु०	वन्दै	वन्दावहै	वन्दामहै
म०पु०	वन्दस्व	वन्देथाम्	वन्दध्वम्
प्र०पु०	वन्दताम्	वन्देताम्	वन्दन्ताम्

आशिष अर्थ में तात् प्रत्यय भी जुड़ता है।

गणों के चिन्ह इन प्रत्ययों के पहले भी जोड़े जाते हैं।

अस् और अद् धातुओं के यहां रूप लिख दिये जाते हैं और इसके बनाने की रीति दूसरी पुस्तक में लिखी जावेगी—

	ए॰ब॰	द्वि॰ब॰	ब॰ब॰।
उ॰पु॰	असानि	असाव	असाम।
म॰पु॰	एधि, स्तात्	स्तम्	स्त।
प्र॰पु॰	अस्तु, स्तात्	स्ताम्	सन्तु।
उ॰पु॰	अदानि	अदाव	अदाम।
म॰पु॰	अद्धि	अत्तम्	अत्त।
प्र॰पु॰	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु।

शब्दाः।

इङ्गल—पु॰—अंगरेज़।

अनृत—न॰—झूठ।

अभिधान—न॰—नाम।

अभिलाष—पु॰—इच्छा।

आचार—पु॰—अच्छी चाल चलन, चाल चलन।

आध्यान—न॰—ख्याल, स्मरण।

आश्रम—पु॰—कुटी, मठ।

ऋजुता—स्त्री॰—सच्चाई, ईमान्दारी, सीधापन।

ऋष्यशृङ्ग—पु॰—दशरथ का जँवाई, राम का जीजा।

कृ—(अधि-)—अधिकार देना, अधिकार होना।

खल—पु॰—खराब, दुष्ट, चुगल।

डिम्भ—पु॰—बालक।

दुर्ग–न०–किला, कठिनता
धीर––गु०––बहादुर आदमी, पण्डित।
निन्दा––स्त्री० – निन्दा।
नपुण––गु०––पूरा।
पर––गु०––बड़ा दूर।
परिणाम–पु०––फल, विकार, बदलाव।
पश्चात् – अव्यय––पीछे।
पाठ–पु० = पाठ पढ़ना, सबक।
पात्र–पु० = योग्य मनुष्य या चीज, बर्तन।
पार्थिव––पु०––राजा।
पिण्ड––पु०––पिण्ड।
पितृ–पु० (द्विव० में)–मा, बाप।
पूज्य–गु०–पूजने के योग्य।
प्रकर्ष–गु० = बड़ाई, तेजी।
प्रतिक्रिया–स्त्री० = बदला इलाज।
प्रश्रय––पु० = आदर सम्मान।

बहु––गु० = बहुत।
भद्र––न० = सच्छा होना, लाभ, कल्याण।
मदन – पु० = कामदेव।
मन्द – गु० = सहज, आहिस्ता।
रस – पु० = रस, मजा।
राज्ञी – स्त्री० = रानी।
रे रे––नीच–सम्बोधन = ओ! ओ!।
लोभ––पु० = लालच।
वंश––पु० = कुल।
वत्स––पु० = बालक, बछड़ा।
वयस्य–पु० = साथी, मित्र।
विकास––पु० = खिलना, बढ़ना।
विद्या–स्त्री० = इल्म, ज्ञान।
विवर–न० = गुफा, छेद।
शङ्का–स्त्री० = सन्देह, शक
शम्बूक–पु० = एक आदमी का नाम, शंख।

शान्ता–स्त्री० = नाम, राम की बहिन।
शूद्र—पु०—सब से नीच जाति।
शौर्य–न०–बहादुरी।
सत्व–न०–सच्चाई, भलाई।
सन्निधि–पु०–आस पास।
सुजन–पु०–अच्छा मनुष्य।
सूनु—पु०—बेटा।
स्वर्णकार–पु०–सोनार।
सोम—पु०–एक बेलि जो यज्ञ में काम आती है या उसका रस।

धातु।

जि–(वि-)–आ०प०—जीतना।
धी (केवल कर्मवाच्य) अभि के साथ–करना, नाम लेना।
पद् (उद्-)–४ गण आ०–पैदा होना, (प्रति-)–तारीफ करना, बढ़ना।
प्रच्छ् [पृच्छ्] (आ-)–आ०–सीख मांगना, पूछना।
भू-(अनु-)—जानना।
मद्–(प्र-)—भूलना, गिरना, असावधानी।
मन्–४ ग०–आ०—सोचना, मानना, जानना।
लम्ब्–१ ग०–आ०–(अव-) मानना, आसरा लेना।
वृत्–(प्र-)–काम में लगना।
श्रम् (वि-)–आराम करना।
स्था–(अनु-)—करना, अनुकूल करना।

वाक्यानि।

ऋष्यशृङ्गो धीरोऽस्त्विति दशरथोऽवदत्।
तव भ्रातुरभिधानं कथय। पार्थिवस्यारयः कम्पन्ताम्।

अनृतम्मा वद । आङ्गलानां शासनं सदा तिष्ठतु ।
ईश्वरो राज्ञीं रक्षतु । डिम्भाः पाठशालाङ्गच्छन्तु ।
पाठं शिक्षन्ताञ्च । आम्रं स्वादस्व ।
वयम्बुधानामुपदेशाननुगच्छाम ।
त्वमाचार्यमापृच्छस्व पश्चात्पाठशालाया गृहङ्गच्छ ।
देवास्तुष्यन्तु । जयदत्तो देवदत्तश्च मा जल्पताम् ।
संस्कृतस्याध्ययनमारभस्व । जनानां शत्रव इत्थं नश्यन्तु ।
चोरा गृहे मा विशन्तु ।
चाण्डालो ब्राह्मणान् मा स्पृशतु । सोमम्पिवाम ।
स्वीयवंशस्य सुकृतानि स्मर ।
सत्यं जयतु नानृतम् । ईश्वरस्यादेशमनुमन्यामहे ।
इन्दोर्बिम्बम्पश्य न रवेः । चन्द्रः प्रकाशताम् ।
युवामत्र विश्राम्यतम् । खला म्रियन्ताम् ।

तुम दोनों बैरियों के साथ लड़ो । तुम्हारी जीत हो ।
जल को छोड़ घी को पी । बालकों गुरु को प्रणाम करो ।
तुम दोनों स्वामी की सेवा करो ।
प्रजा के सुख के वास्ते राजा सदा उद्योग करते रहैं ।
मैं दुःख को किस तरह से सहूं ।
अच्छे चाल चलन के वास्ते हम यत्न करें ।
हमारा राजा जीते । नौकर जल लाओ ।
तुम नाराज मत हो । ईश्वर आप को खुश रक्खे ।

आप बहुत काल तक जीवो। हमारी इच्छा पूर्ण हो। हमारे साथ तुम भी चलो—चलो आज बाग में सैर करें।

पाठ २४

इकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त, ऋकारान्त—

स्त्रीलिङ्ग शब्दाः।

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप ईकारान्त के समान होते हैं केवल इ, ई, और य्, के स्थान में उ, ऊ, और व् हो जाता है कर्त्ता के एकबचन का प्रत्यय स्, इसमें नहीं गिरता।

इकारान्त, व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं—केवल कर्म के बहुबचन और करण के एकबचन में भेद है। सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, के एकबचन में विकल्प से ईकारान्त, व ऊकारान्त शब्दों के समान भी रूप होते हैं।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द प्रायः ऐसे हैं जो कि सम्बन्ध के अर्थ को लिये हुए हैं जैसे—स्वसृ, मातृ, दुहितृ, ननान्दृ और यातृ—इनमें स्वसृ के रूप तो "नप्तृ" व "गन्तृ" पुल्लिङ्ग के समान और शेषों के पितृ के समान होते हैं॥

ऋकारान्त गुणबाचक शब्द जैसे—श्रोतृ, गन्तृ इत्यादि का स्त्रीलिङ्ग ई, के जोड़ने से बनता है, जैसे—श्रोत्री, गन्त्री इत्यादि—

वधू ।

	ए० ब०	द्वि० व०	ब० ब०
कर्त्ता	वधूः	वध्वौ	वध्वः
कर्म	वधूम्	वध्वौ	वधूः
करण	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
सम्प्रदान	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
अपादान	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
सम्बन्ध	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
अधिकरण	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	वधु	वध्वौ	वध्वः

कान्ति ।

कर्ता	कान्तिः	कान्ती	कान्तयः
कर्म	कान्तिम्	कान्ती	कान्तीः
करण	कान्त्या	कान्तिभ्याम्	कान्तिभिः
सम्प्रदान	कान्तये, कान्त्यै	कान्तिभ्याम्	कान्तिभ्यः
अपादान	कान्तेः, कान्त्याः	कान्तिभ्याम्	कान्तिभ्यः
सम्बन्ध	कान्तेः, कान्त्याः	कान्त्योः	कान्तीनाम्
अधिकरण	कान्तौ, कान्त्याम्	कान्त्योः	कान्तिषु
सम्बोधन	कान्ते	कान्ती	कान्तयः

खर्जु-खिजूर ।

कर्ता	खर्जुः	खर्जू	खर्जवः
कर्म	खर्जुम्		खर्जूः
करण	खर्ज्वा		खर्जुभिः
सम्प्रदान	खर्जवे, खर्ज्वै	खर्जुभ्याम्	खर्जुभ्यः
अपादान	खर्जोः, खर्ज्वाः		खर्जुभ्यः
सम्बन्ध	खर्जोः, खर्ज्वाः	खर्ज्वोः	खर्जूनाम्
अधिकरण	खर्जौ, खर्ज्वाम्		खर्जुषु
सम्बोधन	खर्जो	खर्जू	खर्जवः

यातृ ।

कर्ता	याता	यातरौ	यातरः
कर्म	यातरम्		यातॄः
करण	यात्रा		यातृभिः
सम्प्रदान	यात्रे	यातृभ्याम्	यातृभ्यः
अपादान	यातुः		
सम्बन्ध	यातुः	यात्रोः	यातॄणाम्
अधिकरण	यातरि		यातृषु
सम्बोधन	यातः	यातरौ	यातरः

स्त्रीलिङ्गशब्दाः ।

आङ्गलभूमि—इङ्गलैण्ड ।
अनुरक्ति—प्यार ।
कान्ति—चमक, प्रकाश ।
कीर्ति—यश, भलाई, नेकी शुहरत ।
कृति—काम ।
खर्जु—खिजूर, धतूरा ।
गति—चाल, चलने का ढंग ।
जाति—ज़ात ।
दुष्कृति—बुरा काम ।
दुहितृ-बेटी ।
धृति-बहादुरी, धीरज ।
धेनु-गाय ।
ननान्दृ—ननद ।
नीति—राज्यनीति ।
प्रकृति—स्वभाव ।
प्रतिकृति-तसवीर, नकल ।
प्रीति-स्नेह, मुहब्बत ।
बुद्धि—अक़ल ।
भक्ति-स्नेह, सेवा ।
भूति-अभ्युदय, इक़बाल ।
भूमि-ज़मीन, पृथ्वी, धरती ।
मति—समझ ।
मातृ—माता, मा ।
मुक्ति—मोक्ष ।
मूर्ति—मूरती, शरीर ।
यातृ-दौरानी या जिठानी ।
रति-खुशी, कामदेव की स्त्री, प्रीति ।
रात्रि—रात ।
वधू—बेटे की बहू ।
वसति—रहने की जगह, वस्ती ।
वृत्ति-काम, पेशा, जीविका ।
श्रुति-सुनना, पुस्तक, वेद, कान ।
श्वश्रू—सासू, सास ।
सुकृति—अच्छा काम ।
सृष्टि-संसार, रचना ।
स्तुति—प्रशंसा, तारीफ़ ।
स्मृति—याद, हिन्दुओं के कानून की पुस्तक ।
स्वसृ—बहिन ।

शब्दाः ।

पङ्क–पु०–कीचड़ ।
पीड़ा–स्त्री०–दुःख, दरद ।
प्रातर्–अव्यय = सबेरा, तड़का, सूर्योदय ।
मद–पु०–घमण्ड, गुस्ताखी।
मूल—न०—जड़, पैर ।
यज्ञिय–गु०–यज्ञ से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु ।
राजपुरुष–पु०—राजा का आदमी या नौकर ।
समर्थ–गु०–लायक, शक्तिमान ।
सम्यक्–पु०–अच्छा, हां ।
सर्प–पु०–साँप ।
सारमेय–पु०–कुत्ता ।

धातु ।

धृ—१ गण–उ०प०–(उद्-) बचाना, छुड़ाना, उठाना।
नी–(वि-)–पढ़ाना, शिक्षित करना, समझाना ।
भज्—१ग०–उ०प०–आना जाना, भजना, सेवा करना।
भाष्—(प्रति-)–उत्तर देना।
मूर्छ्–(-प०)–मूर्छा में होना, बेहोश होना ।
रुह्—(आ-) = चढ़ना ।
वृत्—(प्रति और नि-)–उलटा लौटना, आना ।
हृ—१ ग–उ०प०–(परि-)–निकलना, अलग होना, छोड़ना ।

वाक्यानि ।

सीता ऋष्यशृङ्गं ननान्दुर्वल्लभं नमत्विति सीतायाः श्वशूरवदत् ।

शम्बूको वृत्त्या कृषीवलो ऽस्ति ।
देवदत्तस्य कृतयः सुष्ठ्ठा संस्ततः कीर्तीरलभत ।
रामो मातृभ्यः सदारोचत ।
नृपस्य सचिवो नीतौ निपुणो ऽस्ति ।
स्मृतिषु मनोः श्रेष्ठास्ति । रात्र्यां निशाचरा अटन्ति ।
त्वस्मात्तव प्रतिकृतिं यच्छ । बुधा मुक्तये रामं भजन्ते ।
नरो भूतिमिच्छन्ति । खर्जुमहमपश्यम् ।
योधानाम्धृत्या भूपोऽजयत् । रामः स्वीयां स्वसारमपश्यत् ।
मम स्तुतिभिर्देवा अभ्यनन्दन् । जना वसत्यां वसन्ति ।

अच्छे आदमियों का यश संसार में फैलता है ।
दोस्त दुःख में अपने दोस्त को नहीं छोड़ते ।
देवदत्त प्यार से अपने पिता से मिलता है ।
स्वर्गलोग से देवता आये । बुरे कामों से दुःख होता है ।
जमीन पर आदमी बैठ गये ।
जवाई ऋष्यशृङ्ग के स्थान पर राम की मातायें गईं ।
ननद और देवरानियों को सीता ने पूछा और फिर अपने पिता के घर गई ।
रघु के बाप ने वशिष्ठ की गाय को बचाया ।
नारायण के कामों में हरि की प्रीति नहीं है ।
अक्लमन्द आदमी मूर्खों की स्तुति या निन्दा को नहीं गिनते हैं ।

राम ने माता पिता को पिण्ड दिये ।
चांद की चमक देखता हूँ ।
मेरी समझ में बुरे कामों का फल बुरा और अच्छे कामों का फल अच्छा होता है।

पाठ २५

कृदन्त प्रत्यय ।

निष्ठा या भूतकालसूचक शब्द, धातु में "त" लगाने से बनते हैं और इनका स्त्रीलिङ्ग "आ" के जोड़ने से बनता है । जैसे आप्=पाना, आप्त=पाया गया, आप्ता=पाई गई ।

इससें बहुत से शब्द बेक़ायदे बनते हैं इसलिये उनके निष्ठा के रूप नीचे लिखे जाते हैं—

अद्—खाना	जग्ध ।	क्षम्—माफ करना	क्षान्त ।
कम्—चाहना, प्यार करना	कान्त ।	क्षुभ्—उफनना	क्षुब्ध ।
कृ—करना	कृत ।	खन्—खोदना	खात ।
कृष्—हल जोतना	कृष्ट ।	गम्—जाना	गत ।
क्रम्—जानना	क्रान्त ।	गुह्—छिपना	गूढ़ ।
क्रुध्—खफा होना	क्रुद्ध ।	जन्—पैदा होना	जात ।
क्लम्—थकना	क्लान्त ।	तुष्—खुश होना	तुष्ट ।
		त्यज्—छोड़ना	त्यक्त ।

दह्—जलना	दग्ध ।
दा—देना	दत्त ।
दिश्—दिखलाना	दिष्ट ।
दुष्—खराब होना	दुष्ट ।
दुह्—दुहना	दुग्ध ।
दृश्—देखना	दृष्ट ।
धा—रखना	हित ।
धृष्—घमण्ड में होना सामना करना	धृष्ट ।
नम्—झुकना	नत ।
नश्—मरना	नष्ट ।
नी—लेजाना	नीत ।
पच्—रसोई बनाना	पक्व ।
पद्—जाना	पन्न ।
पा—पीना	पीत ।
पुष्—पालना	पुष्ट ।
प्रच्छ्—पूछना	पृष्ट ।
बन्ध्—बाँधना	बद्ध ।
भज्—पूजना	भक्त ।
मन्—सोचना	मत ।
मस्ज-डूबना	मग्न ।
मुच्—छोड़ना	मुक्त ।
मुह्—मूर्खहोना	मूढ़, मुग्ध
मृ—मरना	मृत ।
यज्—पूजना	इष्ट ।
युज्—जोड़ना	युक्त ।
रभ्—काम में लगना	रब्ध ।
रम्—खेलना	रत ।
रुह्—उगना, बढ़ना	रूढ़ ।
लभ्—पाना	लब्ध ।
लुभ्—ललचाना	लुब्ध ।
वच्—बोलना	उक्त ।
वद्—बोलना	उदित ।
वप्—बोना	उप्त ।
वह्—लेजाना	ऊढ़ ।
विश्—भीतर जाना	विष्ट ।
वृत्—होना	वृत्त ।
शम्—चुपचापहोना	शान्त ।
शुष्—सूखना	शुष्क ।
श्लिष्—मिलना	श्लिष्ट ।
सह्—सहना, बरदाश्त करना	सोढ़ ।
सृज्—बनाना, छोड़ना	सृष्ट ।
स्पृश्—छूना	स्पृष्ट ।
हन्—मारना	हत ।
हृ—हरना	हृत ।

जब किसी काम करने की इच्छा प्रगट करनी होती है तब धातु में तुम् * लगाया जाता है जैसे कृ—करना, कर्तुम्—करने के निमित्त, और यह अव्यय है।

जब कि एक काम करके दूसरा काम किया जाता है तो जौन सा काम हो चुका है उसके वास्ते (अर्थात् जहाँ हिन्दी में करके बोला जाता है उस जगह) संस्कृत में धातु के आगे 'त्वा' लगाते हैं जैसे कृ का कृत्वा—

जब धातु के पहिले उपसर्ग रहता है तब 'त्वा' के स्थान में य लगाया जाता है जैसे 'अवगम्य' जान करके, और जब उपसर्ग सहित धातु ह्रस्व स्वरान्त होता है तब य, के पहिले त् और जोड़ा जाता है जैसे 'अनुकृत्य'—

इन प्रत्ययों के पहिले किसी धातु में इ और जोड़ी जाती है सामान्यत: नियम यह है कि ह्रस्व स्वरान्त धातुओं के 'इ' नहीं जोड़ी जाती है।

धातुओं में और कुछ बदलाव भी होता है सो दूसरी पुस्तक में लिखा जायगा।

काम के जारी रखने के वास्ते धातु के आगे गण का चिन्ह लगा कर परस्मैपद में तो 'अत्' और आत्मनेपद में 'मान' जोड़ा जाता है—या लट् लकार के प्रथम पुरुष के बहुवचन के रूप में इस लकार के प्रत्यय के

* इस प्रत्यय के पहिले धातु के अन्त का स्वर व उपधा का ह्रस्व स्वर को गुण हो जाता है।

स्थान में ऊपर के प्रत्यय के लगाने से बन जाता है इस-को संस्कृत में शतृ वा शानच् प्रत्यय कहते हैं जैसे-गच्छत्, कम्पमान ॥

शब्दाः ।

अखिल—गु० = कुल, सब।	कूप—पु० = कूवां।
अभिषेक-पु० = राजतिलक होना।	खर्जुर-पु० = खिजूर, बिच्छू।
उटज-पु० = झोपड़ा, कुटी।	घट—पु० = घड़ा।
उद्यत-यम् का निष्ठा, उद् के साथ = तैयार।	जय—पु० = जीत।
उपाय-पु०-इलाज, जतन।	दरिद्र-गु० = गरीब, दीन।
कारागृह-न० = जेलखाना।	दुग्ध—न० = दूध।
कुम्भकार—पु० = कुम्हार।	भानु—पु० = सूर्य।
	विजय—पु० = जीत।
	श्वान—पु० = कुत्ता।

धातु ।

अस्—(फेंकना) (निर्-)-बखेरना, छितराना, निकालना।
खन्—(उद्-)—खोदना ।
दिश्—(निर्-)—जाहिर करना, कहना।
धा—(रखना)—(निर-) रखना, स्थापन करना, निश्चय करना।

वाक्यानि ।

चोरैरखिलं धनमह्रियतेति श्रुत्वा देवदत्तो राजपुरुषं समयागच्छदवदच्च। अहं दरिद्रः कृतोऽस्मि स्तेनैः।

राजपुरुषश्चोरानाह्वयद्दण्डयच्च ।
तत्पश्चाच्चोरा देवदत्ताय धनमयच्छन् ।
नद्या जलमानेतुं गच्छामि । अग्निनोटजो दग्धः ।
ततो मया क्लेशस्सोढः । मया दुग्धम्पीतम् ।
त्वया धनं लब्धम् । तव कृपया मया भूतिर्लब्धा ।
कूपं गत्वा मुखम्प्राक्षालयम् । मया सूर्यो दृष्टः ।
कृषीवलेनान्नमुप्तम् । व्याघ्रेण मृगो हतः ।
हरिणा कथितां वार्तां श्रुत्वा रामो ऽमुह्यत् ।
नृपेण बहवस्तडागाः कूपाश्चोत्खाताः ।
एवमुदितो हरिर्दरिद्राय ब्राह्मणाय धनमयच्छत् ।
गृहं गन्तुमिच्छामि । खर्जूरमारोढुं मतिर्जाता ।
वृषैः क्षेत्राणि कृष्टानि ।

शाम के वक्त बाग़ में सैर करने को चलो ।
फूल लाने को मैं बाग़ में गया ।
पाठशाला से आकर फिर थोड़ी देर अपना मन बहला
कर पाठ को याद करो ।
खराब मनुष्यों से मैं सताया गया ।
गुरु ने मुझ से पाठ पूछा । मुझ को विद्या से धन मिला ।
बैल रथ में जोड़े गये । खराब मनुष्य जेलखाने में भेजे गये ।
तुम्हारी कही हुई बात मुझ को याद है ।

परीक्षा ।

(१) लोट् लकार के परस्मै व आत्मनेपद के प्रत्यय कहो।

(२) वद्, कथ्, गम्, (अव-), हृ, पा, दा, चल्, पच्, रभ्, के लोट् लकार के रूप ले जाओ ।

(३) इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग व पुल्लिङ्ग शब्दों के रूपों में किन २ कारकों में भेद है सो लिखो ।

(४) कृति, खर्जु, दुहितृ, स्वसृ, रात्रि, धेनु, मुक्ति, श्वश्रू, यातृ और धृति के रूप लो ।

(५) त, तुम्, त्वा, ये प्रत्यय कब काम में आते हैं ?—और ये किस तरह से लगाये जाते हैं लिखो ।

(६) दूसरे प्रश्न में जो धातु लिखे हैं उनके रूप पाचवें प्रश्न के सब प्रत्यय लगा कर बनाओ ।

पाठ २६

व्यञ्जनान्त व हलन्त शब्द ।

प्रत्ययों के लगाने से पहिले व्यञ्जनान्त शब्दों के स्वरूप में जो बदलाव होता है वह आगे लिखा जायगा ।

(१) कई हलन्त शब्द ऐसे हैं जिनके स्वरूप में कुछ अन्तर नहीं होता और उनके स्त्री, व पुल्लिङ्ग, के रूपों में भी कुछ भेद नहीं है जैसे—जलमुच्, वणिज्, स्रज्, इत्यादि ।

(२) वदन्त व मदन्त पुल्लिङ्ग शब्दों में प्रथम पांच प्रत्यय लगाने से पहिले, अन्त के त् के पहिले न् और जोड़ा जाता है—और इस न् से पहिले का "अ" प्रथमा के एकवचन में दीर्घ हो जाता है।

शतृ प्रत्ययान्त शब्दों के कर्त्ता के एकवचन में 'अ' दीर्घ नहीं होता है और सब नियम (२) के अनुसार होते हैं–जैसे पश्यत् का पश्यन्–कर्ता का एकवचन।

(३) व्यञ्जनान्त नपुंसक शब्दों के कर्ता, कर्म व सम्बोधन के प्रत्यय स्वरान्त के समान होते हैं।

यदि अन्त का व्यञ्जन अनुनासिक या अन्तस्थ न हो तो उसके पहले बहुवचन में 'न्' और जुड़ता है और शेष कारकों में पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

(४) मदन्त, और वदन्त गुणवाचक शब्दों के और शतृ प्रत्ययान्त शब्दों के स्त्रीलिङ्ग 'ई' जोड़ने से बनते हैं–परन्तु 'ई' जोड़ने से पहले भ्वादि, दिवादि, व चुरादि गणों के धातुओं के शतृ के 'त्' के पहले 'न्' और जोड़ा जाता है और तुदादि गण के धातुओं में विकल्प करके—इस प्रकार से इसका रूप नपुंसक शब्दों के कर्ता के द्विवचन के समान हो जाता है॥

भूभृत्—पुल्लिङ्ग ।

	ए॰ब	द्वि॰	ब॰ब॰
कर्ता व सम्बो॰	भूभृत् *	भूभृतौ	भूभृतः ।
कर्म	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः ।
करण	भूभृता	† भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः ।
सम्प्रदान	भूभृते		भूभृद्भ्यः ।
अपादान	भूभृतः		
सम्बन्ध	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम् ।
अधिकरण	भूभृति		भूभृत्सु ।

वाच्-स्त्रीलिङ्ग ।

	ए॰ब	द्वि॰ब॰	ब॰ब॰
कर्ता व सम्बो॰	वाक् ‡	वाचौ	वाचः ।
कर्म	वाचम्	वाचौ	वाचः ।

---

* शब्द के अन्त में दो व्यञ्जन आने से पिछला लोप हो जाता है जैसे भूभृत् का स् हो गया।

† जब दो व्यञ्जन मिलते हैं तो वे दोनों एक प्रयत्न के उसही प्रयत्न का अल्पप्राण बदल जाता है जिस प्रयत्न का कि अगला व्यञ्जन होता है जैसे भूभृत्+भ्याम्, इसमें त् का घोष प्रयत्न का अल्पप्राण द् हो जायगा जैसे भूभृद्भ्याम्।

‡ च् या ज् अघोष व्यञ्जनों से पहले तो 'क' और अनुनासिक व अन्तस्थ अक्षरों को छोड़ कर घोष व्यञ्जनों के पहले 'ग्' हो जाते हैं। शब्द के अन्त में महाप्राण के स्थान में उसही का अल्पप्राण हो जाता है॥

करण	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
सम्प्रदान	वाचे		वाग्भ्यः
अपादान	वाचः		
सम्बन्ध	वाचः	वाचोः	वाचाम्
अधिकरण	वाचि		वाक्षु

गुणवत्-पुल्लिङ्ग ।

	ए० व०	द्वि० व	व० व०
कर्ता	गुणवान्	गुणवन्तौ	गुणवन्तः
कर्म	गुणवन्तम्	गुणवन्तौ	

और शेष रूप भूभृत् की तरह हो जाँयगे—

नपुंसक-जगत् ।

कर्ता, कर्म, सम्बो०	जगत्	जगती	जगन्ति
,, ,, ,,	पश्यत्	पश्यन्ती	पश्यन्ति

शब्दाः ।

आपद्—स्त्री०—विपता ।
आयुष्मत्—पु०—बहुत दिनों जीनेवाला ।
कीर्तिमत्—पु०—कीर्तिवाला, यशवाला ।
गुणवत्—पु०—गुणवाला ।
जगत्—न०—संसार, दुनियां ।
दृशद्—स्त्री०—पत्थर ।
धनवत्—पु० = धनवान ।
धीमत्—पु०—बुद्धिमान ।

परवत्--गु०—पराधीन ।
प्रतिपद्—स्त्री०—पड़वा, प्रतिपदा ।
भगवत्--गु०--बड़ा, ईश्वर।
भवत्–सर्वनाम–आप ।
भूभृत्–पु०—राजा, पहाड़।
मरुत्–पु०—हवा, या उसका देवता ।
मूर्तिमत्–गु०–मूर्तीवाला।
मृद्—स्त्री०—मिट्टी ।
वाच्–स्त्री०-बोली, बात ।
विद्युत्–स्त्री०—बिजली ।

विपद्–स्त्री०–आपदा, दुःख
वियत्—न०—आकाश ।
शरद्—स्त्री०—बरसात के बाद का मौसिम।
श्रीमत्–गु०—बड़ा, इक्बालमन्द ।
सम्पद्–स्त्री०—धन, इक्बाल, सम्पति ।
सुखभाज्–गु०—खुश, जो आनन्दपूर्वक रहता हो।
सुहृद्—पु०—मित्र ।
हुतभुज्–पु०--आग, आँच ।

अकाल–पु०–(अ + काल--समय)—बिना समय ।
अच्छ–पु०–अच्छा, साफ़ ।
अधमर्ण–पु०–ऋणी, करजदार ।
अन्तःकरण—न०—हृदय, दिल, मन ।
अर्थ्—(अभि–)—अरज करना, प्रार्थना करना ।
इह—अव्यय—यहाँ ।

ईर्—(उप्–)—छोड़ना ।
उद्भव—पु०—जन्म ।
उद्धृत–(हृ का निष्ठा–उद् के साथ उखाड़ा हुआ, उठाया हुआ ।
उद्धत–(उद् + हन् का निष्ठा) घमण्डी, मग़रूर ।
कार्तिक—पु० = महीने का नाम, कातिक ।
चञ्चल–गु०–थोड़े काल ठहरनेवाला ।

चैत्र–पु० = चैत, महीने का नाम ।

जीवित—न०–जीव, जीना, जान ।

नल–पु०—एक राजा का नाम ।

निषण्ण–(सद् का निष्ठा नि के साथ)–बैठा हुआ ।

प्राण–पु०–बहुबचन = जीव, जान, स्वास ।

बहुशस्–अव्यय—बहुधा, बहुत दशाओं में, कई बेर ।

महोत्सव–पु०–खुशी, मेला, धूमधाम ।

मृदु—गु०–नरम, मुलायम ।

वासुदेव—पु०–देवता, कृष्ण का नाम ।

विकार—पु०—स्वरूप का बदलना ।

विद्–४–आ०प० = होना ।

विहित–(वि + धा का निष्ठा) कहा गया, वर्णन किया गया ।

वृन्त—न०—पत्ते या फल की डण्डल, नाका ।

श्लथ—गु०—ढीला ।

सन्देह—पु०–शक ।

सर्वथा–अव्यय–कुल, सब प्रकार, बिलकुल ।

होतृ–पु०–यज्ञकरानेवाला ।

शतृप्रत्ययान्त ।

कुर्वत् – करता हुआ ।

गच्छत् – जाता हुआ ।

चोदयत् – हाँकता हुआ, आज्ञा करता हुआ ।

जयत् – जीतता हुआ ।

पश्यत् – देखता हुआ ।

वसत् – रहता हुआ ।

शासत्–राज्य करता हुआ ।

सत् – (अस् का शतृ प्रत्ययान्त) होता हुआ ।

शानच् प्रत्ययान्त—

पचमानः—गु०—पकाता हुआ ।

वर्तमान—गु०—होता हुआ ।

वाक्य ।

नारायणः परवान्नास्ति ।

मृगाश्शतस्वरण्य * उपविशन्तु ।

देवानां प्रभुरिन्द्रः ।

कार्तिकस्य प्रतिपदि महोत्सवो वर्तते ।

कुमारं गच्छन्तमपश्यम् ।

सम्पदि बहवो जनमनुसरन्ति ।

सुहृद्भिर्भूभृद्बलवानभवत् ।

वियति चञ्चला विद्युत् प्रकाशते ।

चैत्रस्य प्रतिपदि महोत्सवो भवति ।

धनेनतु धीमांल्लोके धनाङ्गवति पण्डितः ।

बहुशो मूर्खा अपि धनवन्तो भवन्ति ।

जगति सम्पदा बिना जीवितुमिच्छा नास्ति ।

अधमर्णो जगति सुखभाग्न भवति ।

शरद्दतौ हंसा उत्पतन्ति ।

विपदिनरोमित्रैर्मुच्यते ।

कृष्णो जनान् गच्छन्तोऽपश्यत् ।

यतयो जगदरण्य मिवमन्यन्ते ।

* पदान्त ए के स्थान में जब 'अय्' होता है तो इस अय्' का 'य्' गिर जाता है ।

धीमता नारायणेन ग्रन्थः प्रणीयते ।
रामोऽयोध्यायां सुखभागवसत् ।
देवदत्तमश्वांश्चोदयन्तमपश्यम् ।
भवान् सन्देहयुक्तः कथं न्यषोदत् ।
सम्पद इच्छाविपदः कारणमस्ति ।

धीमान् मृदुवाचा जगदाह्लादयति ।
जीवितं विद्युदिव चञ्चलमस्ति ।
अस्माकं भूभृदायुष्मान् श्रीमान् सुखभाक् च वसतु ।
मृदृशदृगिर्यादयः पृथिव्या विकाराः सन्ति ।

बुरों से गुणवान् को भी डर लगता है ।
आकाश में बादल व बिजली छा रहे हैं ।
बुद्धिमान मनुष्य संसार में कीर्तिवाले होते हैं ।
जीतनेवाले शत्रुओं को मत भूलो ।
आप की आज्ञा से नौकर गांव को गया ।
नल ने अग्नि से जला हुआ जङ्गल देखा ।
कवियों की बोली में मीठापना है ।
थोड़े दिन हुए जब देवदत्त यशवाला हुआ था ।

प्रश्न ।

(१) वदन्त, और मदन्त शब्दों के रूप में साधारण व्यञ्जनान्त शब्दों के रूप में क्या भेद है ?

(२) शतृ व शानच् प्रत्ययान्त शब्द, व वदन्त व मदन्त गुणवाचक शब्दों के स्त्रीलिङ्ग वा नपुंसक का द्विवचन किस प्रकार से बनता है सो लिखो—

(३) शरद्, परवत्, दृशद्, स्त्री, सुहृद्, मरुत्—हुतभुज्-पु०, वियत्, जगत्, मूर्तिमत्-न० के रूप लो।

पाठ २७

सर्वनाम।

संस्कृत में जो सर्वनाम हैं वह नीचे लिखे जाते हैं—

सर्व—सब।	इतर—दूसरा।	अदस्—वह।
विश्व—सब।	त्वत्—दूसरा।	एक—एक।
उभ—दो।	त्व—दूसरा।	द्वि—दो।
उभय—दोनों।	नेम—आधा।	युष्मद्—तुम।
कतर *—दो में से कौन सा।	सम—सब, पूरा।	अस्मद्—मैं।
कतम *—बहुत में से कौन सा।	सिम—पूरा, कुल।	भवत्—आप।
अन्य—दूसरा।	त्यद्—वह।	किम्—क्या।
अन्यतर—कोई एक।	यद्—जो।	पूर्व—पूरब, पहला।
	एतद्—यह।	पर—पिछला।
	इदम्—वह या यह।	अवर—पछां, पिछला।

* संस्कृत व्याकरण के कायदे से डतर या डतम प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं वे सर्वनाम होते हैं उनके दो उदाहरण ही केवल ऊपर की सूची में दिये गये हैं।

दक्षिण—दक्खिन, दहिना । उत्तर—उत्तर, पीछे नीचे ।	अपर—और, नीचे अधर—पक्षा, नीचे स्व—अपना ।	अन्तर—बाहर का नीचे का कपड़ा ।

(१) सिवाय नीचे लिखे पाँच कारकों के अकारान्त सर्वनाम शब्दों के रूप अकारान्त शब्दों की तरह होते हैं और इन पाँच कारकों में जो बिभक्तियां बदल कर लगती हैं सो आगे लिखी जाती हैं ।

कर्ता—	बहुबचन —	जिसमें प्रत्यय		ई	लगता है।
सम्प्रदान—	एकबचन	,,	,,	स्मै	,,
अपादान—	,,	,,	,,	स्मात्	,,
सम्बन्ध—	बहुबचन	,,	,,	इषाम्	,,
अधिकरण—	एकबचन	,,	,,	स्मिन्	,,

जैसे सर्व का कर्ता —	ब॰ब॰	सर्वे ।
सम्प्रदान	ए॰ब॰	सर्वस्मै ।
अपादान	,,	सर्वस्मात् ।
सम्बन्ध	ब॰ब॰	सर्वेषाम् ।
अधिकरण	ए॰ब॰	सर्वस्मिन् ।

और शेष रूप नर शब्द के तुल्य होंगे ।

(२) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग सर्वनामों में जिन प्रत्ययों में भेद होता है वे तो नीचे लिखे हैं और इन सब प्र-

त्ययों के पहले 'साम्' के सिवाय 'आ' को ह्रस्व कर देते हैं और शेष आकारान्त शब्दों के से रूप होते हैं।

सम्प्रदान के ए० व०	स्यै	लगता है।
अपादान व सम्बन्ध के ए० व०	स्यास्	,, ,,
सम्बन्ध के ब० व० में	साम्	,, ,,
अधिकरण के ए० व० में	स्याम्	,, ,,

जैसे सर्वा का संप्रदान का ए० व० सर्वस्यै।

और अपादान व सम्बन्ध का ए० व० सर्वस्याः।

सम्बन्ध का ... ... ब० व० सर्वासाम्।

अधिकरण का ... ... ए० व० सर्वस्याम्।

नपुंसक में रूप अकारान्त शब्दों के ही समान होते हैं।

(३) तद्, एतद्, यद्, और किम् इनके पुल्लिङ्ग के रूप ऐसेही होते हैं जैसे कि 'त,' 'एत,' 'य,' और 'क,' के क्रम से होते हैं अर्थात् अकारान्त सर्वनाम के समान और स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त सर्वनाम के समान जैसे कि 'ता,' 'एता,' 'या,' और का के होते हैं-और तद् और एतद् के कर्ता के रूप एकवचन पुल्लिङ्ग में तो सः और एषः * और स्त्रीलिङ्ग में सा, और एषा होते हैं ॥

* सः और एषः के विसर्ग जब यह किसी वाक्य में व्यञ्जन से पहिले आवें तो गिर जाते हैं।

नपुंसक में इनके रूप जैसे होते हैं वे ये हैं।

	ए०ब	द्वि०	ब०००
कर्ता व कर्म	तद्	ते	तानि।
	एतद्	एते	एतानि।
	यद्	ये	यानि।
	किम्	के	कानि।

एत—के कर्म में और करण के एकबचन मे और सम्बन्ध और अधिकरण के द्विब० में एत के स्थान में विकल्प से तीनों लिङ्गों में एन, आता है।

पुल्लिङ्ग।

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०
कर्म—	एतम् या एनम्	एतौ या एनौ	एतान् या एनान्
करण—	एतेन या एनेन		
सम्बन्ध व अधिकरण—		एतयोः या एनयोः	

स्त्रीलिङ्ग।

कर्म—	एताम् व एनाम्	एते या एने	एताः या एनाः
करण—	एतया या एनया		
सम्बन्ध व अधिकरण—		एतयोः या एनयोः	

नपुंसकलिङ्ग।

कर्म—एतद् या एनद् एते या एने एतानि या एनानि

त्यदादि शब्दों के सम्बोधन के रूप नहीं होते—

अदस् और इदम् के रूप बेकायदे होते हैं सो नीचे लिखे जाते हैं।

अदस् पुल्लिङ्ग।

	ए०ब	द्वि०	ब०
कर्ता	असौ	अमू	अमी
कर्म	अमुम्	अमू	अमून्।
करण	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः।
सम्प्रदान	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः।
अपादान	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः।
सम्बन्ध	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्।
अधिकरण	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु।

स्त्रीलिङ्ग।

	ए०ब०	द्वि०ब०	ब०ब०।
कर्ता	असौ	अमू	अमूः।
कर्म	अमूम्	अमू	अमूः।
करण	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः।
सम्प्रदान	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः।
अपादान	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः।
सम्बन्ध	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्।
अधिकरण	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु।

नपुंसकलिङ्ग।

कर्ता व कर्म	अदः	अमू	अमूनि।

और शेष पुल्लिङ्ग के समान—

इदम् पुल्लिङ्ग ।

	ए० व०	द्वि० व	ब० व० ।
कर्ता	अयम्	इमौ	इमे ।
कर्म	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
करण	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः ।
सम्प्रदान	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः ।
अपादान	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः ।
सम्बन्ध	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम् ।
अधिकरण	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु ।

स्त्रीलिङ्ग ।

कर्ता	इयम्	इमे	इमाः ।
कर्म	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः ।
करण	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
सम्प्रदान	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः ।
अपादान	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः ।
सम्बन्ध	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम् ।
अधिकरण	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु ।

नपुंसक ।

कर्ता	इदम्	इमे	इमानि
कर्म	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, कतम, इनके नपुंसक के कर्ता और कर्म के रूप एकवचन में क्रम से अन्यत्, अन्यतरत्, इतरत्, कतरत्, कतमत् होते हैं और शेष में सर्व के समान—

अस्मद् और युष्मद् के रूप पाठ २१ में और भवत् के रूप पाठ २६ में आ चुके हैं।

पूर्व, पर, अन्तर, अपर, अवर, अधर, दक्षिण, उत्तर और स्व के रूप कर्ता के बहुवचन, और अपादान, अधिकरण के एकवचन में अकारान्त शब्द के समान भी होते हैं द्वि के रूप केवल द्विवचन में आते हैं और वे ये हैं—

	पुल्लिङ्ग	स्त्री व नपुंसकलिङ्ग।
	द्विवचन	द्विवचन
कर्ता व कर्म	द्वौ	द्वे
करण, अपादान व सम्प्रदान	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
सम्बन्ध व अधिकरण	द्वयोः	द्वयोः

उभ तो केवल द्विवचन में आता है औ उभय, द्विवचन में नहीं आता परन्तु एकवचन व बहुवचन में इन दोनों के रूप तीनों लिङ्गों में सर्व शब्द के तुल्य होते हैं।

अनर्थ—पु०—बुराई, निष्फलता।

अन्तःपुर—न०—घर में वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्रियां रहती हों।

अमात्य—पु०—सलाह देनेववाला राजमन्त्री ।

अम्बर—न०—आकाश ।

अर्थ—पु०—चीज, वास्ते, माजरा, वाक़ग्र, धन ।

अवतरत्—(अव + तृ का शतृ प्रत्ययान्त) = उतरता हुआ।

आत्मजा—स्त्री० = बेटी ।

उपकार—पु०—दूसरों का भला करना, अहसान ।

उपानह् *—स्त्री०—जूती ।

कुण्ठित—(निष्ठा) रुका हुआ, भूँठा ।

कौशल–न०—बुद्धिमत्ता, प्रवीणता ।

गौरीमन्दिर—न०—गौरीदेवी का मन्दिर ।

गुरु—गु०—लम्बा ।

जगत्कर्तृ–पु०–संसार का करनेवाला ।

जीविका-स्त्री०–रोज़ी, पेशा । दिन–न० = दिन ।

दुष्ट–(निष्ठा) = बुरा । दूर–गु० = दूर ।

दैन्य—न० = नीचापन, ग़रीबी ।

द्रु–१–प० = पिघलना (दया से) चलना ।

नकदापि—पु०—कभी नहीं ।

निर्मित—पु०—बनाया हुआ । निर्वृतिमत्–पु०—खुश ।

निवेशित–(नि + विश् का निष्ठा) = रक्खा हुआ ।

---

* इस शब्द का 'ह्' अघोष अक्षरों के पहले तो 'त्' और घोष अक्षरों में अन्तस्थ और अनुनासिक को छोड़ कर उनके पहले 'द्' हो जाता है ।

परार्ध—न॰—दूसरा आधा।

पुण्यवत्—गु॰ = भला, पुण्यवान।

पूर्वार्ध—न॰ = पहला आधा।

प्रसन्न—(प्र + सद् का निष्ठा) = खुश।

प्रियवादित्व—न॰ = बोली की मिठास।

यशःकेतु—पु॰—नाम।

यात्रिक—पु॰—यात्री, तीर्थ को जानेवाला।

लक्ष्—१०-उ॰प॰ (सम्–) = जाँचना।

लघु—गु॰—छोटा। वर्ष—न॰—बरस।

विनाश-पु॰-बरबादी। विशुद्ध-गु॰ = सफ़ाई, पवित्रता।

विश्वास—पु॰—यक़ीन।

व्याल॰पु॰—बघेरा, साँप, शिकारी जानवर।

वृद्धिमत्-गु॰—बढ़नेवाला। शुभ—गु॰—अच्छा।

श्यामिका-स्त्री॰-मैलापन। श्रवण-न॰ = सुनना, कान।

शोभावती-स्त्री॰—नाम। स्नान—न॰—नहाना।

साशङ्क-गु॰—शकवाला। सोत्कण्ठ-गु॰-फ़िकरमन्द।

स्वप्न—पु॰ = सुपना, सोना।

वाक्य।

आसीत्पुरा यशःकेतुर्नृपः पृथिव्याम्–तस्य शोभावती राजधानी तस्यामुत्तमं गौरीमन्दिरमभवत्—तस्य च दक्षिणदिशायामेकस्तड़ागः प्रतिवर्षमाषाढ़शुक्लचतुर्दश्यां त-

स्मिंस्तड़ागे यात्रिका नानादिग्भ्यः स्नातुमागच्छन्तिस्म * सर्वे तत्रागताः स्नात्वा देवीं पूजयित्वा च मनोवाञ्छित-फलानि लब्ध्वा स्वं स्वं ग्रामं प्रति गच्छन्तिस्म—

भवान् यत् फलम्मह्यमयच्छत्तत्फलं सुष्ठ्वासीत् ।

तस्य विनाशः श्यामिकयाभवत् ।

इमाः प्रजा यास्त्वम्पश्यसि हे प्रभो ! तास्तव दर्शनं कृत्वाऽति प्रसन्नाः सन्ति ।

अमुष्यायात्मजायै त्वं द्रव्यं यच्छ ।

अमून् पुत्रान् पितादण्डयत् ।

आभ्यामश्वाभ्यां नरावपतताम् ।

अस्मात्तरोरदः फलमपतत् ।

सब मिल कर जो काम किया जाता है वह अच्छा होता है ।

सफाई से बीमारी नहीं आती ।

विद्या से सुख मिलता है ।

सुपने की बात सच्ची नहीं होती है ।

ये फूलवाले वृक्ष अच्छे दिखलाई देते हैं ।

* लट् लकार के साथ 'स्म' आने से भूतकाल का सूचक हो जाता है ।

प्रश्न ।

(१) उकारान्त शब्द और अकारान्त सर्वनाम शब्दों के रूपों में क्या अन्तर है ? ।

(२) एन किन २ स्थान में आता है ? ।

(३) अदस् और इदम् के रूप लो ।

पाठ २८

विधि लिङ्ग के प्रत्यय ।

परस्मैपद ।

	ए० ब०	द्विब०	ब० ब०
उ० पु०	इयम्	ईव	ईम ।
म० पु०	ईस्	ईतम्	ईत ।
प्र० पु०	ईत्	ईताम्	इयुस् ।

आत्मनेपद ।

उ० पु०	ईय	ईवहि	ईमहि ।
म० पु०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम् ।
प्र० पु०	ईत	ईयाताम्	ईरन् * ।

* उपरोक्त प्रत्यय लङ् लकार प्रत्ययों से भी बनते हैं अर्थात् लङ् के स्वरादि प्रत्ययों के पहिले तो 'इय्' और व्यञ्जनादि के पहिले 'ई' लगाने से—केवल इतना भेद है कि परस्मैपद में तो प्रथम पुरुष के बहुवचन में अन् के स्थान में उस् समझना चाहिये — आत्मनेपद में उ०पु० का ए०ब० और म०पु० का द्विब० और प्र०पु० का ब०ब० व द्वि०ब० में क्रम से इ यूथाम् , अन्त वा इतम् के स्थान में अ, अथाम् रन् वा आताम् हो जाता है।

इन प्रत्ययों के पहिले भी धातुओं में गणों के चिन्ह जोड़े जाते हैं— जैसे

उ०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम ।
म०	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत ।
प्र०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः ।
उ०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि ।
म०	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम् ।
प्र०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन् ।

विधिलिङ् लकार पहिले तो (१) सम्भावना, आज्ञा, उपासना, इच्छा, आशा इत्यादि में (२) ऐसे वाक्यों में जो दूसरे वाक्यों के आश्रित हों और उपरोक्त भावना को लिये हुए हों—(३) ऐसे वाक्यों में भी जो दूसरे वाक्य से सम्बन्ध रखते हों और उसका कारण या उसकी दशा को बतलाते हों—जैसे यदि कहें कि मुझे संस्कृत बोलना आता तो बहुत अच्छी बात होती—इस वाक्य में जिनके नीचे लकीर हैं वे इस ही लकार में आना चाहिये ।

शब्दाः ।

अधर्म—पु०—पाप ।
अनन्तर—गु०—फिर, बाद, पीछे ।

अभूमि—स्त्री०—बिना पृथ्वी ।
अविचलित (अ + वि + चल का निष्ठा) = स्थिर ।

१७ नि०

कण्टक–पु०–न० = कांटा।
कृत—(कृ का निष्ठा) = किया हुआ।
कृते–अव्यय = वास्ते, लिये।
जीर्ण–गु०—बूढ़ा, पुराना, फटा हुआ।
दारुण—गु०— भयानक, खौफ़नाक।
द्वारिका–स्त्री० = नगर का नाम।
नव—गु० = नया।
निश्चेष्ट–गु०–बिना हरकत।
परिहित–गु०–पहिरा हुआ।
पूजास्थान–न० = पूजा का घर।
बर—पु०—बरदान।
शाखा–स्त्री०–टहनी, डाली
श्वेत–गु०—सफेद, धौला।
सन्तप्त–(सम् + तप का निष्ठा) गर्मी का सताया हुआ।
हरण–न०—लेजाना।

धातु।

आप्–(वि–)—ढकना।
व्रज्–१–प०—जाना।
हृ—(आ–)—खाना, यज्ञ करना।

वाक्य।

त्वं तस्मिन् पाठशालायां गच्छेः।
गुरोरादेशं सोऽनुरुध्यते। विद्यां शिक्षेथाः।
सूनवः सुकृतैः पितरं प्रीणयेयुः। अधर्मस्त्यज्येयम्।
स्नानं कृत्वा नरा देवान् यजेयुः।
ब्राह्मणा हुतभुजं प्रतिदिनम्पूजयेयुः।
मम पितरौ तुष्येतामिति स्वसृभ्यो वहुद्रव्यमयच्छम्।
अस्मिन्नगरे बहवो धनिका सन्ति यदि भिक्षुका याचेरंस्तदा द्रव्यं लभेरन्।

यदि दुष्टानदण्डयिष्यस्तदा तेषां संवृद्धिर्भवेत् ।

अस्य धनं कोऽपि न लुभ्येत ।

दुष्टौ ताडयेयातामिति नृप आदिशत् ।

अहं गुरुणा दण्ड्येयं यदि तेनाधर्मं कुर्वन् दृश्येयम् ।

राजा का अमात्य बुद्धिमान होना चाहिये ।

यदि अचानचक कष्ट आ पड़े तो सहना चाहिये ।

यदि राजा यज्ञ करें तो उनको अवश्य सुख हो ।

गर्मी से सताया हुआ मुसाफिर बैठ गया और प्रार्थना करने लगा कि ईश्वर इस आतप को मिटा ।

पाठशाला में जाकर बुरे लड़कों की संगति नहीं करनी चाहिये ।

प्रश्न ।

(१) विधिलिङ् के प्रत्यय लङ् लकार के प्रत्ययों से किस तरह से बनते हैं ? ।

(२) वद्, इच्छ्, लभ्, यज्, गण्, के विधिलिङ् के रूप लो ।

पाठ २९

अनन्त व इनन्त शब्द ।

(१) इनके कर्ता व सम्बोधन के एकवचन के प्रत्यय गिर जाते हैं—

(२) कर्ता के एकवचन में और व्यञ्जनादि प्रत्ययों के पहिले 'न्' गिर जाता है—

(३) अ तो पहिले के पांच प्रत्ययों में दीर्घ हो जाता है और 'इ' केवल कर्म के एकवचन में—यह नियम नपुंसकलिङ्ग में नहीं लगता है परन्तु इनके कर्ता, सम्बोधन, व कर्म के बहुवचन के 'अ' और इ दीर्घ हो जाते हैं।

(४) कर्म के बहुवचन से लगाकर स्वरादि प्रत्ययों के पहिले 'अ' गिर जाता है परन्तु जब 'अ' से पहिले संयुक्त अक्षर हो और उस संयुक्त का अन्त का अक्षर म् या व् हो तो 'अ' नहीं गिरता है। यह नियम पुल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग के अधिकरण के एकवचन में विकल्प करके लगाया जाता है और नपुंसक के कर्ता, सम्बोधन व कर्म के द्विवचन में भी।

(५) सम्बोधन के एकवचन में इसका असली स्वरूप रहता है—नपुंसक में विकल्प करके 'न्' गिर जाता है—

(६) कर्म के बहुवचन से लगाकर स्वरादि प्रत्ययों से प-

हिले 'श्वन्' 'युवन्' व 'मघवन्' के 'व' का 'उ' हो जाता है शुनः यूनः मघोनः इत्यादि और शेष वचनों में और शब्दों के समानही रूप होते हैं।

महिमन्—पुलिङ्ग।

	ए॰ब॰	द्वि॰	ब॰ब॰
कर्ता	महिमा	महिमानौ	महिमानः
कर्म	महिमानम्	महिमानौ	महिम्नः
करण	महिम्ना	महिमभ्याम्	महिमभिः
सम्प्रदान	महिम्ने	महिमभ्याम्	महिमभ्यः
अपादान	महिम्नः	महिमभ्याम्	महिमभ्यः
सम्बन्ध	महिम्नः	महिम्नोः	महिम्नाम्
अधिकरण	महिम्नि, महिमनि	महिम्नोः	महिमसु
सम्बोधन	महिमन्	महिमानौ	महिमानः

अश्मन्—पुल्लिंग।

कर्ता	अश्मा	अश्मानौ	अश्मानः
कर्म	अश्मानम्	अश्मानौ	अश्मनः
करण	अश्मना	अश्मभ्याम्	अश्मभिः
सम्प्रदान	अश्मने	अश्मभ्याम्	अश्मभ्यः
अपादान	अश्मनः	अश्मभ्याम्	अश्मभ्यः
सम्बन्ध	अश्मनः	अश्मनोः	अश्मनाम्
अधिकरण	अश्मनि	अश्मनोः	अश्मसु
सम्बोधन	अश्मन्	अश्मानौ	अश्मानः

श्वन्-पुल्लिंग—शब्द ।

कर्म—ब०व० शुनः, करण—१ ब० शुना, सम्प्रदान—१ ब० शुने, और अपादान व सम्बन्ध-१-ब०, शुनः

युवन् शब्द के रूप ऊपर लिखे पांच कारकों में क्रम से यूनः, यूना, यूने और यूनः होते हैं-और मघवन् शब्द के रूप-क्रम से, मघोनः, मघोना, मघोने और मघोनः और शेष रूप और शब्दों की तरह होते हैं।

नामन्—नपुंसक ।

	ए०ब०	द्विब०	ब०ब०
कर्ता व कर्म	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
सम्बोधन	नाम, नामन्		

शेष रूप महिमन् की तरह—

कर्मन्— नपुंसक ।

कर्ता व कर्म	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
सम्बोधन	कर्म्म, कर्म्मन्		

शेष अश्मन् की तरह—

अहन्—न० ।

(७) इस शब्द में कर्ता और कर्म के एकबचन में और व्यञ्जनादि प्रत्ययों से पहिले 'न्' का बदल कर विसर्ग हो जाता है। जैसे—

	ए॰व	द्विव॰	ब॰व॰
कर्ता व कर्म	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
करण	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
सम्प्रदान	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
अपादान	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
सम्बन्ध	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
अधिकरण	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहःसु
सम्बोधन	अहः		

पक्षिन्—पल्लिङ्ग ।

कर्ता	पक्षी	पक्षिणौ	पक्षिणः
कर्म	पक्षिणम्	पक्षिणौ	पक्षिणः
करण	पक्षिणा	पक्षिभ्याम्	पक्षिभिः
सम्प्रदान	पक्षिणे	पक्षिभ्याम्	पक्षिभ्यः
अपादान	पक्षिणः	पक्षिभ्याम्	पक्षिभ्यः
सम्बन्ध	पक्षिणः	पक्षिणोः	पक्षिणाम्
अधिकरण	पक्षिणि	पक्षिणोः	पक्षिषु
सम्बोधन	पक्षिन्		

पथिन् मथिन् और ऋभुक्षिन् के सिवाय सब इनन्त शब्दों के रूप पक्षिन् के से होंगे ।

पथिन्—पुलिङ्ग ।

	ए॰	द्वि॰	ब॰व॰
कर्ता	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः

कर्म	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
करण	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
सम्प्रदान	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
अपादान	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
सम्बन्ध	पथः	पथोः	पथाम्
अधिकरण	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	पन्थाः		

मथिन् के रूप भी पथिन् के समान होते हैं।

ऋभुक्षिन्—पुल्लिङ्ग।

कर्ता	ऋभुक्षाः	ऋभुक्षाणौ	ऋभुक्षाणः
कर्म	ऋभुक्षाणम्	ऋभुक्षाणौ	

इसके भी शेष रूप पथिन् के से होते हैं।

कुशलिन्—नपुंसक।

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
कर्ता व कर्म	कुशलि	कुशलिनी	कुशलीनि
सम्बोधन	कुशलिन्, या कुशलि,	कुशलिनी	कुशलीनि

इसके शेष रूप पक्षिन् के समान होते हैं—

इनन्त नपुंसकलिंग के रूप सब कुशलिन् के से होते हैं—

शब्द।

अनुजीविन्—पु०—नौकर।

अन्तरात्मन्—पु०—भीतर का जीव, दिल, आत्मा।

अपराधिन्—पु०—अपराधी, कुसूर करनेवाला।

अश्मन्—पु०—पत्थर।

अहन्—न॰—दिन।
आत्मन्-पु॰-जी, आप।
उत्सङ्गवर्तिन्-पु॰-गोदी में बैठा हुआ।
कञ्चुकिन्-पु॰—स्त्रियों के मकान का नौकर।
कर्मन्—न॰—काम।
कुशलिन्-गु॰-खुश, प्रसन्न।
क्षयिन्-गु॰-घटता हुआ।
क्षेत्रगामिन्-गु॰—पवित्र-स्थान को जाता हुआ।
चर्मन्—न॰—खाल।
नामन्—न॰—नाम।
पक्षिन्—पु॰—उड़नेवाला परिन्द।
प्राणिन्—पु॰—जीव।
प्रियवादिन्-गु॰-मीठा बोलनेवाला।
प्रेमन्—पु॰—प्यार।
फलाशिन्-गु॰-फलहारी।

ब्रह्मन्-पु॰—संसार का रचनेवाला, ब्रह्मा।
भर्मन्—न॰—घर।
भाविन्-गु॰-होनेवाला।
महिमन्-गु॰-बड़ापन, बड़ाई।
मेधाविन्-गु॰-बुद्धिमान्।
योगिन्—पु॰—यति।
राजन्—पु॰—राजा।
लघिमन्-पु॰-छोटा भाई।
वर्त्मन्-न॰—रास्ता।
विश्वकर्मन्-पु॰-देवताओं का चेजारा।
शिखरिन्-पु॰-पहाड़, पेड़।
शूलिन्-पु॰-शिव का नाम।
सद्मन्—न॰—घर।
सीमन्—स्त्री॰—हद।
स्वामिन्—पु॰ – स्वामी।
हेमन् – न॰ – सोना।

अक्षर-गु॰-अचल, जिसका क्षय न हो।

अकर्णधारा-स्त्री॰ – बिना खेनेवाले के।

अभिषिक्त—(अभि + सिच् का निष्ठा) राजतिलक किया गया।

आश्चर्य–न०–तअज्जुब।

कर्पूरद्वीप–पु०–नाम टापू का

क्षर–पु०–क्षय होनेवाला।

काक–पु०–कौवा।

काल–पु०–समय, वक्त।

कुतूहल–न०–इच्छा, उत्कण्ठा, तमाशा।

कूटस्थ–पु०–परमात्मा।

जलचर–पु०–पानी के जीव।

जलधि—पु०–समुद्र।

तरि–स्त्री०–नाव।

पद्मकेल—नाम तालाब का।

पोत—पु०—नाव।

प्रयत्न–पु०–कोशिश, जतन।

प्रयास–पु०–कोशिश, जतन।

प्लु–१–आ०–(वि-)–तिरना।

यम–पु०—मौत, यम।

रूप्—१०–प०–(आ–)–रखना, लगाना, बाँधना।

वच्–*(केवल कर्मवाच्य में) बोलना, कहना।

वञ्चित (वच् का निष्ठा)—धोखा दिया गया।

विक्रम—पु०—बहादुरी।

विक्रमसेन–पु०–नाम राजा का।

विष्णुशर्मन्–पु०–नाम एक पण्डित का।

विग्रह—पु०—लड़ाई।

वेताल–पु०–नाम भूत का।

शिंशपातरु–पु०–नाम वृक्ष का, सीसों।

सम्यङ्ङ्‌ह–पु०—ठीक चलानेवाला।

सकाश—पु०—पास।

स्कन्ध—पु०—कन्धा।

हंस—पु०—हंस।

हिरण्यगर्भ–पु०–नाम एक हंस का, नाम विष्णु का भी

* कर्मवाच्य में "वच्" के 'व' का बदल कर 'उ' हो जाता है। जैसे उच्येत—

वाक्य व कथा ।

ततः स विक्रमसेनो नृपतिः पुनस्तस्य शिंशपातरोर्मूलं गत्वा तं वेतालं तथैव स्कन्धमारोप्य तस्य भिक्षोः सकाशमुदचलत् । तञ्च चलन्तं स वेतालः पुनरवदत् ।

राजन्! दुराचारस्य अस्य भिक्षोः कृते कोऽयं ते प्रयासः? निष्फले अमुष्मिन् प्रयत्ने तव विवेको न दृश्यते—

पुनः कथारम्भकाले राजपुत्रा अवदन्—'आर्य! राजपुत्रा वयम् तद्विग्रहं श्रोतुं नः कुतूहलमस्ति

विष्णुशर्मणोक्तम्, यदेवं भवद्भ्यो रोचते तत्कथयामि

तस्यायमाद्यः श्लोकः ।

हंसैः सह मयूराणां विग्रहे तुल्यविक्रमे ।
विश्वास्य वञ्चिता हंसाः काकैः स्थित्वारिमन्दिरे ॥

राजपुत्रा अपृच्छन् 'कथमेतत्' ? विष्णुशर्म्मा कथयति—

अस्ति कर्पूरद्वीपे पद्मकेलनाम सरः । तत्र हिरण्यगर्भो नाम राजहंसः प्रतिवसति । स च सर्वैर्जलचरपक्षिभिर्मिलित्वा पक्षिराज्येऽभिषिक्तः—यतः

यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा ।
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेत यथा तरिः ॥

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यमशासने ।
शेषाश्च स्थातुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम् ॥

अपराधी को दण्ड मिलना चाहिये ।
यत्न से मनुष्य बड़े २ कामों में सफलता प्राप्त करते हैं।
मनुष्य को सदा मीठा बोलनेवाला होना चाहिये ।
हंस जल के किनारे रहते हैं ।
गाँव की सीमा पर राजा ने फौज इकट्ठी की कि शत्रुओं को वहीं से लौटा दे ।

पाठ ३०

सकारान्त, वसन्त, और ईयसन्त, वा एयसन्त शब्द ।

(१) सकारान्त शब्दों के कर्ता का एकवचन, प्रत्यय के स् के गिराने से बनता है—और शब्द के अन्त के 'स्' के पहिले यदि 'अ' हो तो दीर्घ हो जाता है और अन्त का 'स्' बदल कर बिसर्ग हो जाता है—

(२) व्यञ्जनादि प्रत्ययों के पहिले स् बदल कर विसर्ग हो जाता है और तब प्रत्ययों के साथ उसकी सन्धि होती है—

(३) वसन्त, ईयसन्त, और एयसन्त पुल्लिङ्ग शब्दों के प्रथम के पांच प्रत्ययों में अन्त स् पहले 'न्' जोड़ दिया

जाता है और 'स्' के पहले का अक्षर दीर्घ हो जाता है—कर्ता के एकवचन के रूप में अन्त में 'वान्' या 'यान्' होता है—

(४) वस् के 'व्' को कर्म के बहुवचन से लगाकर सब स्वरादि प्रत्ययों के पहले उ * हो जाता है—और नपुंसक के कर्ता, कर्म, व सम्बोधन के द्विवचन की 'ई' से पहिले भी और व्यञ्जनादि प्रत्ययों से पहले और नपुंसक के कर्ता, कर्म, वा सम्बोधन के एक-वचन में 'स्' को 'द्' हो जाता है—

(५) दूसरा (२) नियम ईयस्, और एयम्, के कारकों में भी लगता है।

(६) नपुंसक शब्दों के कर्ता, कर्म, व सम्बोधन के एक वचन में यदि पूर्व में अ हो तो दीर्घ नहीं होता—बहुवचन के 'इ' के पहले उपधा का स्वर दीर्घ हो जाता है और उसके आगे 'न्' जोड़ दिया जाता है।

(७) इन सबके सम्बोधन के एकवचन में उपधा का स्वर दीर्घ नहीं होता—

(८) चौथे नियम के अनुसार जब 'व' का 'उ' होता है तो यदि इस 'उ' से पहिले कोई स्वर हो तो वह गिर जाता है।

(९) ऊपर के नियमों के विरुद्ध 'उशनस्' शब्द के प्रथमा का एकवचन 'उशना' होता है और 'दोष्' शब्द

में कर्म, के बहुबचन से लगाकर सब स्वरान्त प्रत्ययों के पहले 'न्' और भी लगाया जाता है और व्यञ्जनान्त प्रत्ययों के पहले 'अ' भी और लगा दिया जाता है। और पुमस् शब्द में पहले पांच विभक्तियों के सिवाय, शेष सब में अन्त के स्वर (अर्थात् म के अ का) लोप हो जाता है॥

वेधस् पुल्लिङ्ग।

	ए० ब०	द्वि ब०	ब० ब०
कर्ता	वेधाः	वेधसौ	वेधसः
कर्म	वेधसम्	वेधसौ	वेधसः
करण	वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः
सम्प्रदान	वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
अपादान	वेधसः	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
सम्बन्ध	वेधसः	वेधसोः	वेधसाम्
अधिकरण	वेधसि	वेधसोः	वेधःसु-स्सु
सम्बोधन	वेधः	वेधसौ	वेधसः

सकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप सिवाय उशनस् और दोष्, के वेधस् की तरह ही होते हैं।

विद्वस्—पुल्लिङ्ग।

कर्ता	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
कर्म	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः

करण	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
सम्प्रदान	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
अपादान	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
सम्बन्ध	विदुषः	बिदुषोः	विदुषाम्
अधिकरण	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	विद्वन्		

तस्थिवस्—पु.।

कर्ता	तस्थिवान्	तस्थिवांसौ	तस्थिवांसः
कर्म	तस्थिवांसम्	तस्थिवांसौ	तस्थुषः
करण	तस्थुषा	तस्थिवद्भ्याम्	तस्थिवद्भिः
सम्प्रदान	तस्थुषे	तस्थिवद्भ्याम्	तस्थिवद्भ्यः
अपादान	तस्थुषः	तस्थिवद्भ्याम्	तस्थिवद्भ्यः
सम्बन्ध	तस्थुषः	तस्थुषोः	तस्थुषाम्
अधिकरक	तस्थुषि	तस्थुषोः	तस्थिवत्सु
सम्बोधन	तस्थिवन्		

कनीयस्—पु.।

कर्ता	कनीयान्	कनीयांसौ	कनीयांसः
कर्म	कनीयांसम्	कनीयांसौ	कनीयसः
करण	कनीयसा	कनीयांभ्याम्	कनीयोभिः
सम्प्रदान	कनीयसे	कनीयोभ्याम्	कनोयोभ्यः
अपादान	कनीयसः	कनीयोभ्याम्	कनोयोभ्यः
सम्बन्ध	कनीयसः	कनीयसोः	कनीयसाम्
अधिकरण	कनीयसि	कनीयसोः	कनोयःसु-स्सु

पयस्—न.।

कर्ता, कर्म, सम्बो०—पयः पयसी पयांसि

शेष वेधस् की तरह—

अध्युषिवस्—न.।

कर्ता, कर्म, सम्बो०—अध्युषिवत् अध्युषुषी अध्युषिवांसि

शेष तस्थिवस् की तरह—

दोष्—पु०

	इ०व०	द्विव०	व०व०
कर्ता	दोः	दोषौ	दोषः
कर्म	दोषम्	दोषौ	दोषः, दोष्णः
करण	दोषा, दोष्णा	दोर्भ्याम्, दोषभ्याम्	दोर्भिः, दोषभिः
सम्प्र०	दोषे, दोष्णे	दोर्भ्याम्, दोषभ्याम्	दोर्भ्यः, दोषभ्यः
अपा०	दोषः, दोष्णः	दोर्भ्याम्, दोषभ्याम्	दोर्भ्यः, दोषभ्यः
सम्बन्ध	दोषः, दोष्णः	दोषोः, दोष्णोः	दोषाम्, दोष्णाम्
अधि०	दोषि, दोष्णि, दोषणि	दोषोः, दोष्णोः	दोःषु—दोषसु
सम्बो०	दोः	दोषौ	दोषः

पुमस्—पु०।

कर्ता	पुमान्	पुमांसौ	पुंमासः
कर्म	पुमांसम्	पुंमासौ	पुंसः
करण	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभि

सम्प्रदान	पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
अपादान	पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
सम्बन्ध	पुंसः	पुंसो	पुंसाम्
अधिकरण	पुंसि	पुंसो	पुंसु
सम्बोधन	पुमन्	पुमांसौ	पुमांसः

शब्दाः ।

अध्युषिवस्–गु०–रहताहुआ।
कनीयस्—गु०—छोटा ।
चक्षुस्—न०—आंख ।
छन्दस्—न० = वेद ।
ज्यायस्—गु०—बड़ा ।
तपस्—न०—तपस्या ।
तमस्—न०—अन्धेरा ।
तस्थिवस्–गु० = बैठा हुआ, ठहरा हुआ ।
तेजस्–गु० = उजाला,गर्मी, प्रकाश ।
दिवोकस्–पु० – ईश्वर, देवता ।
दोस्—पु० = बांह, भुजा ।
धनुष्—न० = कमान ।
नभस्—न० = आकाश ।
पयस्—न० = पानी, दूध ।
पुमस्—पु० = आदमी ।
प्रियस्–गु० = बहुत प्यारा ।
भूयस्–गु० = बहुत बड़ा ।
मनस्—न० = मन ।
यशस्–न० = यश,प्रसिद्धता।
रक्षस्—न० = भूत, राक्षस।
रजस्—न० = रेत, धूर ।
वक्षस्—न० = छाती।
वचस्–न० – बोली, वचन ।
वनौकस्—गु० – जंगल में रहनेवाला ।
वयस्—न०—उमर, पक्षी।
वासस्—न० – कपड़ा ।

विद्वस्—पु०—पढ़ा लिखा।
वेधस्—पु० — ब्रह्मा।
शिरस्—न० — शिर।

श्रेयस् — गु० — बहुत अच्छा।
सरस्—न०—झील, तालाब।
हविस्—न०—बलिदान, घी।

अध्वखेद — (अध्वन् — पु० — सड़क, खेद—पु०—थकावट) पु०-रस्ते की थकावट
अनुरञ्जन — न० = प्रसन्न करना, राज़ी करना।
अपाय—पु०—नुक़सान, हानि
अभिभूत—(अभि + भू का निष्ठा) = जीता हुआ या दबाया हुआ।
अहित—न०—हानि।
आवरण—न०—ढकना, रोक।
उत—अव्यय—या।
कल्प—१—आ०—सकना, योग्य होना।
क्षुद्र—पु०-स्त्री-न०—कमीना, ओछा।
गाह्—१-आ० (अव-)-नहाना
जायापति—पु० (द्विव० मे ही) स्त्री और पति।

तप्—१-प०—चमकना, गरम होना, तपाना।
तमिस्रा—स्त्री०—रात अँधेरी।
तृषित—गु०—प्यासा।
दारिद्र्य—न०—दरिद्रता।
दीन—गु०—गरीब।
दुर्दशा—स्त्री०—बुरी दशा।
द्रुह्—४-प०—धोखा देना, मारने की इच्छा करना।
धीर—गु०—बुद्धिमान, गम्भीर सन्तोष रखनेवाला, ठंडा
नीचैराख्य—गु०—नीचैस् + (आख्य—स्त्री०—नाम) = नीचैस् नाम का—
(आख्य शब्द ऐसेही स्थान में बहुधा आता है।
न्यायसभा-(न्याय-पु०-न्याय) सभा-स्त्री० = कचहरी।

न्यायालय, न्याय का स्थान, न्याय की कचहरीं ।

पद्-(निस्-) परिणाम, निकलना ।

परकीय—गु०—दूसरे का।

प्रतिहत-(हन् का निष्ठा प्रति के साथ) = रोका हुआ।

प्रथम-सुकृत—न०-पहिले का अच्छा काम ।

प्राप्त—(निष्ठा) पहुँचा हुआ, पाया हुआ ।

भागीरथी—स्त्री०—गङ्गा ।

भूरि—गु०—बहुत ।

भो—अव्यय = सम्बोधन का पद ।

रक्षण—न०—बचाव ।

रज्जु—स्त्री० = रस्सी ।

वस्-(अधि-) = बैठना, आराम करना, बसना ।

विपत्ति—स्त्री० – दुःख ।

विमुख—गु०—मुंहफेरे, विरोधी ।

शोभ—गु०—अच्छा ।

संश्रय—पु०—ठहरने का स्थान ।

समाज—पु० – सभा ।

सुरभि – गु० – सुगन्ध ।

सुवृत्ति – गु० – अच्छा ।

स्मृ-(वि-) – भूलना ।

हालिक—पु०—पालती, किसान, हल चलानेवाला।

हालिनी—स्त्री०—छिपकली।

हाली—स्त्री०—छोटी साली।

हालु—पु० – दांत ।

हिंजीर—पु०—रस्सी, या जंजीर हाथी का पैर बाँधने की ।

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।
पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् ॥
राजा बन्धुरबन्धूनां राजा चक्षुरचक्षुषाम् ।
राजा पिता च माता च सर्वेषां न्यायवर्तिनाम् ॥

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः ।
यस्यार्थाः सपुमांल्लोके यस्यार्थाः स हि पण्डितः ॥
न हि तद्विद्यते किञ्चिद्यदर्थेन न सिध्यति ।
यत्नेन बुद्धिमांस्तस्मादर्थमेकं प्रसाधयेत् ॥
कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान्न धार्मिकः ।
काणेन चक्षुषा किं वा चक्षुःपीडैव केवलम् ॥

ज्यायान् कनीयांसमवदत् – भो ! भ्रातः श्रमं कृत्वा विदुषो गुरोः पाठं शिक्षेथाः ।
नभसि मेघा वर्तन्ते ततस्तमोऽभवत् ।
पुमांसः पयः पिबन्ति । वेधसा जगन्निर्मितम् ।
रक्षांसि तमसि तमिस्रायां भ्रमन्ति ।
वनौकसः शिरसि वासांसि न धारयन्ति ।
मधुरैर्वचोभिर्मनस्तुष्यति ।
पुमांसः सरसि दिवौकसामनुरञ्जनाय तान् यजन्ति ।
वयांसि नभस्युड्डीयन्ते ।
विद्वांसो न्यायसभायान्तस्थिवांसश्चिन्तयन्ति ।
वनौका मुनिश्छन्दः पठति वने ।
तमसि चक्षुर्न पश्यति परन्तु तेजसि ।

तुम मेरे छोटे भाई को बुलाओ ।
लव कुश का बड़ा भाई था ।
सब मनुष्य अपने प्यारे को याद किया करते हैं ।

विद्वानों से उपदेश किये जाने पर दशरथ ने यज्ञ शुरू किया।

भीम से छाती पर मारे जाने से कीचक बेहोश हो गया।

परीक्षा प्रश्न।

(१) अनन्त, और इनन्त शब्दों के अन्त का 'न्' किस २ स्थान में गिर जाता है?।

(२) 'अ' किस स्थान में गिरता है और कब नहीं गिरता?

(३) सकारान्त शब्दों के रूप बनाने का क़ायदा कहो।

(४) वसन्त ईयसन्त और एयसन्त पुल्लिङ्गशब्दों में 'न्' कब जोड़ा जाता है और वस् के 'व्' को उ कब होता है?

(५) तपस्, भूयस्, श्रेयस्, तस्थिवस्, के रूप लिखो–

पाठ ३१

इस पुस्तक में जिन चारों गणों के धातुओं का वर्णन किया है उनमें जो विशेष बातें या नियम हैं सो इस पाठ में लिखे जायंगे।

(१) गुप्–बचाना, धूप्–गरम करना, विच्छ्–जाना या पहुँचना, पण् या पन् जब उसका अर्थ प्रशंसा

करना हो तो, इन सब भ्वादि गण और परस्मै पद के धातुओं में प्रत्यय लगाने से पहले आय् और जोड़ा जाता है और आय् लगाने से पहले गुप् धातु के उ का गुण हो जाता है जैसे–गुप् का गोपायति, पण् का पणायति।

(२) भ्राश् व भ्लाश् आत्मनेपद–चमकना और भ्रम् = फिरना, क्रम = टहलना, क्लम् = थक जाना, त्रस् = डरना या काँपना, त्रुट् = तोड़ना या काटना, लष् = चाहना, और यस् = उद्योग करना, सम् के साथ या बिना उपसर्ग के परस्मैपद के धातु भ्वादि, व दिवादि दोनों गणों में आते हैं, और क्रम् का 'अ' इन पिछले चार गण के लकारों में दीर्घ हो जाता है केवल परस्मैपद में, आत्मनेपद में नहीं, और क्रम् और क्लम् के बदले जब उपसर्ग 'अ' जोड़ा जाता है तब भी 'अ' दीर्घ हो जाता है।

(३) अक्ष् व तक्ष् जब ये सँवार करना या हजामत करना या बाल मूड़ने या बाल छीलने के अर्थ में आते हैं तो प्रथम गण वा पांचवां गण दोनों में रूप होते हैं।

(४) ध्मा = फूँक मारना, घ्रा = सूँघना, म्ना = विचारना, ऋ = जाना, सृ = दौड़ना अर्थ में, शद् = काटना कुल भ्वादि गण के धातु प्रत्यय लगाने से पहले गण के चारों लकारों में इनके रूप क्रम से धम्, जिघ्र्, मन्, ऋच्छ्, धौ, शीय् हो जाते हैं – शद् के सिवाय सब परस्मैपद हैं।

(५) गुह् का इन गण के लकारों में दीर्घ हो जाता है और उन प्रत्ययों के पहिले भी जिनके पहिले स्वर का गुण हो जाता है – जैसे गूहति –

(६) दंश् व सञ्ज्, परस्मैपद – स्वञ्ज्, आत्मनेपद – वरञ्ज् उभय पद ये सब भ्वादि गण के धातु अपना अनुनासिक अक्षर गिरा देते हैं।

(७) धातु के दीर्घ ॠ के जब गुण या वृद्धि नहीं होती है तो उसके स्थान में इर् हो जाता है और यदि उसके पूर्व ओष्ठस्थानीय अक्षर हो तो 'उर्' हो जाता है – और इन 'इ' या 'उ' के आगे यदि कोई व्यञ्जन आवे तो ये दीर्घ हो जाते हैं।

जॄ दिवादि गण का रूप जीर्यति, कॄ तुदादि गण का रूप किरति और कॄत् चुरादि गण का रूप कीर्तयति।

(८) दिवादि गण के धातुओं के अन्त में जब ओ हो तो इस गण के प्रत्ययों के पहले 'ओ' गिर जाता है जैसे सो का स्यति, दो का द्यति, शो का श्यति और छो का छ्यति॥

(९) दिव्, ष्ठिव्, शम्, तम्, दम्, श्रम् और मद् सब दिवादि गण के और भ्रम् और श्रम् जब दिवादि गण में आवें तो इस गण के चार लकारों में इनका स्वर दीर्घ हो जाता है और भ्रम् का रूप भ्रम्यति भी होता है।

(१०) दिवादि गण के व्यध् धातु का इस गण के 'य' के पहले विध् हो जाता है, जैसे विध्यति ।

(११) तुदादि गण के चिन्ह 'अ' से पहले धातु के चिन्ह इ या उ ह्रस्व या दीर्घ को बदल कर क्रम से इय् या उव् हो जाता है, जैसे रि का रियति, नु का नुवति।

(१२) तुदादि गण के भ्रस्ज् और व्रश्च् का बदलकर इस गण के लकारों में क्रम से भृज्ज और वृश्च् हो जाता है।

(१३) तुदादि गण के लुप् , लिप्, खिद्, कृत् और पिश् इन धातुओं के अन्त के अक्षर के पहले अनुनासिक अक्षर लगा दिया जाता है, जैसे लिम्पति ।

(१४) चुरादि गण से कुछ धातु केवल आत्मनेपदही में आते हैं, जैसे तन्त्र् , चित्, भर्त्स् , मन्त्र् , तर्ज् , विद्, इत्यादि ।

(१५) कुछ धातु भ्वादि व चुरादि दोनों गणों में आते हैं जैसे युज् , पृच् सह् वृज् वृ जृ रिच् , तप् तृप् दृभ् अर्ह इत्यादि ।

धातु ।

अक्ष्-१-५-प०-पहुंचना, फैलना, घुसना, बढ़ना, इकट्ठा करना ।	ऋ-[ऋच्छ्]-१-प०-जाना।
	कृत्-६-प०—काटना ।
	कॄ-६-प०-बखेरना,फैलाना।

कृत्—१०-उ०प०-कहना, बताना।

क्रम्—१-४-प०—टहलना।

क्लम्—१-४-प०—थकजाना।

खिद्—६-प०—मारना, तकलीफ देना।

गुप्—१-प०—बचाना, पालना

गुह्—१-उ० प०—छिपाना, ढकना।

घ्रा-[जिघ्र]-१—प०—सूंघना।

चित्—१-प०व १०-आ०—देखना, जानना, समझना।

छो—४-प०--काटना(खेतका)

जॄ—१-४-प०-१०-उ०प० = गिरना, टूटना, बूढ़ा होना।

तक्ष्—१-प०—काटना, मूँडना।

तप्—१-४-प०—चमकना, गरम होना, तप करना।

तम्—४-प०-थकना, नाय होना।

तर्ज्—१०-आ०१-प०—डराना।

तृप्—४-६-प०—तृप्त करना।

त्रस्—१-४-प०—डरना, काँपना।

त्रुट्—१-४-प०—तोड़ना, फाड़ना।

द्रम्—४-प०—पलाऊ होना या करना, हिलाना।

दंश्—१-प०—काटना, डङ्क मारना।

दिव्—४-प०—चमकना, पाँसा फेकना, जूवा खेलना।

दृभ्—१-६ प०—बाँधना, गूथना, पिरोना।

दो—४-प०—काटना (खेत का)

धूप्—१-प०—गरम होना, या करना, सुगन्ध देना।

ध्मा—१-प०—फूँक मारना, शङ्ख बजाना।

नु—६-प०—प्रशंसा करना।
पण् या पन्—१-प०—प्रशंसा करना।
पिश्—६-उ०प०—बनाना।
पृच्—१-प०—छूना।
भर्त्स्—१०-आ०—धमकाना।
भ्रम्—४-प०—फिरना।
भ्राज्—६-उ०प०—भूनना।
भ्राश्, भ्लाश् } ४ आ०—चमकना।
मन्त्—१०आ०-१-प०— सलाह करना या लेना।
म्ना—१-प०—विचारना।
यस्—१-४-प०—उद्योग करना।
युज्—१-४-प०—जोड़ना।
रञ्ज्—१-४-उ०प०—रँगना।
रि—६-प०—जाना, चलना।
रिच्—१-१०-प०—अलग २ करना, विभाग करना।
लप्—१-प०—बोलना।
लष्—१-४-प०-इच्छा करना, चाहना।
लिप्—६-उ०प०—लीपना, लिपना, सानना।
वञ्च्—६-प०—चलना, १०-उ०प०-चमकना, बोलना।
वृ—१-१०-उ०प०—चुनना, पसन्द करना, चाहना।
वृज्—१-१०-प०—छोड़ना, नफरत करना, घृणा करना
व्यध्—४-प०—मारना।
वृश्च्—६-प०—काटना, फाड़ना।
शद्—१-आ०—नष्ट होना।
शो—४-प०—तेज करना।
ष्ठिव्—१-४-प०—थूकना।
सञ्ज्—१-प०—चिपकना।
राह्—४-प०-१-आ०-सहना
सृ [धौ]-१-प०—दौड़ना।
सो—४-प०—मारना।
स्वञ्ज्—१-आ०—बाथ भरना।

अम्भस्—न०—पानी, जल।
दुर्जनोपम—पु०-दुर्जनकासा।

पद्मपत्र—न०—कँवल का पत्ता
मृणालिका—स्त्री०—कँवल की डण्डी ।
रथ्यारुह्यमान—पु०—घोड़े पर सवार—(रथ्य—पु०—रथ का घोड़ा—आरुह्यमान—रुह् का शानच् प्रत्ययान्त—सवार)

रथ्यारुह्यमाणमात्मानं न चेतयते ।
कस्तृप्यति वित्तेन । यमो दाम्यति राक्षसान् ।
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने ।
न हि स्त्रीभिः सह मन्त्रयितुं युज्यते ।
नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
न मां कर्माणि लिम्पन्ति ।
लिप्यते स न पापेभ्यो पद्मपत्रमिवाम्भसा ।
इह लोके हि धनिनां परोऽपि स्वजनो भवेत् ।
स्वजनोऽपि दरिद्राणां सर्वदा दुर्जनोपमः ।
मनुष्याः पुष्पाणि जिघ्रन्ति ।
कृष्णो धेनुं गोपायति ।
जीर्यन्ति जीर्यतः केशा दन्ता जीर्यन्ति जीर्यतः ।
आत्मानं तक्षति ह्येष वनं परशुना यथा ।
सुवर्णकारो धमति । प्राणोऽहर्निशम्मृच्छतीति वयम्मनामः । अश्वा धावन्ति । राजपुरुषश्चोरस्य शिरोऽसिना शीयते । सोऽवगुणं गूहते । सर्पो दशति ।
रजको रजति । ग्रन्थस्य पत्रं सजति । स मित्रं स्वजते ।

मैंने कबूतरों को बुलाने के वास्ते चावल बखेरे ।
झूठा मनुष्य किसी काम के योग्य नहीं होता ।
आग पर वह चावलों को भूनता है ।
वह वृक्ष को काटता है ।
देवदत्त ने जंगल में शेर देखा और काँपने लगा ।
बाग़ में जाकर आम के फल पसन्द कर लो ।
लड़ाई के समय सब अपनी २ तलवारों को तेज़ करते हैं । तुमने उस पर क्यों थूँका ? ।
इन जानवरों को पलाऊ बनाओ ।
मेरी माला फूलों की गूंथो ।

पाठ ३२

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेत् धनैरपि ।
आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि ॥
येन केनाप्युपायेन शुभेनाप्यशुभेन वा ।
उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थो धर्म्ममाचरेत् ॥
यो न वेत्ति गुणान् यस्य न तं सेवेत पण्डितः ।
न हि तस्मात् फलं किञ्चित् सुकृष्टादूषरादिव ॥
अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति ।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः कृतप्रयत्नोऽपि गृहे विनश्यति॥
पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने ।
पुत्रश्च स्थाविरे भावे न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥

धनवान् बलवांल्लोके सर्वः सर्वत्र सर्वदा ।
प्रभुत्वं धनमूलं हि राज्ञामप्युपजायते ॥
असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः सन्तुष्टाश्च महीभुजः ।
सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कुलस्त्रियः ॥
सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रजावती ।
सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता ॥
न सा भार्येति वक्तव्या यस्या भर्ता न तुष्यति ॥
तुष्टे भर्तरि नारीणां सन्तुष्टाः सर्वदेवताः ।
चाटुतस्करदुर्वृत्तैस्तथा साहसिकादिभिः ॥
पीड्यमानाः प्रजा रक्ष्याः कूटच्छद्मादिभिस्तथा ।
प्रजानां धर्मषड्भागो राजा भवति रक्षिता ॥
अधर्मादपि षड्भागी जायते यो न रक्षति ॥
प्रजापीड़नसन्तापात् समुद्भूतो हुताशनः ।
राज्ञः श्रियं कुलं प्राणान्नादग्ध्वा विनिवर्तते ॥
फलार्थी पार्थिवो लोकान् पालयेद् यत्नमास्थितः ।
दानमानादितो येन मालाकारोऽङ्कुरानिव ॥
यथा वीजाङ्कुरः सूक्ष्मः प्रयत्नेनाभिरक्षितः ।
फलप्रदो भवेत् काले तद्वल्लोकः सुरक्षितः ॥

व्याकीर्णकेशरकरालमुखा मृगेन्द्रा
नागाश्च भूरिमदराजिविराजमानाः ।
मेधाविनश्च पुरुषाः समरेषु शूराः
स्त्रीसन्निधौ परमकापुरुषा भवन्ति ॥

न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं न कश्चित्कस्यचिद्रिपुः ।
व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा ।
मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ॥
इज्याध्ययनदानानि तपः सत्यं धृतिः क्षमा ।
अलोभ इति मार्गोऽयं धर्मस्याष्टविधःस्मृतः ॥
तत्र पूर्वश्चतुर्वर्गो दम्भार्थमपि सेव्यते ।
उत्तरस्तु चतुर्वर्गो महात्मन्येव तिष्ठति ॥
गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥
रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥
माता शत्रुः पितावैरी वालो येन न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये वको यथा ॥
सुबुद्धिः पुरुषश्रेष्ठः कुबुद्धिः पुरुषाधमः ।
अबुद्धिः पशुसामान्यो नोत्तमो नाधमश्च सः ॥
अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् ।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥
यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता ।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥
वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न हि तारागणोऽपि च ।

अनभ्यासे विषं विद्या ह्यजीर्णे भोजनं विषम् ।
विषं सभा दरिद्रस्य वृद्धस्य तरुणी विषम् ॥

आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥

अस्ति मगधदेशे चम्पकवती नामारण्यानी, तस्यां चिरान्महता स्नेहेन मृगकाकौ निवसतः स च मृगः स्वेच्छया भ्राम्यन्हृष्टपुष्टाङ्गः केनचिच्छृगालेनावलोकितः । तं दृष्ट्वा शृगालोऽचिन्तयत्—कथमेतन्मांसं सुललितं भक्षयामि, भवतु ।

विश्वासं तावदुत्पादयामि । इत्यालोच्योपसृत्यावदत्—'मित्र, कुशलन्ते' ?। मृगेणोक्तम्—'कस्त्वम्' ?। सोऽकथयत्, 'क्षुद्रबुद्धिनामा जम्बूकोऽहम् । अत्रारण्ये बन्धुहीनो मृतवन्निवसामि । इदानीं त्वां मित्रमासाद्य पुनः सबन्धुर्जीवलोकं प्रविष्टोऽस्मि । अधुना तवानुचरेण मया सर्वथा भवितव्यम्' ।

मृगेणोक्तम्—'एवमस्तु' । ततः पश्चादस्तंगते सवितरि भगवति मरीचिमालिनि तौ मृगस्य वासभूमिं गतौ ।

तत्र चम्पकवृक्षशाखायां सुबुद्धिनामा काको मृगस्य चिरमित्रं निवसति । तौ दृष्ट्वा काकोऽवदत्—सखे चित्राङ्ग, कोऽयं द्वितीयः ।' मृगो वदति । जम्बूकोऽयम् । अस्मत्सख्यमिच्छन्नागतः । काकोवदति–मित्र, अकस्मादागन्तुना सह मैत्री न युक्ता । तथा चोक्तम् ।

अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित्। इत्यादि—

इति श्रुत्वा स जम्बुकः सकोपमवदत्। मृगस्य प्रथम-दर्शनदिने भवानप्यज्ञातकुलशील एव। तत् कथम् भवता सहैतस्य स्नेहानुवृत्तिरुत्तरोत्तरं वर्धते। यथायं मृगो मम बन्धुस्तथा भवानपि'।

मृगोऽकथयत्—किमनेनोत्तरेण—सर्वैरेकत्र विश्र-म्भालापैः सुखिभिः स्थीयताम्—काकेनोक्तम्—'एवमस्तु'।

अथ प्रातः सर्वे यथाभिमतदेशं गताः। एकदा शृ-गालो वदतिस्म। 'सखे, अस्मिन् वनैकदेशे सस्यपूर्णक्षेत्र-मस्ति। तदहं त्वां नीत्वा दर्शयामि' तथा कृते सति मृगः प्रत्यहं तत्र गत्वा सस्यं खादति। अथ क्षेत्रपतिना तद्दृष्ट्वा पाशो योजितः। अनन्तरं पुनरागतो मृगः पाशे बद्धोऽचि-न्तयत् को मामितस्त्रातुम्मित्रादन्यस्समर्थः। जम्बुकस्तत्रा-गत्याचिन्तयत्—फलिता मनोरथसिद्धिः'। मृगस्तं दृष्ट्वा-वदत्—'सखे, मम बन्धनं वृश्च—जंबुकः पाशं विलोक्या-चिन्तयत्। दृढस्तावदयं बद्धोऽत्रदत्र। 'सखे, स्नायु निर्मि-तान् पाशान् भट्टारकवारे कथम् दन्तैःस्पृशामि। इत्युक्त्वा तत्रैवात्मानं स गोप्य स्थितः। अनन्तरं स काकोऽपि प्र-दोषकाले मृगमन्विष्य तथाविधं दृष्ट्वावदत्। 'सखे, किमेतत्'। मृगेणोक्तम् 'अवधीरितसुहृद्वाक्यस्य फलमे-तत्'। ततः काकोऽवदत्—स वञ्चकः क्वास्ते? मृगेणोक्तम्—

'मम मांसार्थी तिष्ठत्यत्रैव' । काकः कथयति । उक्तमेव मया पूर्वम् ॥

अपराधो न मे ऽस्तीति नैतद्विश्वासकारणम् ।
विद्यते हि नृशंसेभ्यो भयं गुणवतामपि ॥

ततः काको दीर्घं निःश्वस्य—'अरे वञ्चक, किं त्वया पापकर्मणा कृतम्'। अथ प्रभाते क्षेत्रपतिर्लगुडहस्तस्तं प्रदेशमागच्छन् काकेनावलोकितः। तमालोक्य काकेनोक्तम्। 'सखे मृग त्वयात्मानं मृतवत्संदर्शय वातेनोदरं पूरयित्वा पादान्स्तब्धीकृत्य तिष्ठ। यदाहं शब्दं घोषयामि तदा त्वयोत्थाय सत्वरं गन्तव्यम्'। मृगस्तथैव काकवचनेन स्थितः ततः क्षेत्रपतिना हर्षोत्फुल्ललोचनेन तथाविधो मृग आलोकितः। 'आह च, स्वयम्मृतोऽसि'। इत्युक्त्वा मृगबन्धनोन्मोचयित्वा पाशान् गृहीतुम् सयत्नोऽभवत्—। ततः काकशब्दं श्रुत्वा मृगः सत्वमुत्थाय पलायितः॥

शोकारातिभयत्राणं प्रीतिविश्रम्भभाजनम्।
केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम् ॥ १ ॥

इति संस्कृतशीघ्रप्रबोधिन्याः प्रथमभागः पण्डित शङ्करलालशर्म्मकृतपरमेश्वरस्य कृपया समाप्तिमगमत्।

संस्कृत-शब्दावली ।

अ

अकर्णधारा—स्त्री० = बिना खेनेवाले की ।

अकाल—पु० = बिना काल या समय ।

अक्ष्—१-५—पु० = पहुंचना, फैलना, घुसना, बढ़ना ।

अक्षर—गु० = अचल, जिसका क्षय न हो ।

अखिल—गु० = कुल, सब ।

अगद—पु० = दवा ।

अग्नि—पु० = आग

अग्र—गु० = सिरा, नोक ।

अङ्कुश—पु० = अंकुश ।

अङ्गल—पु० = अंग्रेज ।

अङ्गलभूमि-स्त्री० = इङ्गलैण्ड देश ।

अच्छ—पु० = अच्छा ।

अज—पु० = बकरा ।

अज्ञान—न० = अज्ञान, अनजानपना ।

अट्—१—प० = फिरना ।

अत:—अव्यय = यहां से, इसलिये ।

अतिथि—पु० = महमान, पाहुना, बटाऊ ।

अतीव—अव्यय = बहुत ।

अत्र—अव्यय = यहां ।

अथ—अव्यय = इस प्रकार से, जैसे (आरम्भ में आता है)

अद्—२—पु० = खाना ।

अद्धा—अव्यय = सचमुच ।

अद्य—अव्यय = आजा ।

अधमर्ण—पु० = ऋणी, करजदार

अधर्म पु० = पाप ।

अधिपति—पु० = मालिक स्वामी ।

अधुना—अव्यय = अब ।

अध्ययन—न० = पाठ ।

अध्युषियस्—पु० = रहता हुआ ।

अध्वखेद—(अध्वन्—पु० = सड़क, खेद—पु० = थकावट = पु० = रस्ते की थकावट ।

अनन्तर—गु० = फिर, बाद, पीछे

अनर्थ—पु० = बुराई, निष्फलता ।

अनल—पु० = आग ।

अनिष्ट -- न० = बुराई ।
अनुजीविन्—गु० = नौकर ।
अनुज्ञा -- स्त्री० = इजाज़त ।
अनुरक्ति - स्त्री० = प्यार ।
अनुरञ्जन—न० = खुश करता हुआ, प्रसन्न करता हुआ ।
अनुराग—पु० = प्यार ।
अनुष्ठान—न० = करना ।
अनृत—न० = झूठ ।
अनेकशस्—अव्यय = बार बार ।
अन्तःकरण—न० = हृदय, दिल।
अन्तःपुर—न० = घर में वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्री रहती हों ।
अन्तरात्मन्—पु० = भीतर का जीव, दिल।
अन्न - न० = नाज ।
अपराध—पु० = कुसूर ।
अपराधिन्—पु० = अपराधी, कुसूर करनेवाला ।
अपाय—पु० = नुकसान, हानि ।
अपि—अव्यय = भी ।
अप्रिय—गु० = दुप्यारा, बेसवाद।
अभिधान—न० = नाम ।
अभिभूत— (अभि + भू का निष्ठा) हराया हुआ, दबाया हुआ ।

अभिलाष—पु० = इच्छा ।
अभिषिक्त-(अभि + सिच् का निष्ठा) राजतिलक किया गया ।
अभिषेक--पु० = राजतिलक होना
अभूमि—स्त्री० = बिना पृथ्वी ।
अभ्युदय - पु० = तरक्की, बढ़ोत्तरी
अमरावती—स्त्री० = इन्द्र की राजधानी ।
अमात्य—पु० = सलाह देनेवाला, राजमन्त्री ।
अम्बर—न० = आकाश ।
अम्भस्—न० = पानी, जल ।
अयोध्या—स्त्री० = नाम एक नगर का ।
अरण्य—न० = जंगल ।
अरि - पु० = बैरी ।
अरुन्धती - स्त्री० = वशिष्ठ ऋषि की बहू ।
अर्घ्य—न० = पूजा की सामग्री, अरघा ।
अर्चन—न० = पूजन ।
अर्जुन - पु० = पाण्डवों में से एक का नाम ।
अर्थ्—(प्र०) = अर्ज करना (इस पुस्तक में केवल कर्मवाच्य के रूप होंगे)—(अभि—) भी।

अर्थ पु० = चीज, होना, माजरा, वाक्य।

अर्ह्-१ गण—प० = योग्य होना, लायक होना।

अलङ्कार—पु० = आभूषण, गहना।

अलङ्घनीय—गु० = जिसके पार न हो सके, जिसको तोड़ न सके (तृतीया के साथ आता है)

अलम्—अव्यय = बस।

अलि—पु० = मक्खी, भौंरा।

अवकाश—पु० = फुरसत, स्थान खाली।

अवचय—पु० = समाज, इकट्ठा होना।

अवतरत्—(तृ का शतृ प्रत्यान्त) (अव) = उतरता हुआ।

अवधीरणा—स्त्री० = पीछे का हटना।

अवन्ती—स्त्री० = एक नगरी का नाम, उज्जैन।

अवस्तु—न० = झूठी वस्तु।

अविचलित—(अ + वि + चल् का निष्ठा) = स्थिर।

अश्मन्—पु० = पत्थर।

अश्रु—न० = आंसू।

अश्व - पु० = घोड़ा।

अश्वपति—पु० = घोड़े का मालिक।

अस्—२ गण—प० = होना, ४ग० प० = फेंकना, (निर्) = बखेरना, छितराना।

असङ्ख्येय—गु० = अनगिनत।

असत्य—न० = झूठ।

असारता—स्त्री० = निकम्मापन।

असि—पु० = तलवार।

असुर—पु० = राक्षस।

अस्त्र—न० = हथियार।

अहन्—न० = दिन।

अहित—न० = हानि।

आ

आकाश—न० = आसमान।

आचार—पु० = अच्छा चाल चलन।

आचार्य—पु० = गुरु, अध्यापक।

आज्ञा—स्त्री० = हुक्म।

आतप—पु० = सूर्य्य, धूप।

आत्मजा—स्त्री० = बेटी।

आत्मन्—पु० = जीव, आप।

आत्मीय—गु० = अपना ही।

आदर—पु० = सत्कार।

आदेश—पु० = हुक्म, आज्ञा।

आधार—पु० = ठहराव, सहारा ।
आध्यात्मिक— गु० = आत्म सम्बन्धी ।
आध्यान—न० = खयाल, ग़ौर ।
आप्—(वि-)-१-प० = ढकना ।
आपद्—स्त्री० = विपता ।
आभ्यन्तर—गु० = भीतर ।
आम—गु० = कच्चा ।
आम्र—न० = आम का फल ।
आयुष्मत्— पु० = बहुत दिनों जीनेवाला ।
आरम्भ - पु० = शुरू, आदि ।
आराधन—न० = राजी करना ।
आरोप—पु० = लगाना ।
आरोपण—न० = लगाना, बोना।
आर्य—पु० = श्रेष्ठ मनुष्य, हिन्दुओं की बड़े बूढ़े ।
आवरण न० = ढकना, रोक ।
आशा—स्त्री० = उम्मेद ।
आशीर्वाद—पु० = अशीष ।
आश्चर्य—न० = अचम्भा, तअ़ज्जुब।
आश्रम—पु० = कुटी ।
आसन—न० = बैठक ।
आह्लादक — गु० = खुश करनेवाला ।

—***—

इ

इच्छा – स्त्री० = चाह ।
इति—अव्यय = ऐसा, इस प्रकार से (अन्त में आता है)
इत्थम् – अव्यय = इस प्रकार से ।
इद्धा—अव्यय = सचमुच, ठीक ।
इन्दु—पु० = चांद ।
इन्द्र—पु० = इन्द्र, देवराज ।
इन्द्राणी—स्त्री० = इन्द्र की स्त्री ।
इन्धन—न० = लकड़ी जलाने की।
इव—अव्यय = समान, तरह, जैसा।
इष्—[इच्छ्] ६ गण—प० = चाहना, ४ - प० अनु-) = ढूंढ़ना।
इह—अव्यय = यहां ।

ई

ईक्ष्—१ गण—आ० प० = देखना, (अप-) = आशा करना, (प्र-) देखना, परि-) = परीक्षा करना, (उप्-) = टालना, बेखबर रहना ।
ईश्वर—पु० = परमेश्वर ।
ईषत् अव्यय = थोड़ा, कुछ कुछ ।

—***—

उ

उच्चैस्—अव्यय = ऊँचा ।

उज्ज्वल—गु० = चमकीला ।

उञ्छ्—६ गण = प० = चुगना ।

उटज—पु० = झोंपड़ा, कुटी ।

उत—अव्यय = या ।

उत्कण्ठा—स्त्री० = अति इच्छा ।

उत्सङ्गवर्तिन्—पु० = गोदी मे बैठा हुआ ।

उत्साह – पु० = खुशी, प्रसन्नता, उमग, शक्ति ।

उदक—न० = जल, पानी ।

उदधि पु० = समुद्र ।

उद्गम—पु० = जन्म ।

उद्धत—(उद् + हन् का निष्ठा) घमण्डी, मगरूर ।

उद्धृत—(हृ का निष्ठा)—(उद्-) = उखाड़ा हुआ, उठाया हुआ ।

उद्भव - पु० = जन्म ।

उद्यत – यम् का निष्टा-(उद्-) = तयार ।

उद्यम—पु० = कोशिश, उद्योग; मेहनत ।

उद्यान—न० = बाग़ ।

उद्योग पु० = कोशिश ।

उपकार—पु० = दूसरों का भला करना, अहसान, लाभकारी ।

उपजात—गु० = नई, निकाली हुई ।

उपदेश– पु० = नसीहत, सलाह ।

उपवन – न० = बाग ।

उपहार—पु० = भेट, इनाम ।

उपानह्—स्त्री = जूती ।

उपाय—पु० = इलाज, जतन ।

उपालम्भ पु० = झिड़की, ताना, उलाहना ।

उपाह्विकम्—(का) – अव्यय = उसी समय ।

ऋ

ऋ – [ऋच्छ्]-१-प० = जाना ।

ऋजुता—स्त्री० = सच्चाई, ईमान्दारी, सीधापना ।

ऋतुपर्ण—पु० = एक राजा का नाम ।

ऋते—अव्यय = विना, सिवाय ।

ऋध्—४ गण – प० = (सम्) = बढ़ना ।

ऋषि—पु० = ऋषि ।

ऋष्यशृङ्ग – पु० = दशरथ का जँवाई, राम का जीजा ।

ए

एव—अव्यय = ही, केवल।

एवम्—अव्यय = इस प्रकार से।

ओ

ओदन—पु० = पके हुए चावल।

औ

औषधि - न० = दवा।

क

कञ्चुकिन्—पु० = स्त्रियों के मकान का नौकर।

कट—पु० = चटाई।

कड—गु० = गूंगा।

कण्टक—पु०-न० = काँटा।

कण्ठ—पु० = नाड़, गला।

कत्थ्—१ गण-आ०प० = काँपना।

कथ्—१०—प० = कहना, बतलाना।

कथम्—अव्यय = किस प्रकार, कैसे।

कथा—स्त्री० = कहानी।

कदा—अव्यय = कब।

कनिष्ठ—गु० = सब से छोटा।

कनीयस्—गु० = छोटा।

कन्या—स्त्री० = लड़की।

कपट—न० = धोखा।

कपि—पु० = बन्दर।

कपोल—पु० = गाल।

कमल—न० = कँवल।

कम्प्—१ गण-आ०प० = काँपना।

कर—पु० = हाथ।

करभक—पु० = हाथी का बच्चा।

कर्ण—पु० = एक बहादुर का नाम, एक राजा का नाम।

कर्तृ—गु० = करनेवाला।

कर्पूरद्वीप—पु० = नाम एक टापू का।

कर्मन्—न० = काम।

कलङ्क—पु० = धब्बा, दाग़।

कला—स्त्री० = कारीगरी।

कलि—पु० = लड़ाई, झगड़ा।

कल्प्—१—आ० = सकना, योग्य होना।

कल्याण—न० = शुभ।

कबरी—स्त्री = बालों की लटी।

कवि—पु० = कवि।

काक—पु० = कव्वा।

कान्ता—स्त्री० = बहू, स्त्री।

कान्ति—स्त्री० = चमक, प्रकाश।

कारण—न० = सबब।

कारागृह—न० = जेलखाना ।

कारुण्य—न० = दया, मेहरबानी।

कार्य—न० = काम ।

काल—पु० = समय, वक्त ।

काश्—१ गण-आ०प० = (प्र) = चमकना ।

काष्ठ—न० = लकड़ी ।

किङ्कर—पु० = नौकर ।

किन्तु—अव्यय = परन्तु ।

किरि—पु० = सूअर ।

कीर्ति—स्त्री० = यश, भलाई, नेकी, शोहरत ।

कुण्ठित—पु० = भूंठा, रुकाहुआ।

कुतः—अव्यय = कहां से ।

कुतूहल—न० = इच्छा, उत्कण्ठा।

कुत्र—अव्यय = कहां से ।

कुमारी—स्त्री० = क्वारी कन्या।

कुम्भकार—पु० = कुम्हार ।

कुरु पु० = देश का नाम (बहुबचन में)।

कुर्वत्—पु० = करता हुआ ।

कुशलिन्—गु० = खुश, प्रसन्न ।

कुस्—४ प० = मिलना (बाथ घाल कर)

कुसुम—न० = फूल ।

कूटस्थ—पु० = परमात्मा ।

कूप—पु० = कूंवा ।

कूर्म—पु० = कछुआ ।

कृ = करना, (अधि —) = अधिक करना, अधिकार होना ।

कृत्—६ गण—प० = काटना, तोड़ना ।

कृत-(कृ का निष्ठा) = किया हुआ।

कृतज्ञता—स्त्री० = अहसानमन्दी।

कृति—स्त्री० = काम ।

कृते—अव्यय = वास्ते, लिये ।

कृपा—स्त्री० = अनुग्रह, महरबानी

कृष्—६ गण-प० = हल चलाना !

कृषीवल—पु० = किसान ।

कृष्ण—पु० = कृष्ण ।

कॄ—६ गण—प० = बखेरना, फैलाना ।

कॄत्—१-उ०प० = कहना, बताना

कोश—पु० = खजाना ।

कौमुदी—स्त्री० = चांद की चांदनी ।

कौशल—न० = बुद्धिमता, पूर्णता।

कौशाम्बी—स्त्री० = एक नगर का नाम ।

कौशिक—पु० = कुश के बंश का।

क्रम्—१-४-प० = टहलना ।

क्रीड़्—१ गण-प० = खेलना ।

क्रीड़ा—स्त्री० = खेल ।

क्रोध—पु० = क्रोध, गुस्सा ।

क्रोस—पु० = कोस ।

क्लम्—१-४-प० = थक जाना ।

क्लेश—पु० = दुःख, तकलीफ ।

क्व—अव्यय = कहां ।

क्षम्—[क्षाम्] १ गण-आ०प०-४ प० = क्षमा करना, माफ करना ।

क्षमा—स्त्री०माफी ।

क्षयिन्—गु० = घटता हुआ ।

क्षर—पु० = क्षय होनेवाला ।

क्षल्—[क्षाल] १० गण = प० = धोना, प्र के साथ भी ।

क्षि = २ गण—प० = नाश होना, क्षीण होना ।

क्षिप् = ६ गण-प० = फेंकना ।

क्षुद्र—पु० स्त्री०, न० = कमीना ओछा ।

क्षुधित = गु० = भूखा ।

क्षुभ् = ४ गण-प० = भड़कना ।

क्षेत्र = न० = खेत ।

क्षेत्रगामिन् = गु० = क्षेत्र या पवित्रस्थान को जाता हुआ ।

—***—

ख

खञ्ज—पु० = लङ्गड़ा ।

खड्ग = पु० = तलवार ।

खन् = १ गण—प० = खोदना, (उद्) भी ।

खनित्र = न० = फावड़ा ।

खर्जु = स्त्री० = खिजूर या धतूरे का पेड़ ।

खर्जुर—पु० = खिजूर, विच्छू ।

खल—पु० = खराब, दुष्ट ।

खिद्—६—प० = मारना, तकलीफ देना, गरीब होना ।

ग

गङ्गा—स्त्री० = नाम एक नदी का

गच्छत्—(शतृ प्रत्यान्त) जाता हुआ ।

गज पु० = हाथी ।

गण्—१० गण—प०—गिनना, समझना, मानना ।

गति—स्त्री० = चाल, चलने का ढंग ।

गन्तृ—पु० = जानेवाला ।

गन्धर्व—पु० = देवताओं का गवैया ।

गम्—[गच्छ्] १ गण-प० = जाना, (अव-) = जानना, समझना, (प्रति-) और (आ)—लौटना, (अधि-) = पाना, (निर्-) चल देना, (सम्-) आ०प० = मिलना, मिल कर बहना, (अनु-) पीछे २ जाना।

गमन—न० = जाना।

गर्ह्य—गुण = धिक्कार योग्य।

गल्—१—प० = गिरना।

गल्भ्—१ - आ०प० (प्र-) = बढ़ बढ़ाना।

गात्र—न० = अङ्ग, बदन।

गान—न० = गाना।

गायक—पु० = गानेवाला।

गाह्—१-आ०-(अव-) = नहाना।

गिरि—पु० = पहाड़।

गीत न० = गीत।

गुण—पु० = नेकी, गुण।

गुणवत्—गु० = गुणवाला।

गुप्—१-प० = बचाना, पालना।

गुरू—गु० = लम्बा।

गुह्—१—उ०प० = छिपाना, ढकना।

गृह—न० = घर।

गोदावरी—स्त्री० = एक नदी का नाम।

गोत्र—न० = वंश।

गोप—पु० = ग्वाल, गऊ चराने वाला।

गोष्ठ—पु० = गायों के बन्द करने का बाड़ा, गुवाड़ा।

ग्रन्थ—पु० = पुस्तक।

ग्रन्थन—न० = गूंथना, माला बनाना।

ग्रहण—न० = पकड़ना।

ग्राम—पु० = गांव।

ग्रीष्म—पु० = गरमी।

घ

घट—पु० = घड़ा।

घुष्—१० - प० = प्रसिद्ध करना, आवाज करना।

घृत—न० = घी।

घ्रा—[जिघ्र] १—प० = सूंघना।

च

च—अव्यय = और।

चकोर—पु० = एक प्रकार की चिड़िया।

चक्र—न० = पहिया।

चक्षुस्—न० = आंख।

चञ्चल—गु० = थोड़े काल ठहरनेवाला।

चण्ड—गु० = भयानक, क्रोधी ।

चन्द्र – पु० = चांद ।

चन्द्रापीड़ – पु० = एक राजकुंवर का नाम ।

चर्—१ गण-प० = जाना, चलना, (आ-) = अभ्यास करना ।

चरित—न० = जीने का ढंग, आचरण ।

चर्मन्—न० = खाल ।

चल्—१—प० = चलना, भटकता फिरना ।

चातुर्य—न० = चतुराई ।

चाप—पु० = कमान, धनुष ।

चित्—१-प०, १०-आ० = देखना, जानना, समझना ।

चित्त—न० = मन ।

चित्रकूट—पु० = एक पहाड़ का नाम ।

चिन्त् – १०गण-प० = बिचार करना ।

चिन्ता -- स्त्री० = शोच, फिकर ।

चिरम् – अव्यय = देर, बहुत काल

चुर्—१० गण—प० = चोरी करना, चोरना, चुराना ।

चोदयत्—हाँकता हुआ, आज्ञा करता हुआ ।

चोर -- पु० = चोर ।

छ

छन्दस्—न० = वेद, पद्य ।

छात्र—पु० = शिष्य, चेला, विद्यार्थी ।

छाया—स्त्री० = छांयां ।

छो – ४—प० = काटना ।

ज

जगत् न० = संसार, दुनियां ।

जगत्कर्त्ता—पु० = संसार का करनेवाला ।

जन्—(जा) ४ गण—प० = पैदा होना ।

जन—पु० = मनुष्य, आदमी ।

जनक – पु० = बाप, पिता, सीता का बाप, नाम एक राजा का।

जननी – स्त्री० = माता, मा ।

जय—पु० = जीतना ।

जयत्—(शतृ प्रत्ययान्त) = जीतता हुआ ।

जयन्त – पु० = इन्द्र के पुत्र का नाम ।

जरठ – पु० = बूढ़ा आदमी ।

जरा—स्त्री० = बुढ़ापा ।

जल—न० = पानी ।

जलचर—पु० = पानी के जीव ।

जलधि—पु० = समुद्र ।

जल्प्—१ गण—प० = बोलना ।

जाड्य—न० = सुस्ती ।

जाति—स्त्री० = जात ।

जामातृ—पु० = जमाई ।

जायापति—पु० (द्वि०ब०में दो) स्त्री और पति ।

जाल—न० = जाल, फाँसी ।

जि—(जय्) १ गण—प० = जीतना ।

जिह्वा—स्त्री० = जीभ ।

जीर्ण—गु०—पुराना, बूढ़ा, फटा हुआ ।

जीव्—१ गण—प० = जीना ।

जीव—पु० = जी, जानवर ।

जीवित—न० = जीव, जान, जीना ।

जॄ—१-४—प०, १०—उ०प० = गिरना, टूटना, बूढ़ा होना ।

जोषम्—अव्यय = आनन्दपूर्वक ।

ज्ञा—जानना (केवल कर्मवाच्य में)

ज्ञाति—पु० = रिश्तेदार ।

ज्ञान—न० = ज्ञान ।

ज्यायस्—गु० = बड़ा ।

ज्योत्स्ना—स्त्री० = चांदना, प्रकाश ।

ड

डिम्भ—पु० = बालक, बच्चा ।

डी (डय)—१ गण—आ०प० = उड़ना ।

त

तक्ष्—१ प० = काटना, मूंड़ना ।

तड्—१० गण—प० = मारना, पीटना ।

तड़ाग—पु० = तालाब ।

तण्डुल—पु० = चावल ।

ततः—अव्यय = वहां से, पीछे ।

तत्र—अव्यय = वहां ।

तत्व—न० = सच्चाई, असलियत ।

तथा—अव्यय = उस प्रकार ।

तदा—अव्यय = तब ।

तप्—१-४-प० = चमकना, गरम होना, तपाना ।

तपस्—न० = तपस्या ।

तम्—४ प० = थकना, जाय होना

तमस्—न० = अँधेरा ।

तमिस्रा—स्त्री० = रात ।

तरि—स्त्री० = नाव ।

तरु—पु० = पेड़, बोझा ।

तर्ज्—१०आ०,१-प० = डराना।

तस्थिवस् गु० = बैठा हुआ, ठहरा हुआ।

तारक—न० = तारा।

तालु—न० = तालवा।

तिरस्—अव्यय = टेढ़ेपने से, बुरी तरह से।

तिल—पु० = तिल।

तीर—न० = किनारा।

तु—अव्यय = परन्तु, (वाक्य के आदि में नहीं आता)

तुद्—६ गण प० = दुःख देना।

तुल्—१० गण-प० = तोलना।

तुष्—४ गण-प० = ख़ु०—राजी होना।

तूल—पु० = रूई।

तूष्णीम्—अव्यय = चुपचाप।

तृण—न० = घास।

तृषित—गु० = प्यासा।

तृष्णा—स्त्री० = प्यास, इच्छा।

तृप्—४-६ गण-प० = तृप्त करना।

तॄ (तर्)-१ गण-प० = पार होना, तिरना, (अव-) = उतरना।

तेजस्—न० = उजाला, गर्मी, प्रकाश।

त्यज्—१ गण-प० = छोड़ना।

त्याग—पु० = छोड़ना।

त्रस्—१-४-प० = डरना, काँपना।

त्रुट्—१-४-प० = तोड़ना, फाड़ना।

त्वष्टृ—पु० = देवताओं का चेजारा

द

दंश्—१ प० = काटना, डंक मारना।

दक्ष—गु० = परिश्रमी, मेहनती, चतुर।

दण्ड्—१०-प० = सजा देना।

दण्ड—पु० = छड़ी, सज़ा।

दण्डका—स्त्री० = जंगल का नाम

दम्—४-प० = पलाऊ होना, या करना, पालना।

दरिद्र—गु० = गरीब, दीन।

दर्शन—न० = देखना।

दशरथ—पु० = एक राजा का नाम, राम का पिता।

दह्—१-प० = जलाना।

दा—[यच्छ्] १ गण-प० = देना, भेट करना, (प्रति-) = बदलना,

दातृ—पु० = देनेवाला, दातार। (कर्मवाच्य में "दी") (प्र-) = देना।

दारिद्र्य—न० = दरिद्रता।

दारुण—गु० = भयानक, खौफ-नाक।

दासी स्त्री० = चेरी, बांदी।

दिन—न० = दिन।

दिव्—४-प० = चमकना, पासा फेंकना, जूवा खेलना।

दिवा—अव्यय = दिन में।

दिवौकस्—पु० = ईश्वर, देवता।

दिश्—६-प० = दिखाना, (उप-) सिखाना, (आ-) = आज्ञा करना, निर्-) = जाहिर करना, कहना।

दीन—गु० = गरीब।

दीप—पु० = दीवा।

दीर्घ—गु० = बड़ा, लम्बा।

दुःख—न० = दुःख।

दुग्ध—न० = दूध।

दुराचार—पु० = खोटा चलन।

दुर्ग—न० = किला, कठिनता।

दुर्जन—पु० = खराब आदमी।

दुर्दशा—स्त्री० = बुरी दशा।

दुष्कृत—न० = बुरा काम, पाप।

दुष्कृति—स्त्री० = बुरा काम।

दुष्ट—गु०० (निष्ट) = बुरा, बिगड़ा हुआ।

दुहितृ—स्त्री० = बेटी।

दूत—पु० = दूत, वकील।

दूर—गु० = दूर।

दृ- (दार्)—१०-प० = फाड़ना।

दृढ़िमन्—पु० = मजबूती।

दृभ्—१-६-प० = बाँधना, गूथना, पिरोना।

दृश्—[पश्य] १ गण-प० = देखना

दृशद्—स्त्री० = पत्थर, शिला।

देव—पु० = देवता।

देवदत्त—पु० = नाम एक मनुष्य का।

देवी—स्त्री० = बड़ी श्रेष्ट स्त्री या देवी।

देवृ—पु० = देवर।

देश—पु० = देश।

देह—पु० = शरीर।

दैन्य—न० = नीचापन, गरीबी।

दो—४-प० = काटना, (खेत का) लावणी करना, तोड़ना।

दोषा—अव्यय = रात मे।

दोस्—पु० = बांह, भुजा।

द्युत्—(द्योत्) १ गण-आ०प० = चमकना।

द्रव्य—न० = रुपये, धन, पृथिव्यादि।

द्रष्टृ—पु० = देखनेवाला।

द्रु—१ गण-प० = पानी टपकना, गीला होना, चलना, पिघलना (दया से)

द्रुह्—४-प० = धोखा देना, मारने की इच्छा करना।

द्वारिका—स्त्री० = एक नगरी का नाम।

द्विज—पु० = पहले के तीन वर्णों की जातियों में से कोई, ब्राह्मण।

द्वीप—पु० = टापू।

द्वेष्टृ—पु० = नफ़रत करनेवाला, बैरी।

ध

धन—न० = धन।

धनपति पु० = कुबेर, धन का देनेवाला।

धनिक—पु० = धनवान।

धनुष—न० = कमान।

धर्म्म—पु० = धर्म।

धा—(रखना)-(निर्-) = रखना, स्थापन करना।

धातृ—पु० = सृष्टी करनेवाला।

धान्य—न० = नाज।

धार्तराष्ट्र—पु० = धृतराष्ट्र का बेटा।

धाव्—१ गण—प० = दौड़ना, भागना।

धिक्—अव्यय = धिक्कार।

धीमत्—गु० = बुद्धिमान।

धीर्—१०-आ० (अव्-) = अपमान करना, नफ़रत करना।

धीर—गु० = बहादुर आदमी, बुद्धिमान, गम्भीर, सन्तोष रखने वाला।

धूप्—१ प० = गरम होना, या करना, सुगन्ध देना।

धूर्जटि—पु० = महादेव।

धृ—(धार्) १० गण-प० = पकड़ना, पहनना, देनदार होना, १ गण-उ०प० (उद्-) = बचाना, छुड़ाना, उठाना,।

धृति—स्त्री० = बहादुरी, धीरज।

धेनु—स्त्री० = गाय।

ध्मा—१-प० = फूंक मारना, शंख बजाना, ताव देना।

ध्यान—न० = बिचार, सोच।

ध्वंस्—१ गण-आ० = नाश होना, गिरना।

ध्वनि—पु० = आवाज़।

—***—

न

न – अव्यय = नहीं ।

नकदापि—अव्यय = कभी नहीं ।

नख – न० = नुंह ।

नगर—न० = गांव, शहर ।

नटनी—स्त्री० = नाचनेवाली ।

नटी—स्त्री० = नाटक करनेवाली, नटनी ।

नद – पु० = बड़ी नदी ।

नदी—स्त्री० = नदी ।

ननान्दृ – ननद ।

नन्द—१ गण-प० = (अभि-) खुश होना, राजी होना ।

नप्तृ—पु० = पोता ।

नभस्—न० = आकाश, आसमान

नम्—१ गण-प० = झुकना, अव के साथ भी ।

नमस्—अव्यय = नमस्कार करना

नयन—न० = आंख ।

नर – पु० = आदमी, पुरुष ।

नव—गु० = नया ।

नश् – ४ गण-प० = नाश होना, न दीखना ।

नाग—पु० = हाथी ।

नाटक – न० = खेल, तमाशा ।

नामन्—न० = नाम ।

नायक—पु० = लेजानेवाला ।

नारद – पु० = ऋषि का नाम ।

नारी—स्त्री० = लुगाई, औरत ।

नारायण—न० = नाम ।

नाविक—पु० = मल्लाह ।

नाश—पु० = बरबादी ।

निधि—पु० = खजाना, कोश ।

निन्द् – १ गण-प० = निन्दा करना

निन्दा – स्त्री० = निन्दा, चुग़ली ।

निपुण—गु० = पूरा ।

निरतिशय गु० = पूरा, जिस से बढ़कर न हो ।

निर्देश – पु० = आज्ञा ।

निर्मित – (मा का निष्ठा-निर् से साथ) = बनाया हुआ ।

निर्बन्ध—पु० = तक़ाज़ा, हठ ।

निर्वृत्तिमत्—गुण = खुश ।

निवेशित-(नि + विश् का निष्ठा) = रक्खा हुआ ।

निशा – स्त्री० = रात ।

निशाचर – पु० = राक्षस ।

निशाचरी—स्त्री० = राक्षसी, भूतनी ।

निशित—गु० = तेज़ ।

निश्चेष्ट गु० = बिना हरकत, स्थिर।

निषस—/सद् का निष्टा-नि के साथ = बैठा हुआ।

निष्क—पु० = एक सोने का सिक्का, मोहर।

नी—१ गण-उ०प० = चलाना, ले जाना, (आ-) = लाना, वि-) १-प० = पढ़ाना, शिक्षित करना, (प्र-) = लिखना, बनाना पुस्तक का।

नीचैस् - अव्यय = नीचे।

नीचैराख्य गु० = (नीचैस् + आख्य स्त्री० = नाम) = नीचैस् नाम का (आख्य शब्द बहुधा ऐसे ही स्थानों में आता है)।

नीति—राज्यनीति।

नू—६-प० = प्रशंसा करना।

नृ—पु० = आदमी।

नृत्- ४-प० = नाचना।

नृत्य—न० = नाच।

नृप—पु० = राजा।

नृपति—पु० = राजा।

नृशंस—गु० = खोटा, पापी।

नेत्र—न० = आंख।

न्याय—पु० = दर्शन के ग्रन्थ, न्याय।

न्यायसभा—= स्त्री० = (न्याय—पु० = न्याय, सभा—स्त्री० = कचहरी) = न्यायालय, न्याय का स्थान, कचहरी।

प

पक्षिन्—पु० = परिन्द।

पङ्क—पु० = कीचड़।

पच्—१-उ०प० = पकाना, रींधना

पञ्चवटी—स्त्री० = नाम एक जगह का।

पञ्जर—पु० = पिंजरा।

पठ्—१ गण-प० = पढ़ना, सीखना।

पण्—१ प० = प्रशंसा करना।

पण्डित—पु० = पढ़ा लिखा।

पत्—१ गण प० = गिरना, (उद्-) उठना, उड़ना, उछलना।

पत्नी—स्त्री० = बहू।

पथ्य - न० = खाने में उचित।

पद्—४ गण-आ० (निस्-) = निकलना, पैदा होना।

पद—न० = पैर।

पद्मकील—पु० = नाम तालाब का।

पन्—१-प० = पढ़ना, सीखना।

पयस्—न० = पानी, दूध।

पर—गु० = बड़ा।

परकीय गु० = दूसरे का।

परम—गु० = बहुत।

परमम्—अव्यय = मगर, पर, परन्तु।

परवत्—गु० = पराधीन।

परशु—पु० = कुल्हाड़ा, फरसा।

परशुराम—पु० = नाम एक ब्राह्मण का।

पराक्रम—पु० = जोर, बीरता।

परार्ध—दूसरा आधा।

परिणाम—पु० = फल, निचोड़, सिद्धान्त करी हुई बात।

परिहित—गु० = पहरा हुआ।

पर्ण—न० = पत्ता।

पर्वत—पु० = पहाड़।

पल्लव—पु० = कोंपल, नया पात।

पल्वल—न० = छोटा तालाब, जोहड़।

पवन—पु० = हवा।

पवि—पु० – इन्द्र का वज्र।

पशु—पु० = चौपाया।

पश्चात्—अव्यय = पीछे, फिर।

पश्यत्—शतृ प्रत्ययान्त = देखता हुआ।

पा-[पिव्] १ गण-प० = पीना (कर्मवाच्य मे "पी" आता है)

पाठ—पु० = पाठ, सबक।

पाठशाला—स्त्री० = मदर्सह, पढ़ने का स्थान।

पाणि—पु० = हाथ।

पाण्डव—पु० = पाण्डु राजा का बेटा।

पात—पु० – गिरना।

पात्र - न० = योग्य पुरुष या चीज।

पाद—पु० = पैर।

पान्थ—पु० = मुसाफिर, बटेऊ।

पाप—न० = पाप, पु० = पापी।

पारितोषिक – न० = इनाम।

पार्थिव—पु० = राजा।

पालक—पु० = पालनेवाला।

पांसु—पु० = रेत।

पिण्ड—पु० = पिण्ड।

पितृ—पु० = बाप, (द्वि०व० में) मा, बाप।

पितृव्य—पु० = चचा, काका।

पिश्—६ = उ०प० = बनाना।

पीड़—१० गण-प० = दुःख देना।

पीड़ा—स्त्री० = दुःख, दरद।

पुण्य - न० = पुण्य, पवित्र, धर्म।

पुण्यवत्—गु० = भला, पुण्यवान।

पुत्र—पु० = बेटा।

पुत्री – स्त्री० = बेटी।

पुनर्—अव्यय = फिर।

पुमस्—पु० = आदमी, नर।

पुरतस् – अव्यय = पहले।

पुरी—स्त्री० = नगरी, शहर, गांव।

पुरुष—पु० = आदमी, मनुष्य, नर।

पुष्—४ गण – प० = पोसना, पालना।

पुस्तक—न० = किताब, पोथी।

पूज् – १० गण-प० = पूजना।

पूजा—स्त्री० = पूजा।

पूजास्थान – न० = पूजा का घर।

पूज्य – गु० = पूजने के योग्य।

पूर्वार्ध = पहला आधा।

पृच्—१—प० = छूना।

पृथ्वी—स्त्री० = धरती।

पोत—पु० = नाव।

पौर—पु० = नगर का बासी।

प्रकर्ष—पु० = बड़ाई, तेज़ी।

प्रकाश—पु० = चांदना, धूप, तावड़ा।

प्रकृति – स्त्री० = स्वभाव।

प्रच्छ्-[पृच्छ]-६-प० = पूछना।

प्रजा—स्त्री० = रैयत।

प्रज्ञ—(या प्राज्ञ)-पु० = बुद्धिमान आदमी।

प्रतान् अव्यय = फैला हुआ।

प्रताम् अव्यय = थका हुआ।

प्रतिकृति—स्त्री० = तसवीर, नकल, मूर्ति।

प्रतिक्रिया—स्त्री० = बदला, इलाज।

प्रतिपद्—स्त्री० = पड़वा, प्रतिपदा।

प्रतिष्ठापन—न० = ठहराना।

प्रतिहत्- हन् का निष्ठा प्रति-) = मरा हुआ, रोका हुआ।

प्रथ्—१० गण-प० = छापना, फैलाना।

प्रथम—गुण = पहला।

प्रथम-सुकृत – न० = पहले का अच्छा काम।

प्रबल—गुण = बलवान, मजबूत।

प्रभा—स्त्री० = चांदना, चमक।

प्रभु—पु० = स्वामी, मालिक।

प्रभूत—गु० = बहुत।

प्रमदा—स्त्री० = जवान औरत।

प्रमाण—न० = सबूत, गवाही।

प्रयत्न—पु० = कोशिश, जतन।

प्रयास—पु० = कोशिश, जतन, श्रम, मेहनत।

प्रवर्तन—न० = स्थापित करना, चलाना, जारी करना।

प्रवाह—पु० = बहना ।

प्रशस्य—गु० = सराहने योग्य ।

प्रशान्—अव्यय = समान ।

प्रश्रय—पु० = आदर, सनमान ।

प्रसन्न-(प्र + सद् का निष्ठा) = खुश।

प्रसाद—पु० = मेहरबानी

प्राची – स्त्री० = पूर्व, पूर्वदिशा ।

प्राज्ञ—पु० = बुद्धिमान आदमी ।

प्राण—पु० —(बहुबचन) = जीव, जान ।

प्राणिन्—पु० = जीव, जानवर ।

प्रातर्—अव्यय = सबेरे ।

प्राप्त—(प्र + आप् का निष्ठा) पहुंच कर, पाकर ।

प्रायस् – अव्यय = बार बार, बहुधा, लगभग ।

प्रावीण्य—न० = प्रवीणता ।

प्राश्निक—पु० = परीक्षा लेनेवाला, प्रश्न करनेवाला ।

प्रासादतल—पु० = (प्रासाद-पु० = देवता या राजा का महल + तल—न० = सतह) = महल के ऊपर की छत ।

प्रिय—गु० = प्यारा ।

प्रियवादित्व—न० = बोली का मीठापन ।

प्रियवादिन्—गु० = मीठा बोलनेवाला ।

प्री – [प्रीण] १० गण-प० = प्रसन्न करना ।

प्रीति—स्त्री० = स्नेह, मुहब्बत ।

प्रेमन्—पु० = प्यार ।

प्रेयस्—गुण = बहुत प्यारा ।

प्लु—१-आ० (वि-) = तिरना, पानी पर डामाडोल फिरना ।

फ

फल्—१ गण-प० = फलना, पूरा होना ।

फल—न० = फल, मेवा ।

फलाशिन्— गुण = फलाहारी, फल खानेवाला ।

ब

बचन – न० = कथन, कहना ।

बन्—न० = जङ्गल ।

बन्धु—पु० = सम्बन्धी, रिश्तेदार ।

बल – न० = सेना, फौज, ताकत, जोर ।

बलि—पु० = बलिदान ।

बहिस्—अव्यय = बाहर (अपादान के साथ आता है)।

बहु – गुण = बहुत से।

बहुशस्—अव्यय = बहुधा, बहुत दशाओं में।

बाण—पु० = तीर।

बाल—पु० = बच्चा।

बाहु—पु० = भुजा।

बाहुल्य—न० = अधिकता।

बिड़ाल—पु० = विलाव।

बिना—अव्यय = वगैर।

बिन्दु - पु० = बूंद।

बिम्ब—न० = मण्डल।

बीज—न० = बीज।

वीर—पु० = बहादुर।

वीर्य—न० = बहादुरी।

बुद्धि—स्त्री० = अक़ल।

बुध्—१ गण-प० = जानना, समझना।

बुध—पु० = बुद्धिमान।

वैर न० = दुश्मनी।

ब्रह्मन्—पु० = संसार का रचनेवाला, ब्रह्मा।

ब्राह्मण—पु० = ब्राह्मण, बामन।

भ

भक्त—पु० = भक्त।

भक्ति—स्त्री० = स्नेह।

भक्ष्—१० गण-प० = खाना।

भगवत्—गुण = बड़ा ईश्वर।

भङ्ग—पु० = टूटना।

भज्—१ गण—आ०प० = भजना, आश्रय होना, लगना।

भद्र - पु० = अच्छा होना लाभ।

भय - न० = डर।

भर्तृ—पु० = पति, स्वामी।

भर्त्स्—१०-आ० = धमकाना।

भर्मन्—न० = घर।

भवत्—सर्वनाम, आप।

भागीरथी—स्त्री० = गङ्गा।

भानु—पु० = सूर्य्य, सूरज।

भार—पु० = बोझ।

भारतवर्षीय—पु० = हिन्दुस्तान का रहनेवाला।

भार्या—स्त्री० = बहू।

भाविन्—पु० = होनेवाला।

भाष्—१ गण-उ०प० = बोलना, (प्रति-) = उत्तर देना।

भिक्ष्—१ गण-आ०प० = मांगना।

भिक्षुक—पु० = भिखारी।

भीम—पु० = पाण्डु के बेटे का नाम।

भू—(भव्) १ गण-प० = होना, (उद्-) = उत्पन्न होना।

भूत—न० = जानवर।
भूति—स्त्री० = अभ्युदय, इक़बाल
भूप – पु० = राजा।
भूभृत्—पु० = राजा, पर्वत।
भूमि—स्त्री० = जमीन, पृथ्वी, धरती।
भूयस्—गु० = बहुत बड़ा।
भूरि—गु० = बहुत।
भूष्—१० गण-प० = गहना पहनना या पहनाना।
भूषण—न० = गहना, जेवर।
भृ – (भर्-)—१ उ० = भरना।
भृत्य—पु० = नौकर।
भोग—पु० = खुशी।
भोज – न० = खाना।
भोस्—अव्यय – सम्बोधन का पद।
भ्रम्—४-प० = फिरना।
भ्रमर—पु० = भौंरा, मक्खी।
भ्रस्ज्—६ उ०प = भूनना।
भ्रातृ—पु० = भाई।
भ्राश्, भ्लाश्— } ४-आ० = चमकना।

—***—

म

मण्डप—पु० = झोपड़ा, मांड़ा।
मणि – पु० = जवाहर।
मणिकार—पु० = जौहरी।
मति—स्त्री० = समझ।
मत्स्य—पु० = मछली, मच्छ।
मद—४-प० = पागल होना, गलती करना।
मद – पु० = नशा, गुस्ताखी, मस्ती, गर्व।
मदन – पु० = कामदेव।
मदिरा – स्त्री० = शराब।
मधु—न० = शहद।
मधुरम्—गु० = मीठेपन से।
मन्—४ गण-आ०प० = (अव्) न मानना, (अनु-) मानना, राजी होना।
मनस् – न० = मन।
मनु—पु० = हिन्दुओं का कानूनकर्ता, आदि पुरुष।
मन्त्—१० गण-आ०प०—१ प० = सलाह लेना या करना (नि-) = बुलाना।
मन्त्र—पु० = वेद का मन्त्र, तन्त्र।
मन्द—गु० = सहज, आहिस्ता।

मरुत्—पु० = हवा या उसका देवता।
महिमन्—पु० = बड़ाई।
महिष—पु० = भैंसा।
महिषी—स्त्री० = रानी जो गद्दी पर हो, पटरानी।
मही—स्त्री० = धरती।
महोत्सव पु० = खुशी, मेला, धूम धाम।
मा, माङ्—अव्यय = मत, नहीं।
मा—[मी]-४-आ०प० (निर्-) = पैदा करना।
मांस—न० = मांस, गोश्त।
माणवक—पु० = एक मनुष्य का नाम, लड़का।
मातृ—स्त्री० = माता, मा।
माधुर्य—न० = मीठापन, मिठास।
मानव—पु० = मनुष्य।
मारुत—पु० = हवा या उसका देवता।
मार्ग्—१० गण-प० = ढूंढ़ना।
मार्ग—पु० = सड़क, रास्ता।
माला—स्त्री० = माला।
माष—पु० = उड़द।
मास—पु० = महीना।
मित्र—न० = मित्र, दोस्त।
मुक्ता—स्त्री० = मोती।
मुक्ति—स्त्री० = मोक्ष।
मुख—न० = मुंह।
मुच्—६-प० = छोड़ना।
मुद् (मोद्)—१ गण—आ०प० = खुशी मनाना, खुशी होना।
मुष्टि—पु० = मूठी भर।
मुह्—४-प० = बेहोश होना, मूर्छित होना।
मूक—गु० = चुप, गूंगा।
मूर्ख—पु० = मूर्ख।
मूर्छ्—१-प० = मूर्छा में होना, बेहोश होना।
मूर्ति—स्त्री० = तसबीर, मूरती।
मूर्तिमत्—गु० = मूर्तीवाला।
मूल—न० = जड़, पैर।
मृ (म्रिय्)—६-आ०प० = मरना।
मृग्—१०-आ०प० = ढूंढ़ना।
मृग—पु० = हिरण।
मृणालिका—स्त्री० = कंवल की डण्डी।
मृत्यु—पु० = मौत।
मृद्—स्त्री० = मिट्टी।
मृदु—गु० = नरम, मुलायम।
मृश्—६ प० = जांचना, परीक्षा करना।

मेघ—पु० = बादल ।

मेधाविन्—पु० = बुद्धिमान ।

मोक्ष—पु०—मुक्ति, मोक्ष ।

मोदक—पु० = लड्डू , मिठाई ।

मौन—न० = चुप, गूंगा ।

म्ना—१-प० = बिचारना ।

य

यक्ष—पु० = कुबेर का नौकर ।

यज्—१ गण-उ०प० = पूजा करना ।

यजमान—पु० = यजमान, यज्ञ करनेवाला ।

यज्ञीय—गु० = यज्ञ से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु ।

यत्—१ गण-आ०प० = यत्न करनी, तदबीर करनी ।

यतः—अव्यय = जहां से ।

यति—पु० = साधू , जितेन्द्री ।

यत्न पु० = उपाय ।

यत्र - अव्यय = जहां ।

यथा—अव्यय = जिस प्रकार से, जैसे ।

यदा—अव्यय = जब ।

यन्त्र—न० = कल ।

यम—पु० = मौत का देवता ।

यशस्—न० = यश, प्रसिद्धता ।

यशस्वत्—गु० = प्रख्यात, यशवाला ।

यस्—१-४-प० = उद्योग करना ।

याच्—१ गण-आ०प० = मांगना।

याचक—पु० = भिखारी, मँगता।

यातृ—स्त्री० = दौराणी या जिठानी ।

यात्रिक—पु० = यात्री, तीर्थ को जानेवाला ।

युज्—१-४-प० = जोड़ना ।

युद्ध—न० = लड़ाई ।

युध्—४ गण-आ०प० = लड़ना ।

यूथ—न० = झुण्ड पशु पक्षियों का

योगिन्—पु० = यति ।

योजन—न० = चार कोस ।

योधा—पु० = लड़नेवाला सिपाही।

र

रक्त—गु० = लाल ।

रक्ष्—१ गण-प० = पालना, बचाना ।

रक्षक—गु० = पालनेवाला, पहरायती ।

रक्षण—न० = बचाव ।

रक्षस्—न० = भूत, राक्षस ।

रक्षित—पु॰ = बचानेवाला।
रघु - पु॰ = रघु राजा के बंश के (बहुबचन में)।
रङ्क—गु॰ = भिखारी, दीन।
रच्—१० गण-प॰ = रचना।
रजत—गु॰ = चाँदी का बना हुआ, चांदी।
रजनी—स्त्री॰ = रात।
रजस्—न॰ = रेत, धूर, धूल, रजोगुण।
रज्जु—स्त्री॰ = रस्सो।
रति—स्त्री॰ = खुशी, कामदेव की स्त्री।
रत्न—न॰ = जवाहिर।
रथ—पु॰ = रथ, बग्गी।
रथ्या - स्त्री॰ = सड़क, गली।
रथ्यारुहमान—पु॰ = (रथ्या-पु॰ = रथ का घोड़ा + आरुह्यमान-रुह् का शनच् प्रत्ययान्त) = घोड़े पर सवार।
रभ्—१ गण-आ॰प॰ (आ—) = शुरू करना, काम में लाना।
रम्—१ गण-आ॰ = खेलना, दिल बहलाना, खुश होना।
रमण—पु॰ = पति, प्यार करनेवाला।
रमा—स्त्री॰ = लक्ष्मी, एक लुगाई का नाम।
रम्य - गु॰ = खुश करनेवाला खूबसूरत, सुन्दर।
रवि – पु॰ = सूर्य सूरज।
रस—पु॰ = रस, मज़ा।
राक्षस—पु॰ = दुष्ट पुरुष, भूत।
राज्—वि के साथ-१० गण-प॰ = चमकना, सुन्दर लगना।
राजन् – पु॰ = राजा।
राजपुरुष—पु॰ = राजा का आदमी या नौकर।
राज्ञी—स्त्री॰ = रानी।
राज्य—न॰ = राज्य।
रात्रि—स्त्री॰ = रात।
रावण - पु॰ = लंका का राजा।
राशि—पु॰ = ढेर।
राष्ट्र न॰ = देश का नाम।
रि—६-प॰ = जाना, चलना।
रिच्—१ १०-प॰ = अलग २ करना, बिभाग करना।
रिष्व—गु॰ = दुःख देनेवाला।
रुक—गु॰ = दातार, सखी।
रुच्—(रोच्)-१ गण-आ॰ = खुश या प्रसन्न करना।
रुद्—रोना (केवल कर्मवाच्य में)

रुध्—४-आ०-(अनु—) = आज्ञा मानना, (नि-) = रुकना, रोका जाना।

रुह्—१ गण-प० = उगना (प्र—) बढ़ना, (आ—) = चढ़ना।

रूप्—१० प० = (आ-) = रखना, लगाना, बाँधना।

रेरे—सम्बोधन = ओ ! ओ !

ल

लच्—१०-उ०प० = (सम्-) = जाँचना।

लक्ष्मण—पु० = राम का भाई।

लक्ष्मी—स्त्री० = विष्णु की स्त्री, धन की देवी।

लघु—गु० = छोटा।

लघिमन्—पु० = छोटाई।

लङ्घ्—१-उ०प० = कूदना, छलांग मारना।

लज्ज्—६-आ० = लज्जित होना।

लज्जा—स्त्री० = लाज, शरम।

लता—स्त्री० = बेल।

लप्—१-प० = बोलना।

लभ्—१ गण-आ० = पाना, प्राप्त करना।

ललना—स्त्री० = औरत।

लव—पु० = राम के बेटे का नाम।

लवण—गु० = खारी, लूण, निमक।

लष्—१-४-प० = इच्छा करना।

लाङ्गूल—न० = पूंछ।

लाभ—पु० = फायदा।

लाहल—गु० = लोहे का बना हुआ।

लिप्—६-उ०प० = लेपना, लीपना, सानना।

लुट्—४-गण-प० = लोटना।

लुभ्—४-प० = लोभ करना।

लोक—पु० = आदमी, संसार।

लोभ—पु० = लालच।

व

वंश—पु० = कुल।

वक्तृ—गु० = बोलनेवाला।

वक्रित—गु० = टेढ़ा, मुड़ा हुआ।

वक्षस्—न० = छाती।

वच्—(केवल कर्मवाच्य में) = बोलना, कहना।

वचन—न० = उपदेश, प्रार्थना।

वचनीय—गु० = निन्दनीय।

वचस्—न० = बोली, बचन।

वञ्चित (वच् का निष्ठा) = धोखा दिया गया ।

वत् – अव्यय = समान, मानिन्द, सदृश ।

वत्स—पु० = बालक ।

वद्—१-प० = बोलना ।

वध—पु० = मारना ।

वधू—स्त्री० = बेटे की बहू ।

वन्द् – १ गण—आ० = नमस्कार करना, प्रणाम करना ।

वनौकस्—पु० = जङ्गल में रहने-वाला ।

वयस्—न० = उमर, पत्ती ।

वयस्य—पु० = साथी, मित्र ।

वर—पु० = वरदान ।

वराह—पु० = सूअर ।

वर्ण्—१०गण-प० = वर्णन करना।

वर्ण—पु० = जाति, रङ्ग ।

वर्त्मन्—पु० = रास्ता ।

वल्लभ—पु० = पति, प्यारा ।

वस्—१ गण-प० = बोलना ।

वसत्—शतृ प्रत्ययान्त = रहता हुआ ।

वसति—स्त्री० = रहने की जगह, वसती ।

वसन्त—पु० = वसन्त ऋतु ।

वसु—न० = धन ।

वसुधा स्त्री० = पृथ्वी, धरती ।

वस्त्र न० = कपड़ा ।

वह् –१गण-प० = लेजाना, वहना

वा—अव्यय = या ।

वाक्य – पु० = वाक्य ।

वाचा—स्त्री० = बोली ।

वाञ्छ्—१-प० = चाहना ।

वात—पु० = हवा ।

वातायन—न० = खिड़की, जाली

वाद्—१०-आ० = (अभि-) = आदर करना, नमस्कार करना ।

वापी स्त्री० = कुवा, बावड़ी ।

वायस पु० = कव्वा ।

वायु—पु० = हवा ।

वारि—न० = पानी ।

वार्ता—स्त्री० = खबर हाल ।

वास – पु० = रहने की जगह ।

वासस्—न० = कपड़ा ।

वासुदेव—पु० = देवता, कृष्ण के पिता का नाम ।

विकार—पु० = स्वरूप का बदलना ।

विकास – पु० = निकलना, बन जाना ।

विक्रम—पु० = बहादुरी ।
विग्रह—पु० = लड़ाई ।
विघ्न—पु० = रोक, रुकावट ।
विच्छ्—६—प० = चलना, १०—उ०प० = चमकना, बोलना ।
विजय—पु० = जीतना ।
विद्या—स्त्री० = इल्म, ज्ञान ।
विद्युत्—स्त्री० = विजली ।
विद्वस्—गु० = पढ़ा लिखा ।
विधि—पु० = कर्म, भाग्य, रीति ।
विनय—पु० = विनय, आजिजी ।
विनाश—पु० = वरवादी ।
विपत्ति—स्त्री० = दुःख ।
विपद्—स्त्री० = आपदा दुःख ।
विविध—गु० = कई प्रकार का ।
विभव—पु० = धन ।
विमार्ग पु० = खराब रास्ता ।
विमुख—गु० = मुंहफेरे, विरोधी ।
वियत्—न० = आकाश ।
विराव—पु० = चिल्लाना ।
विरूप—गु० = कुरूप ।
विवर—न० = गुफा, छेद ।
विवाह—पु० = व्याह, शादी ।
विश्—६—प० = वड़ना, भीतर जाना ।
विशुद्ध—स्त्री० = सफाई, पवित्रता

विश्व—न० = कुल संसार ।
विश्वकर्मन्—पु० = देवताओं का चेजारा ।
विश्वामित्र पु० = नाम ।
विश्वास—पु० = यकीन ।
विष—न० = जहर ।
विस्पष्ट—गु० = साफ, चौड़े ।
विहग—पु० = पक्षी, चिड़िया ।
विहित—(वि + धा का निष्ठा = कहा गया, वर्णन किया गया ।
वृ—१-१०-उ०प० = चुनना, पसन्द करना, (परि) = घेरना (केवल कर्म वा भाववाच्य) ।
वृक्ष—पु० = बोझा, पेड़ ।
वृज्—१-१०-प० = छोड़ना, नफरत करना, घृणा करना ।
वृत्—(वर्त्)—१-आ० = होना, (नि-) = लौटना, (प्रति- = उलटा लौटना, आना ।
वृत्ति—स्त्री० = काम, पेशा, जीविका ।
वृथा—अव्यय = वेफायदा ।
वृद्धिमत्—गु० = बढ़ता हुआ ।
वृध् (वर्ध्)—१ गण आ० = बढ़ना
वृन्त—न० = पत्ते या फल की डण्ठल, नाका ।

वृष—पु० = बैल, सांड ।
वेद—पु० = वेद ।
वेधस्—पु० = ब्रह्मा ।
वेप्—१ गण-आ० = काँपना ।
वैयात्य न० = गवारपना ।
व्यथा—स्त्री = दरद, पीड़ा ।
व्यध्—४ गण-प० = मारना ।
व्याघ्र—पु० = बघेरा ।
व्याध—पु० = शिकारी ।
व्याधि—पु० = रोग ।
व्याल—पु० = सांप, बघेरा, शिकारी जानवर ।
व्रज्—१ गण-प० = जाना ।
व्रश्च—६ गण-प० = काटना, फाड़ना ।
व्रीहि—पु० = चावल ।

श

शकुन्तला—स्त्री० = नाम ।
शङ्क्—१ गण-आ० = शक करना, सन्देह करना ।
शङ्का—स्त्री० = संदेह, शक ।
शठ—पु० = दुष्ट ।
शत—न० = सौ ।
शत्रु—पु० = बैरी ।
शद्—१-आ० = नष्ट होना, नश होना ।
शनैस्—अव्यय = सहज सहज ।
शम्—४ गण-प० = शान्ति, चैन से होना ।
शम्—अव्यय = सुख ।
शम्बूक—पु० = एक आदमी का नाम ।
शम्भु—पु० = शिव, देवता ।
शर—पु० = तीर ।
शरद्—स्त्री० = जाड़े का मौसम ।
शरीर—न० = देही, बदन ।
शव—न० = लाश ।
शस्—१-आ० (आ—) = आशा करना ।
शस्त्र—न० = हथियार ।
शाखा—स्त्री० = टहनी, डाली ।
शान्ता—स्त्री० = नाम, राम की बहिन ।
शासत्—शतृ प्रत्ययान्त— राज करता हुआ ।
शासन—न० = हुक्म, आज्ञा, राज्य ।
शास्त्र—न० = शास्त्र ।
शिक्ष्—१-आ० = सीखना, याद करना, पढ़ना ।

शिखर—पु० = चोटी ।

शिखरिन्—पु० = पहाड़, पेड़ ।

शिरस् – न० = शिर ।

शिला—स्त्री० = पत्थर, सिल ।

शिष्य—पु० = चेला ।

शिशु—पु० = बच्चा, बालक ।

शीर्ष—न० = सिर ।

शुक—पु० = तोता, सुआ ।

शुक्लपक्ष—पु० = सुदी ।

शुच्—१-प० = शोचना, शोच करना ।

शुभ्—(शोभ्)-१ गण-आ० = सुन्दर लगना ।

शुभ—गु० = अच्छा ।

शुष्—४ गण—प० = शोषना, सूखना ।

शूद्र—पु० = सब से नीच, सेवक, व शिल्पी ।

शूद्रक—पु० = एक राजा का नाम

शूलिन्—पु० = शिव का नाम ।

शृगाल—पु० = गीदड़ ।

शो—४ गड़—परस्मैपद ।

शोभन—गु० = अच्छा ।

शोभा—स्त्री० = सुन्दरता ।

शौर्य – न० = बहादुरी ।

शंस्—१ गण-प० = प्रशंसा करना, कहना ।

श्याम—गु० = काला ।

श्यामिका—स्त्री० = मैलापन ।

श्रद्धा—स्त्री० = भरोसा ।

श्रम—(श्राम्) ४ गण-प० = थकना, मेहनत करना ।

श्रवण—न० = सुनना, कान ।

श्रीमत्—गु० = बड़ा इकबालमन्द

श्रु = सुनना (केवल भाव, या कर्मवाच्य में) ।

श्रुति—स्त्री० = सुनना, पुस्तक ।

श्रेयस्—गु० = बहुत अच्छा ।

श्रेष्ठ—गु० = सब से अच्छा ।

श्रोतृ—पु० = सुननेवाला ।

श्लथ—गु० = ढीला ।

श्लाघ्—१ गण-आ० = प्रशंसा करना ।

श्लिष्—४ गण-प० = मिलना (बाँध घाल कर) ।

श्लोक—पु० = श्लोक ।

श्वश्रू—स्त्री० = सासू, सास ।

श्वस्—अव्यय = कल जो आवेगा ।

श्वान—पु० = कुत्ता ।

श्वापद—पु० = शिकारी जानवर (चौपाया)

श्वेत—गु० = सफेद, धौला ।

—***—

ष

ष्ठिव्—१-४-प० = थूकना ।

स

सकाश—गु० = पास ।

सखी—स्त्री० = भायली, सहेली ।

सङ्गीत—न० = गान विद्या ।

सङ्घात—पु० = समूह, संग्रह ।

सचिव—पु० = मन्त्री ।

सजन—गु० = मनुष्यों से बसा हुआ ।

सञ्चलन—न० = इधर उधर फिरना ।

सञ्ज्—१-प० = चिपकना ।

सत्—(शतृ प्रत्ययान्त) होता हुआ।

सत्व—न० = सच्चाई, भलाई ।

सदा—अव्यय = नित्य, हमेशा ।

सदाचार—पु० = नेकचलन ।

सदैव—अव्यय = सदा, हमेशा ।

सद्मन् - न० = घर ।

सन्तप्त—(सम् + तप् का निष्ठा) = गरमी का सताया हुआ ।

सन्देश—पु० = सन्देशा, खबर ।

सन्देह—पु० = शक ।

सन्निधि—पु० = आस पास ।

समया—अव्यय = पास ।

समराङ्गण—न० = लड़ाई का मैदान ।

समर्थ—गु० = लायक, शक्तिमान ।

समाज—पु० = सभा ।

समुद्र—पु० = समुद्र ।

समूह—पु० = झुण्ड, भीड़ ।

समृद्धि–स्त्री० = बहुत अधिकता से ।

सम्पद्—स्त्री० = धन, इकबाल ।

सम्भार—पु० = तयारी, सामग्री, सँभालना ।

सम्मार्जन—न० = बहारना, साफ़ करना ।

सम्यक्—गु० = अच्छा, हां ।

सम्यक्नेतृ—पु० = ठीक चलानेवाला ।

सरस्—न० = झील, तालाब ।

सर्प—पु० = सांप

सर्वत्र—अव्यय = सब जगह ।

सर्वथा—अव्यय = कुल, बिलकुल, सब तरह से ।

सव्येष्टृ—पु० = रथवान ।

सह—अव्यय = साथ ।

सह्—१ गण-आ०प० = सहना ।

सह्—४ गण-प०, १ गण-आ० = सहना ।

सहचरी—स्त्री० = दासी, साथ चलनेवाली ।

सहसा—अव्यय = अचानक, जल्दी से ।

साधु—पु० = ऋषि, पवित्र मनुष्य, गु० = अच्छा ।

सान्त्व—१० गण प० = ठण्डा करना ।

सामि—अव्यय = आधा ।

सायम्—अव्यय = साँझ में (को) ।

सारथि—पु० = रथवान ।

सारमेय—पु० = कुत्ता ।

सार्थ—पु० = झुण्ड, काफिला ।

साशङ्क—गु० = शकवाला ।

सिच्—६ गण—प० = छिड़कना, सींचना ।

सिंह—पु० = शेर ।

सिंहासन—न० = गद्दी, तख़्त ।

सीता—स्त्री० = राम की बहू ।

सीमन्—स्त्री० = हद्द ।

सुकृत—न० = अच्छा कर्तव्य ।

सुकृति—स्त्री० = अच्छा काम ।

सुख—न० = अच्छा काम ।

सुखभाज् गु० = खुश, जो आनन्दपूर्वक रहते हों ।

सुजन—पु० = अच्छा मनुष्य ।

सुमन्त्र—पु० = राम का रथवान ।

सुरभि—गु० = सुगन्धवाला ।

सुवर्ण—न० = सोना ।

सुवर्णकार—पु० = सुनार ।

सुवृत्ति—गु० = अच्छा ।

सुष्ठु—अव्यय = अच्छा ।

सुहृद्—पु० = मित्र ।

सूक्त - न० = वेद के सूक्त ।

सूत्रधार—पु० = नाटक में मुख्य काम करनेवाला ।

सूद्—१ गण-आ०(नि-) [निषूद] = तबाह करना, मारना, क्षीण करना ।

सूद - पु० = रसोइया ।

सूनु—पु० = बेटा ।

सूर्य—पु० = सूरज ।

सृ—१ गण-प० = सरकना, चलना, अनु के साथ = पीछे २ जाना ।

सृ [धौ]—१-प० = दौड़ना ।

सृज्—६ गण-प० (अति-) = देना ।

सृष्टि - स्त्री० = संसार ।

सेना—स्त्री० = फौज ।

सेनापति—पु० = फौज का अफसर ।

सेव्—१ गण-आ० = सेवा करना, खिदमत करना ।

सैनिक – पु० = सिपाही।
सो—४ गण-प० = मारना।
सोत्कण्ठ—गु० = फिकरमन्द।
सोम—पु० = एक पेड़ जो यज्ञ में काम आता है या उसका रस।
सौन्दर्य—न० = खूबसूरती।
संश्रय – पु० = ठहरने का स्थान।
संसार—पु० = दुनियां, जगत।
स्कन्ध – पु० = कन्धा।
स्तुति—स्त्री० = प्रशंसा, तारीफ।
स्तेन—पु० = चोर।
स्था [तिष्ठ]—१ गण-त० = खड़ा होना, ठहरना, (उद्-) = उठना (स्थी कर्मवाच्य में)
स्थान—न० = जगह।
स्नान—न० = नहाना।
स्निग्ध—गु० = प्यारा
स्नेह—पु० = मोहब्बत, प्यार।
स्पन्द – १ गण-आ० = फड़कना, फरकना।
स्पर्ध—१ गण-आ० = ईर्षा करना।
स्पृश् – ६ गण-प० = छूना।
स्पृह् – १० गण-प० = चाहना।
स्फुर् – ६ गण-प० = फरकना।
स्मि – (स्मय्) १ गण-आ० (वि-) = हँसना।

स्मृ – १ गण-प० = याद रखना, (वि-) = भूलना।
स्मृति – स्त्री० = याद, हिन्दुओं के कानून की पुस्तक।
स्रंस्—१-आ० = गिर जाना।
स्रष्टृ – पु०-गु० = रचनेवाला बनानेवाला।
स्वञ्ज् – १ गण-आ० = बांथ भरना।
स्वप्न – पु० = सुपना।
स्वयम् – अव्यय = अपने आप।
स्वर्ग – पु० = स्वर्ग।
स्वसृ – स्त्री० = बहिन।
स्वस्ति – अव्यय = कल्यान।
स्वस्थ – गु० – चैन में, तन्दुरुस्त।
स्वाद् – १ गण-आ० = चाखना।
स्वामिन्—पु० = स्वामी।
स्वास्थ्य – न० = तन्दुरुस्ती, आरोग्य
स्वीय – गु० = अपनाही।

ह

हन् – मारना (कर्मवाच्य या भाव वाच्य ही में)।
हरण – न० = ले जाना।
हरि – पु० = एक आदमी का नाम या इन्द्र देवता।
हरिण – पु० = हिरन।

हर्म्य – न० = महल ।

हविस्—न० = होम की सामग्री।

हस्—१-प० (वि-) = हँसना

हालिक पु० = पाल्ती, किसान, हल चलानेवाला ।

हालिनी स्त्री० = छिपकली ।

हाली – स्त्री० = छोटी साली ।

हालु—पु० = दाँत ।

हि—(प्र-) = भेजना (केवल कर्म वा भाववाच्य में)

हिञ्जीर पु० = रस्सी, या हाथी के पैर बाँधने की जञ्जीर ।

हित – न० = लाभ ।

हितकर – गु० = लाभदायक ।

हिम—न० = बरफ ।

हिरण्यगर्भ—पु० = हंस का नाम, नाम विष्णु का भी ।

हिरुक् अव्यय = बिना ।

हुतभुज्—पु० = आग ।

हृ –(हर) १ गण-प० = लेजाना, (प्र-) = मारना, पीटना, (वि-) = खेलना, बहलाना; (परि-) = छोड़ना, अलग होना, (आ-) = खाना, यज्ञ करना ।

हृदय न० = दिल मन ।

हे – अव्यय, ओ, सम्बोधन में ।

हेमन् न० = सोना ।

होतृ—पु० = यज्ञ करानेवाला ।

हंस पु० = हंस ।

ह्यस्—अव्यय = कल जो बीत गया

ह्वे—(ह्वय्) १ गण—प०-बुलाना, पुकारना ।

ह्लाद्—१० गण-उ० (आ-) = खुश करना ।

भाषा-शब्दावली ।

अ

अक़्ल = बुद्धि—स्त्री० ।

अङ्ग = गात्र—न० ।

अंग्रेज = अङ्गल - पु० ।

अचम्भा = आश्चर्य—न० ।

अचम्भे मे आना = स्मि (स्मय) १ गण आ०प० (वी) ।

अचल = अक्षर—गु० ।

अचानचक = अव्यय—सहसा ।

अच्छा = सुष्टु, अव्यय, सम्यक्, गु० श्रेष्ट—गु०—शुभ—गु०-भद्र—न०—अच्छ, पु०—शोभन, गु० सुवृत्त, गु० ।

अच्छा कर्तव्य = सुकृत—न०, सुकृति—स्त्री० ।

अच्छा चालचल = सदाचार—पु०

अच्छा मनुष्य = साधु - पु०, सुजन—पु० ।

अति इच्छा = उत्कण्ठा—स्त्री० ।

अधिकता = वाहुल्य—न०, समृद्धि—स्त्री० ।

अध्यापक = आचार्य—पु० ।

अनगिनत = असंख्येय—गु० ।

अनजानपना = अज्ञान - न० ।

अंधेरा = तमस्—न०

अपना = स्वीय—गु०, आत्मीय-गु०

अपने आप = स्वयम् - अव्यय ।

अपमान करना = धोर् १० गण आ०प० (अव—) ।

अपराधी = अपराधिन्—पु० ।

अब = अधुना—अव्यय ।

अभ्यास करना = चर्—१ गण—प० (अ-) ।

अभ्युदय = भूति—स्त्री० ।

अरघा = अर्घ्य—न० ।

अर्ज़ करना = अर्थ् (प्र-) (केवल कर्मवाच्य में) ।

अलग करना = हृ-१उ०प० (परि-)

अशीस = आशीर्वाद—पु० ।

असलियत = तत्व—न० ।

अहसाननन्दी = कृतज्ञता—स्त्री० ।

—※※✿—

आ

आंसू = अश्रु—न० ।
आकाश = वियत् न० अम्बर् —न०, नभस् न० ।
आग = अनल—पु०, अग्नि पु० ।
आंख = नेत्र न०, नयन न०, चक्षुस् न० ।
आचरण = चरित—न० ।
आज = अद्य – अव्यय ।
आजिज़ी = विनय – पु० ।
आज्ञा = निर्देश, पु०, शासन, न० आदेश, पु० ।
आज्ञा करता हुआ = चोदयत् (शतृ प्रत्ययान्त) ।
आज्ञा करना = दिश् (आ—) ६ गण पु० ।
आज्ञा मानना = रुध्-४ गण-आ० प० (अनु-) ।
आँच = अनल, अग्नि, हुतभुज् पु०
आत्मा = आत्मन्, पु०, अन्तरात्मन् पु० ।
आदमी = जन, नर, पुरुष, लोक, मानव, नृ, पुमस्, पु० ।
आदर करना = वाद् १० गण-आ० प०—अभि-) ।
आदर सनमान = प्रश्रय—पु० ।
आदि = आरम्भ—पु० ।
आधा = सामि अव्यय, नेम (सर्वनाम)
आनन्दपूर्वक = जोषम् अव्यय ।
आप = भवत् सर्वनाम ।
आपदा = विपद्, स्त्री० आपद् स्त्री०
आभूषण = अलङ्कार—पु० ।
आम = आम्र—न० ।
आराम = सुख—न० ।
आरोग्य = स्वास्थ्य—न० ।
आवाज़ = ध्वनि—पु० ।
आवाज़ करना = घुष् १० गण-प०
आशा करना = ईक्ष् १ गण आ० प० (अप-) शस् १ गण-आ०प० (आ-) ।
आसपास = सन्निधि—पु० ।
आसमान = आकाश, न०, नभस्, न०, वियत्, अम्बर न० ।
आहिस्ता = मन्द—गु० ।

इ

इक़बाल = भूति, स्त्री०, सम्पद् स्त्री०
इक़बालमन्द = श्रीमत्—गु० ।
इङ्गलंण्ड = अङ्गलभूमि—स्त्री० ।

इच्छा = तृष्णा, स्त्री० अभिलाष, पु०, कुतूहल न० ।

इच्छा करना = लष्—१-४ प० ।

इजाज़त = अनुज्ञा—स्त्री० ।

इत्थम् = एवम् ।

इनाम = पारितोषिक—न० ।

इन्द्र का वज्र = पवि—पु० ।

इलाज = उपाय, पु०, प्रतीकार, पु०

इल्म = विद्या—स्त्री० ।

इस प्रकार से = अथ अव्यय, इति (अन्त में) अव्यय ।

इसलिये = अतः, अव्यय (आदि में)

ई

ईमानदारी = ऋजुता—स्त्री० ।

ईर्षा करना = स्पर्ध् १-आ ।

ईश्वर = भगवत्-पु०, दिवौकस् पु०

उ

उखाड़ा हुआ = उद्धृत (हृ का निष्ठा—उद् के साथ)

उगना = रुह्—१ गण प० ।

उजाला = तेजस्—न० ।

उछलना = पत् (उद्) १ गण-प० ।

उठना = स्था (तिष्ठ्) १ गण प० (उद्-), पत्-१ गण प० (उद्-)

उठाना = धृ—१-उ-प० (उद्-)

उठाया हुआ = उद्धृत (हृ का निष्ठा-उद् के साथ)

उड़ना = डी (डय्) १ गण-आ०प

उतरता हुआ = अवतरत् (अव् + तृ का शतृ प्रत्ययान्त) ।

उतरना = तॄ (तर्) १ गण—प० (अव्-) ।

उत्कण्ठा = कुतूहल न० ।

उत्तर देना = भाष्—१-आ०प० (प्रति-) ।

उत्पन्न होना = भू (भव्) (उत्-) १ गण-प० जन् (जा) ४ गण-प०

उद्योग = उद्यम—पु० ।

उद्योग करना = यम्-१-४-प० ।

उपदेश = वचन—न० ।

उपाय = यत्न—पु० ।

उमग = उत्साह—पु० ।

उमर = वयस्—न० ।

उम्मेद = आशा—स्त्री० ।

उलटा लौटना = वृत्—१-आ०प० (अति और नि-) ।

उस प्रकार = तथा—अव्यय ।

उसी समय = उवाह्निकम् अव्यय, (का) ।

—***—

ऊ

ऊँचा = उच्चैस्—अव्यय ।

ऐ

ऐसा = इति, एवम्—अव्यय ।

ओ

ओ = हे, अव्यय, सम्बोधन में ।

ओ ओ = रे रे—अव्ययसम्बोधन में

ओछा = क्षुद्र—गु० ।

औ

और = च—अव्यय ।

औरत = कान्ता, भार्या, ललना, स्त्री० ।

क

कई प्रकार का = विविध, गुण ।

कँवल = कमल—न० ।

कँवारी कन्या = कुमारी, स्त्री० ।

कचहरी = न्याय सभा, स्त्री० ।

कच्चा = आम, गु० ।

कछुआ = कूर्म, पु० ।

कथन = वचन—न० ।

कन्धा = स्कन्ध - पु० ।

कपड़ा = वस्त्र, न०, वासस्, न० ।

कब = कदा—अव्यय ।

कभी नहीं = न कदापि ।

कमान = चाप, पु० धनुस्—न० ।

कमीना = क्षुद्र—पु०, स्त्री०, न० ।

करज़दार = अधमर्ण—पु० ।

करता हुआ = कुर्वत् - (शतृ प्रत्ययान्त) ।

करना = क्र (केवल कर्मवाच्य में)

करना = अनुष्ठान—न० ।

करनेवाला = कर्तृ—पु० ।

कर्म = विधि—पु० ।

कल = यन्त्र—न० ।

कल जो आवेगा = श्वस्, अव्यय ।

कल जो बीत गया = ह्यस्, अव्यय

कल्याण = स्वस्ति, अव्यय ।

कव्वा = काक, पु० ।

कसूर = अपराध, पु० (प्रयास, पु०)

कहना = कथ्—१० गण-प०(चय्)

कहाँ = क्व—अव्यय, कुत्र ।

कहाँ से = कुतः, अव्यय ।

कहानी = कथा – स्त्री० ।

काका = पितृव्य,—पु० ।

काटना = कृत्—६-प०, (खेतका) छो—४-प० ।

काँटा = कण्टक—पु०—न० ।

कान = श्रवण, न० ।

काफ़ला = सार्थ—पु० ।

काम = कार्य—न०, कृति, स्त्री०, वृति, स्त्री०, कर्मन्, न० ।

कामदेव = मदन—पु० ।

काँपना = कम्प्—१ गण आ०प०, वेप्, त्रस्—१—४—प० ।

कारीगर (देवताओं का) = त्वष्टृ, पु०

कारीगरी = कला, स्त्री० ।

किताब = पुस्तक, न०, ग्रन्थ, पु०।

किनारा = तीर—न० ।

किया हुआ = कृत (कृ का निष्ठा)

किला = दुर्ग—न० ।

किस प्रकार = कथम्—अव्यय ।

किसान = कृषीवल—पु०,—हालिक, पु० ।

कीचड़ = पङ्क—पु० ।

कुटी = आश्रम, पु०, उटज, पु० ।

कुत्ता = सारमेय, पु०, श्वान, पु०।

कुम्हार = कुम्भकार—पु० ।

कुरूप = विरूप, गु० ।

कुल = वंश, पु० ।

कुल = गु०—अखिल ।

कुल = सर्वथा, अव्यय ।

कुल्हाड़ा = परशु, पु०, कुठार, पु०

कुंवा = वापी, स्त्री०, कूप, पु० ।

कुवेर = धनपति, पु० ।

कुवेर का नौकर = यक्ष, पु० ।

केवल = एव, अव्यय, एक, सर्वनाम

कैसे = कथम्, अव्यय ।

कोई एक = अन्यतर- (सर्वनाम) ।

कोठड़ी या कमरा (जिसमें स्त्रियां रहती हों) = अन्तःपुर, न० ।

कोपल = पल्लव, पु०, अङ्कुर ।

कोश = निधि, पु०, कोश, पु० ।

कोशिश = उद्यम, पु०, उद्योग, पु० प्रयत्न, पु० ।

कोस = क्रोस, पु० ।

क्रोध = क्रोध, पु० ।

क्रोधी = चण्ड, गु० ।

क्षमा करना = क्षम् (क्षाम्) ४ गण प० (१ गण-आ०प०) ।

क्षीण करना = सूद्—१०गण-आ० प० (नि-) (निषूद्) ।

क्षीण होना = क्षि(क्षय्) १ गण-प०

ख

खज़ाना = कोश, पु०, निधि, पु०।

खड़ा होना = स्था (उत्-) १ गण प० (कर्म या भाववाच्य में स्थी)

खबर = वार्ता—स्त्री० ।

ख़बरदारी रखना = तन्त्र-१० गण उ०प० ।

ख़याल = आध्यान, न० ।
ख़राब आदमी = दुर्जन—पु०—खल, पु० ।
ख़राब रास्ता = विमार्ग, पु० ।
खाना = अद् २ गण-प०, भक्ष्—१० गण प० हृ-(आ-) १ प० चर् १ प० ।
खाना = भोजन—न० ।
खाने में उचित = पत्थ्य, न० ।
खारी = लवण, गु० ।
खाल = चर्मन्, न० ।
खिजूर (पेड़) = खर्जु स्त्री०, खर्जूर, पु० ।
खिड़की = वातायन, न० ।
खिदमत करना = सेव् १ गण—आ०प० ।
खिलना = विकास, पु० ।
ख़ुश = सुख भाज, गु०, निर्वृत्तिमत्, गु० प्रसन्न (प्र + सद् का निष्ठा) कुशलिन्, गु० ।
ख़ुश करना = ह्लाद्—१० गण उ० प० (आ-) ।
ख़ुश करनेवाला = अनुरञ्जन, न० ।
ख़ुश करनेवाली = रम्य, गु०, आह्लादक, गु० ।
ख़ुश होना = नन्द, अभि के साथ, १ गण-प०, मुद् (मोद) १ गण आ०प० ।
ख़ुशी = भोग, पु०, उत्साह, पु० रति, स्त्री०, महोत्सव पु० ।
खूबसूरत = रम्य, गु० मनोहर गु०
खूबसूरती = सौन्दर्य, न० ।
खेत = क्षेत्र, न० ।
खेल = क्रीड़ा, स्त्री०, नाटक, न० ।
खेलना = रम्-१ गण आ०प०, क्रीड् १ गण प० हृ (हर्)-१ गण प० (वि-) ।
खोटा = भ्रष्टांस, गु०, दुर्जन पु०, खल, पु० ।
खोटा चलन = दुराचार, पु० ।
खोदना = खन् १ गण प० (उद्) भी ।
खौफ़नाक = दारुण, गु० ।

ग

गँवारपना = वैयात्य, न० ।
गङ्गा = भागीरथी, स्त्री० ।
गद्दी = सिंहासन, न० ।
गम्भीर = धीर, गु०, निम्न, गु० ।
गरम होना = तप्-१-प०, धूप् १ प्र०
गरमी = ग्रीष्म, पु०, तेजस्, न० ।
गरमी का सताया हुआ = सन्तप्त, (सम् + तप् का निष्ठा) ।

गरीब = दरिद्र, गु०, दीन, गु० ।
गरीबी = दैन्य. न० ।
गलती करना = मद्-१ गण प० ।
गला = कण्ठ, पु० ।
गली = रथ्या, स्त्री० ।
गवाही = प्रमाण, न० ।
गवैया (या गानेवाला) = गायक,पु०
गहना = अलङ्कार, पु०, भूषण न०
गहना पहनना (या पहनाना) = भूष् - १० गण-प० ।
गाँव = नगर-न०, ग्राम-पु०, पुरी-स्त्री० ।
गाना = गान—न० ।
गानविद्या = सङ्गीत—न० ।
गाय = धेनु—स्त्री० ।
गायों का बाड़ा = गोष्ठ—पु० ।
गाल = कपोल - पु० ।
गिनना = गण्-१० गण प० ।
गिरजाना = स्त्रंस्—१ आ० ।
गिरना = पत्—१ गण-प०, ध्वंस्-१ आ०प० ।
गिरना = पात—पु० ।
गीत = गीत—न० ।
गीदड़ = शृगाल—पु० ।
गीला होना = द्रु-१ गण-प० ।
गुणवाला = गुणवत्—गु० ।
गुफा = विवर—न० ।
गुरु = आचार्य—पु० ।
गुस्ताखी = मदप—ु० ।
गुस्सा = क्रोध—पु० ।
गुस्से होना = कुप्-४ गण प० ।
गूंगा = कड—गुण ।
गूंथना = ग्रन्थन - न० ।
गेरना = गल—१-प० ।
गोदी में बैठा हुआ = उत्सङ्गवर्तिन्—गु० ।
गोश्त = मांस—न० ।
गौर = आध्यान—न० ।
ग्वाल = गोप—पु० ।

घ

घटता हुआ = चयिन्—गु० ।
घड़ा = घट—पु० ।
घमण्ड = मद—पु० ।
घमण्डी = उद्धत (उद् + हन् का निष्ठा) ।
घर = गृह, भर्मन्, सद्मन्—न० ।
घास = तृण—न० ।
घी = घृत, हविस्—न० ।
घुसना = विश्-६ – प०, अच्—१ ५ -- प० ।
घृणा करना = व्रज्—१-१० प० ।

घेरना = वृ (परि-) (केवल कर्म व भाववाच्य में)

घोड़ा = अश्व - पु० ।

घोड़े का मालिक = अश्वपति, पु०

च

चचा = पितृव्य—पु० ।

चटाई = कट—पु० ।

चढ़ना = रुह् (रोह्) १ गण—प० (आ—) ।

चतुर = दक्ष—गु० ।

चतुराई = चातुर्य—न० ।

चपल = चञ्चल—गु० ।

चमक = कान्ति—स्त्री० ।

चमकना = राज-वि के साथ-१०-प०, काश्-१ गण-आ०प० (प्र-) द्युत् (द्योत्) १ गण-आ०, तप, १-प०, भ्राश् (भ्लाश्) ४ गण—आ०, विच्छ्—१० गण-उ०प०

चमकीला = उज्ज्वलम्—अव्यय ।

चलदेना = गम् [गच्छ्]-१ गण-प० (निर्-) ।

चलना = चर्-१ गण-प०, चल, सृ, द्रु-सव १ गण-प०, रि-६-प०; विच्छ-६-प० ।

चलाना = नी—१ गण-प० ।

चाखना = स्वाद्—१ गण-आ० ।

चाँद = चन्द्र, इन्दु—पु० ।

चांद की चांदनी = कौमुदी-स्त्री० ।

चांदना = प्रकाश पु०; ज्योत्स्ना. स्त्री०, प्रभा-स्त्री० ।

चांदी का बना हुआ = रजत-गु० ।

चाल = गति—स्त्री० ।

चालचलन = आचार—पु० ।

चावल (पकेहुए) = ओदन = पु० ।

चावल = व्रीहि, तण्डुल—पु० ।

चाह = इच्छा—स्त्री० ।

चाहना = इष् [इच्छ्] ६ गण-प०, स्पृह-१०-प०; वाञ्छ्-१-प०; लिष् १-४-प० ।

चिड़िया = विहग—पु० ।

चिपकना = सञ्ज्—१-प० ।

चीज़ = अर्थ—पु० ।

चुगना = उञ्छ्—६-प० ।

चुगली = निन्दा—स्त्री० ।

चुटला = कवरी—स्त्री० ।

चुनना = वृ—१-१० उ०प० ।

चुप = मौन—न०, मूक—गु० ।

चुपचाप = तूष्णीम्—अव्यय ।

चुराना = चुर्—१० उ०प० ।

चंजारा देवताओं का = त्वष्टृ - पु०

चेरी = दासी—स्त्री० ।

चेला = शिष्य, छात्र—पु० ।

चैन में होना = शम्—४-प० ।

चोटला = कवरी—स्त्री० ।

चोटी = शिखर—पु० ।

चोड़े = विस्पष्ट—गु० ।

चोपाया = पशु - पु० ।

चोर—स्तेन—पु० चोर - पु० ।

चोरना = चुर-१०-प० ।

चोरी करना = चुर्-१०-प० ।

छ

छड़ी = दण्ड—पु० ।

छाया = छाया—स्त्री० ।

छाती = वचस् - न० ।

छापना = प्रथ्—१०-प० ।

छिड़कना = सिच् [सिञ्च] ६ गण-प० ।

छितराना = अस्-४-प० (निर) ।

छिपकली = हालिनी—स्त्री० ।

छिपाना = गुह्-१-उ०प० ।

छुड़ाता = धृ—१-उ०प० (उद्)

छूना = स्पृश्—६ गण-प०; पृच्—१-प० ।

छेद = विवर—न० ।

छोटा (सब से) = कनिष्ठ—गु०; लघु-गु०, कनीयस्-गु० ।

छोटाई = लघिमन् पु० ।

छोटी साली = हाली—स्त्री० ।

छोड़ना = त्यज्-१-प०, मुच [मुञ्च] ६ गण-प०; सृज्-६-प०; हृ-१—उ०प० (परि-); इच्-उद्—); व्रज्-१-१०-प० ।

छोड़ना = त्याग—पु० ।

ज

जँवाई = जामातृ—पु० ।

जगह = स्थान—न० ।

जङ्गल = अरण्य,-बन,-न० ।

जङ्गल में रहनेवाला = वनौकस्—गु० ।

जड़ = मूल—न० ।

जतन = उपाय, प्रयत्न, प्रयास-पु० ।

जन्म = उद्गम, उद्भव—पु० ।

जब = यदा—अव्यय ।

जमीन = भूमि—स्त्री० ।

जल = उदक—न० ।

जवान औरत = प्रमदा—स्त्री० ।

जवाहिर = मणि—पु०, रत्न-न० ।

जहर = विष—न० ।

जहाँ = यत्र—अव्यय ।

जहां से = यतः—अव्यय ।

जाँचना = स्पृश्—६ गण-प० (वि-) लक्ष्-१०-उ०प० (सम्-) ।

जाड़े का मौसम = शरद्—स्त्री०।
जात = वर्ण—पु०; जाति, स्त्री०।
जाता हुआ = गच्छत् (शतृ प्रत्ययान्त)।
जानना = बुध-१-प०, गम् [गच्छ्] १ गण-प०-(अव—); ज्ञा (केवल कर्मवाच्य में); चित्-१-प० १०-आ०।
जानवर = भूत—न०, प्राणिन्, जीव—पु०।
जाना = गम्-१ गण-प० चर्, व्रज १ प०, ऋ [ऋच्छ] १ गण-प० रि-६ गण-आ०।
जाना = गमन—न०।
जानेवाला = गन्तृ - पु०।
ज़ाय होना = तम्-४-प०।
ज़ाहिर करना = दिश्—६ उ०प० (निर्-)।
जिठानी = यातृ—स्त्री०।
जितेन्द्री = यति—पु०।
जी = जीव—पु०, जीवित—न०, प्राण - पु०, आत्मन् - पु०।
जीतना = जि-१ गण-प०।
जीतना = जय पु०, विजय।
जीतता हुआ = जयत् (शतृ प्रत्ययान्त)।
जीता हुआ = अभिभूत-(अभि + भू का निष्ठा)।
जीना = जीव् -१ गण-प०
जीने का ढंग = चरित—न०।
जीभ = जिह्वा - स्त्री०।
जीविका = वृत्ति—स्त्री०।
जूती = उपानह् — स्त्री०।
जेलखाना = कारागृह न०।
जेवर = भूषण — न०।
जैसा = इव—अव्यय।
जैसे = अथ—अव्यय, यथा।
जोड़ना = युज्-१-४-प०।
जोर = पराक्रम—पु०, बल-न०।
जोहड़ = पल्वल न०।
जौहरी = मणिकार पु०।
ज्ञान = विद्या—स्त्री०।

झ

झगड़ा = कलह पु०।
झिड़की = उपालम्भ—पु०।
झील = सरस्—न०, कासार-न०।
झुकना = नम्-१–प०।
झुण्ड = सार्थ, यूथ - पु०।
झूठ = असत्य, अनृत — न०।
झूठी वस्तु = अवस्तु न०।
झोंपड़ा = मण्डप, उटज—पु०।

ट

टहनी = शाखा स्त्री० ।

टहलना = चर्-१ गण-प०, क्रम्, १-४-प० ।

टापू = द्वीप पु० ।

टूटना = भङ्ग - पु० ।

टूटना = जॄ-१-४-प०, १०-उ०प० ।

टेढ़ा = वक्रित—गु० ।

टेढ़ेपने से = तिरस्—अव्यय ।

ठ

ठण्डा करना = सान्त्व-१०गण-प०

ठहरना = स्था-१ गण-प० ।

ठहरने का स्थान = संश्रय—पु० ।

ठहराना = प्रतिष्ठापन न० ।

ठहराव = आधार - पु० ।

ठहरा हुआ = तस्थिवस् - गु० ।

ठीक = द्रा—अव्यय ।

ठीक चलानेवाला = सम्यग्नेतृ-पु० ।

ड

डण्ठल (पत्ते या फल की) = वृन्त-न० ।

डर = भय—न० ।

डरना = त्रस् १-४-प० ।

डराना = तर्ज्-१०-आ०, १-प० ।

डाली = शाखा—स्त्री० ।

ढ

ढकना = आप-(वि-)—१-प० ।

ढकना = आवरण—न०, गुह्-१-उ०प० ।

ढीला = श्लथ—गु० ।

ढूंढ़ना = मार्ग, मृग्-१०-आ०-१०-प० । इष्-४-प० (अनु- ।

ढेर = राशि - पु० ।

त

तकलीफ = क्लेश—पु०, दुःख-न० ।

तकलीफ देना = खिद्-६ प० ।

तकाजा = निर्बन्ध—पु० ।

तख़्त = सिंहासन - न० ।

तड़का = प्रातर्—अव्यय ।

तदबीर = यत्न—पु०(—करना) = यत्-१ गण-आ०प० ।

तन्दुरुस्त = स्वस्थ - गु० ।

तन्दुरुस्ती = स्वास्थ्य न० ।

तपना = तप—१-प० ।

तपस्या = तपस् न० ।

तब = तथा—अव्यय ।

तबाह करना = सूद्-१०-आ० (नि-) [निषूद] ।

तमाशा = नाटक—न० ।

तयार = उद्यत (यम् का निष्ठा उद् के साथ)।

तयारी = संभार।

तरक्की = अभ्युदय—पु० ।

तरह = इव अव्यय।

तलवार = असि, खड्ग – पु० ।

तसबीर = प्रतिकृति, मूर्ति स्त्री०

ताकत = बल - न० ।

ताना = उपालम्भ—पु० ।

तारा = तारक—न० ।

तारीफ = स्तुति—स्त्री० ।

तालाब = तड़ाग—पु०, सरस्-न०

तालुवा = तालु—न० ।

ताव देना = ध्मा—१-प० ।

तिरना = तृ तर्) १-प० प्लु०-१-आ० (वि—)।

तीर = शर—पु०, वाण।

तीर्थ को जानेवाला = यात्रिक-पु०

तृप्त होना = तुष्-४-प० ।

तेज = निशित—गु० ।

तेज करना = शो—४-प० ।

तेजी = प्रकर्ष—पु० ।

तोड़ना = कृत्—६ गण, प०, त्रुट् १-४-प० दो-४-प० ।

तोता = शुक—पु० ।

तोलना = तुल—१०-प० ।

थ

थकना = श्रम्-४ गण-प०, क्लम्-१-४-प०, तम्-४-प० ।

थकाहुआ = प्रताम्—अव्यय।

थूकना = ष्ठिव् - १-४-प० ।

थोड़ा = ईषत्—अव्यय।

थोड़े काल ठहरनेवाला = चञ्चल गु ।

द

दक्खिन = दक्षिण (सर्वनाम)।

दबायाहुआ = अभिभूत (अभि+भू का निष्ठा)।

दया = कारुण्य न० ।

दरद = व्यथा, पीड़ा – स्त्री० ।

दरवान = कञ्चुकिन—पु० ।

दरिद्रता = दारिद्र्य—न० ।

दवा = अगद—पु०, औषध—न०

दहना = दक्षिण (सर्वनाम) ।

दाग = कलङ्क—पु० ।

दातार = रुक - गु० ।

दांत = दालु पु० ।

दाल (उड़द) माष—पु० ।

दिखाना = दिश् ६-प० ।
दिन = अहन्—न० ।
दिनमें = दिवा—अव्यय ।
दिल = हृदय—न०, अन्तःकरण, अन्तरात्मन्—पु० ।
दिलबहलाना = रम्—१ गण-आ०
दीन = रङ्क = गु०, दरिद्र-गु० ।
दुःख = दुःख—न०, पीड़ा, आपद्, विपद्, विपत्ति—स्त्री० ।
दुःखदेना = तुद्-६-प०, पीड़-१०प०
दुःखदेनेवाला = रिष्व गु० ।
दुनियां = जगत न० ।
दुप्यारा = अप्रिय—गु० ।
दुश्मनी = वैर—न० ।
दुष्ट = शठ, खल—पु० ।
दुष्ट पुरुष = राक्षस—पु० ।
दूध = दुग्ध, पयस्—न० ।
दूसरा = अन्य, इतर, त्वत, त्व (सर्वनाम)।
दूसरा आधा = परार्ध—न० ।
दूसरे का = परकीय—गु० ।
दूसरे का भला करना = उपकार-पु० ।
देखताहुआ = पश्यत् (शतृ प्रत्ययान्त) ।
देखना = दृश् [पश्य] १ गण प०, ईक्ष्-१ गण-आ०, (प्र—) भी, चित्-१-प०, १०-आ० ।
देखना = दर्शन—न० ।
देखनेवाला = द्रष्टृ—पु० ।
देनदार होना = धृ (धार्) १०-प०
देना = दा [यच्छ] १ गण-प० (प्र-) भी, सृज्-६-प० (अति-) ।
देनेवाला = दातृ—पु० ।
देवता = देव—पु०, देवता—स्त्री० दिवौकस्—पु० ।
देवताओं का गवैया = गन्धर्व-पु० ।
देर = चिरम्—अव्यय ।
देवर = देवृ—पु० ।
देही = शरीर—न०, देह—पु० ।
दैवी = आध्यात्मिक—गु० ।
दो = उभ, द्वि (सर्वनाम) ।
दोनों = उभय (सर्वनाम) ।
दो में से कौन सा = कतर (सर्वनाम] ।
दोस्त = मित्र—न०, वयस्य ।
दौड़ना = धाव-१ गण-प०, द्रु[धौ] १ गण-प० ।
दौरांनी = यातृ—पु० ।
द्वारपालक = कञ्चुकिन्—पु० ।

—***—

ध

धतूरा (पेड़) = खर्जुर—स्त्री० ।
धन = धन—न०, द्रव्य, वसु—न०, विभव—पु०, सम्पद्—स्त्री ।
धन को देनेवाला = कुबेर—पु० ।
धनवान = धनिक—पु० ।
धनुष = चाप पु० ।
धब्बा = कलङ्क—पु० ।
धमकाना = भर्त्स्-१० आ० ।
धरती = पृथ्वी, मही, वसुधा, भूमि स्त्री० ।
धर्म = पुण्य—न० ।
धिक्कार = धिक्—अव्यय ।
धिक्कार योग्य = गर्ह्य—गु० ।
धीरज = क्षमा - अव्यय ।
धूप = आतप - पु० ।
धूर, धूल = रजस्—न० ।
धोखा = कपट ।
धोखा दिया गया = वञ्चित (वच् का निष्ठा) ।

न

नई निकाली हुई = उपज्ञात—गु०
नकल = प्रतिकृति—स्त्री० ।
नगरबासी = पौर पु० ।
नगरी = पुरी—स्त्री० ।
नदी = नद पु०, नदी स्त्री० ।
नदीखना = नश् ४-प० ।
ननद = ननान्दृ—स्त्री० ।
नफरत करनेवाला = द्वेष्टृ—पु० ।
नमस्कार करना = नमस्—अव्यय, वन्द् = १—आ०, वाद्—१०—आ० (अभि-) ।
न मानना = मन्—४-आ० (अव-)
नया = नव—गु० ।
नया पत्ता = पल्लव—पु० ।
नरम् = मृदु—गु० ।
नशा = मद—पु० ।
नसीहत = उपदेश—पु० ।
नहाना = स्नान—न० ।
नहाना = गाह्—१-आ० (अव-) ।
नहीं = —अव्यय, मा, माङ् ।
नाच = नृत्य—न० ।
नाचना = नृत—४-प० ।
नाचनेवाली = नटी—स्त्री०, नटनी = स्त्री० ।
नाज = अन्न—न०, धान्य ।
नाड़ = कण्ठ—पु० ।
नाड़ = कण्ठ—पु० ।

नाम = अभिधान, नामन् – न० ।
नाव = तरि – स्त्री०, पोत – पु० ।
नाशहोना = नश्-४-प०, चि-१-प०
निकलना = हृ-१-उ०प०(परि –) पद् – ४-आ० (निस्) ।
नित्य = सदा – अव्यय ।
निन्दनीय = वचनीय – गु० ।
निन्दा = निन्दा – स्त्री० ।
निन्दाकरना = निन्द् – १ गण-प०
निस्फल = अनर्थ – पु० ।
नीचापन = दैन्य – न० ।
नीचे = नीचैस्—अव्यय ।
नुकसान = अपाय—पु०, अहित-न० ।
नूंह = नख - न० ।
नेकचलन = सदाचार – पु० ।
नेकी = गु० – पु०, कीर्त्ति-स्त्री० ।
नोक = अग्र—गु० ।
नोकर = किङ्कर, भृत्य – पु०, अनुजीविन्—गु० ।

—***—

प

पकड़ना = धृ (धार्) १० गण-प०
पकड़ना = ग्रहण – न० ।
पकाना = पच् – १ गण-प० ।
पक्षी = विहग, पक्षिन्—पु०—वयस—न० ।
पड़वा = प्रतिपद्—स्त्री० ।
पढ़ना = पठ्—१ गण-प० ।
पढ़ाना = नी—१ गण-प० (वि-) ।
पढ़ा लिखा = पण्डित – पु०, विद्वस्—गु० ।
पति = वल्लभ, रमण, भर्तृ-पु० ।
पत्ता = पर्ण - न० ।
पत्थर = शिला-दृशद्—स्त्री०, अश्मन्—पु० ।
पद्य = छन्दस् न० ।
पर = किन्तु, परम्, तु-अव्यय ।
परन्तु = किन्तु, परम्, तु-अव्यय ।
परन्द = विहग—पक्षिन्-पु० ।
परमात्मा = कूटस्थ – पु० ।
पराधीन = परवत—गु० ।
परीक्षा करना = ईक्ष्-१० गण—आ०-(परि—)
परीक्षा लेना = मृश्-६-प० (वि-) ।
पवित्र = पुण्य—न०, विशुद्ध-स्त्री०
पसन्द करना = वृ-१-१०-उ०प० ।
पहनना = धृ (धार्) १० गण-प०
पहरायती = रक्षक—गु० ।
पहरा हुआ = परिहित—गु० ।
पहाड़ = गिरि-पर्वत-शिखरिन्-पु०

पहिया = चक्र—न० ।
पहिला = प्रथम—गु० ।
पहिला आधा = पूर्वार्ध—न० ।
पहिले = पुरा—अव्यय ।
पहिले का अच्छा काम = प्रथम सुकृत—न० ।
पहुंचना = अच्—१-५-प० ।
पहुंचा हुआ = प्राप्त (प्र + आप् का निष्ठा) ।
पागल होना = मद् (माद्) १ गण—प० ।
पाठ = अध्ययन—न० ।
पाना = गम् [गच्छ] (अधि-) १ गण प०, लभ्-१ गण—आ० विद् [विन्द]-६ गण-आ० ।
पानी = जल वारि-उदक-अम्भस्, पयस्—न० ।
पानी के जीव = जलचर—पु० ।
पानी टपकना = द्रु(द्रव्) १ गण-प०
पाप = अधर्म-पु०, दुष्कृत—न० ।
पापी = पाप—पु०, नृशंस-गु० ।
पाया हुआ = प्राप्त (प्र + आप् का निष्ठा) ।
पार होना = तृ (तर्) १ गण-प०
पालती = हालिक—पु० ।
पालना = रक्ष्—१ गण-प०, पुष् ४ गण-प०, गुप्-१-प० ।
पालनेवाला = रक्षक गु०, पालक—पु० ।
पास = समया—अव्यय, सकाश-गु०
पाहुना = अतिथि—पु० ।
पिघलना (दया से) = द्रु-१-प० ।
पिछला आधा = परार्ध—न० ।
पिञ्जरा = पञ्जर - पु० ।
पिता = जनक—पु० ।
पीछे = पश्चात्-ततः- अव्यय, अनन्तरम्—गु० ।
पीछे २ जाना = गम् [गच्छ्]-१-प० (अनु-) ।
पीटना = तड् (ताड्) १० गण-प० हृ (हर) प्र के साथ १ गण-प०
पीड़ा = व्यथा—स्त्री० ।
पीना = पा (पिव्) १ गण-प० ।
पुकारना = ह्वे (ह्वय्) १ गण-प० ।
पुण्यवाला = पुण्यवत्—गु० ।
पुराना = जीर्ण—गु० ।
पुरुष = नर—पु० ।
पुस्तक लिखना (या बनाना) = नी (नय)-१-प० (प्र-) ।
पूछना = प्रच्छ् [पृच्छ्] ६-प० ।
पूजन = अर्चन—न० ।
पूजना = पूज—१० गण-प० ।
पूजने के योग्य = पूज्य गु० ।

पूजा करना = यज्-१ गण-प० ।
पूजा का घर = पूजास्थान—न० ।
पूजा की सामग्री = अर्घ्य न० ।
पूंछ = लांगूल—न० ।
पूरब = स्त्री०, पूर्व (सर्वनाम) ।
पूरा (जिससे बढ़कर न हो) = निरतिशय—गु० ।
पूरा = निपुण - गु०, सम (सर्वनाम) सिम ।
पूरा होना = फल्-१ गण-प० ।
पृथिवी = भूमि - स्त्री० ।
पृथिव्यादि = द्रव्य—न० ।
पेड़ = वृक्ष-तरु-शिखरिन्—पु० ।
पेशा = वृत्ति-जीविका—स्त्री० ।
पैदा करना = सृज्-६ गण-प० मा [मी]-४ गण-आ० (निर्-)
पैदा होना = जन[जा]-४ गण-प० भू (भव्)-१ गण-प० (उद्—), पद्-४-आ० (निस्-) ।
पैर = पाद—पु०, पद-मूल-न० ।
पोता = नप्तृ पु० ।
पोथी = पुस्तक—न०, ग्रन्थ-पु० ।
पोसना = पुष्-४-प० ।
प्यार = स्नेह-अनुराग-प्रेमन्—पु०, अनुरक्ति—स्त्री० ।
प्यारा = प्रिय-स्निग्ध-गु०, वल्लभ-पु०
प्यास = तृष्णा—स्त्री० ।
प्यासा = तृषित—गु० ।
प्रकाश = कान्ति-स्त्री०, तेजस्-न०
प्रख्यात = यशस्वत्—गु० ।
प्रतिपदा = प्रतिपद्—स्त्री० ।
प्रवीणता = प्रावीण्य-कौशल-न० ।
प्रशंसा = स्तुति—स्त्री० ।
प्रशंसा करना = शंस्—१ गण-प०, कत्थ १-आ० । श्लाघ्-१ गण-आ० नू—६-प०, पण्, पन्-१-प० ।
प्रश्न करनेवाला = प्राश्निक ।
प्रसन्न = कुशलिन्—गु० ।
प्रसन्न करना = प्री [प्रीण] १०-प०, रुच (रोच्) १-आ० ।
प्रसन्न करनेवाला = अनुरञ्जन-न० ।
प्रसन्नता = उत्साह—पु० ।
प्रसिद्ध करना = घुष्-१०-प० ।
प्रार्थना = वचन—न० ।

फ

फटा हुआ = जीर्ण—गु० ।
फड़कना = स्फुर्-६-प०, स्पन्द्—१ गण-आ० ।
फरसा = परशु—पु० ।
फल = परिणाम—पु० ।
फलना = फल्-१ गण-प० ।

फलाहारी = फलाशिन्—गु० ।

फाँसी = जाल—पु० ।

फाड़ना = दृ (दार्) १० गण-प०, व्रस्-६-प०, त्रुट्-१-४-प० ।

फायदा = लाभ—पु० ।

फावड़ा = खनित्र – न० ।

फ़िकर = चिन्ता—स्त्री० ।

फिकरमन्द = सोत्कण्ठ—पु० ।

फिर = पुनर्-अव्यय, अनन्तरम्-गु०

फिरना = अट्-१ गण-प०, चर्-१ गण-प०, भ्रम्-४-प० ।

फिरना (इधर उधर) = संचलन-न०

फुरसत = अवकाश – पु० ।

फूंक मारना = ध्मा—न० ।

फूल = कुसुम—न० ।

फेंकना = क्षिप्-६ गण-प०, अस्—४ गण-प० ।

फैलना = अक्ष-१-५-प० ।

फैलाना = प्रथ्-१०-प०, कॄ-६-प० ।

फैला हुआ = प्रतान—अव्यय ।

फौज = बल-न०, सेना-स्त्री० ।

फौज का अफ्सर = सेनापति-पु० ।

ब

बंश = गोत्र न० ।

बकरा (री) = अज—पु० ।

बखेरना = अस्—४-प० (निर्—), कॄ—६—प० ।

बगैर = बिना – अव्यय ।

बग्गी = रथ—पु० ।

बघेरा = व्याघ्र—पु०, व्याल-पु० ।

बचन = वचस्—न० ।

बचाना = रक्ष्—१ गण-प०, धृ-१—उ०-प० (उद्-), गुप्-१-प० ।

बचानेवाला = रक्षितृ—पु० ।

बचाव = रक्षण—न० ।

बच्चा = बाल—पु०, शिशु-पु० ।

बटाऊ = अतिथि पु० ।

बटेऊ = पान्थ—पु० ।

बड़ना = विश्—६ गण-प० ।

बड़बड़ाना = गल्भ्—१ गण आ० प० (प्र—) ।

बड़ा = दीर्घ—गु०, पर-गु०, श्रीमत्, भगवत्-गु०, ज्यायस्-गु०

बड़ाई = प्रकर्ष—पु० ।

बढ़ता हुआ = वृद्धिमत्-गु० ।

बढ़ना = रुह् (रोह्)—१ गण-प० (प्र-)—ऋध्-१ गण-प० (सम्-)

बढ़ना = वृध्—(वर्ध्)-१ गण आ० प०, अक्ष्-१-५-प० ।

बढ़ना = विकास—पु० ।

बढ़ोतरी = अभ्युदय—पु० ।

बतलाना = कथ्—१०-गण प० ।

बताना = कृत्—१-उ०प० ।

बदन = देह—पु०, शरीर—न०, गात्र—न० ।

बदलना = दा [यच्छ्] १ गण-प० (प्रति—) ।

बदला = प्रतिक्रिया—स्त्री० ।

बनानेवाला = स्रष्टृ—पु० ।

बनाया हुआ = निर्मित (निष्ठा ।

बन्दर = कपि—पु० ।

बरफ = हिम—न० ।

बरबादी = नाश-पु०, बिनाश-पु० ।

बरस = वर्ष—न० ।

बलवान = प्रबल गु० ।

बलिदान = बलि—पु० ।

बस = अलम्—अव्यय ।

बस्ती = वसति ।

बहन = स्वसृ—स्त्री० ।

बहना = वह—१ गण-प० ।

बहना = प्रवाह—पु० ।

बहलाना = हृ (हर) १ गण प० (वि—) ।

बहादुर = वीर—पु०, धीर-गु० ।

बहादुरी = बीर्य—न०, शौर्य,-न०, धृति—स्त्री०, विक्रम-पु० ।

बहुत = प्रभूत—पु०, अतीव-अव्यय परम्—गु० भूरि—गु० ।

बहुत काल = चिरम्—अव्यय ।

बहुत प्यारा = प्रेयस्—गु० ।

बहुत बड़ा = भूयस्—गु० ।

बहुत दिनों जीनेवाला = आयुष्मत्—गु० ।

बहुत से = बहु—गु० ।

बहुतसों में से कौन सा = कतम सर्वनाम ।

बहुधा = प्रायस्-अव्यय बहुशस् ।

बहू = कान्ता स्त्री०,—स्त्री०—स्त्री०-भार्या-स्त्री०-पत्नी-स्त्री० ।

बाहें = भुजा—पु०, दोस्—पु० ।

बाग = उद्यान—न०, उपबन-न० ।

बाद = अनन्तरम्—गु० ।

बादल = मेघ—पु० ।

बाथ भरना = स्वञ्ज-१-आ० ।

बाँदी = दासी—स्त्री० ।

बाँधना = दृभ्-१-६-प० ।

बाप = जनक पु०, पितृ-पु० ।

बार बार = प्रायस्—अव्यय, अनेकशस् अव्यय ।

बालक = शिशु—पु०, डिम्भ-पु०, वत्स—पु० ।

बालों की लटी = कबरी—स्त्री० ।

बाहर = बहिस्—अव्यय ।
बाहर का = अन्तर्—सर्वनाम ।
बिगड़ा हुआ = दुष्ट—गु० ।
बिच्छू = खर्जुर ।
बिजली = विद्युत्—स्त्री० ।
बिना = ऋते—अव्यय हिरुक् ।
बिना काल या समय = अकाल-पु०
बिना पृथिवी = अभूमि—स्त्री० ।
बिना हरकत = निश्चेष्ट—गु० ।
बिपता = आपद् —स्त्री० ।
बिल्कुल = सर्वथा—अव्यय ।
बिल्ली = बिडाल—पु० ।
बिवाह करना = नी (नय्) १ गण प० (परि-) ।
बीरता = पराक्रम—पु० ।
बुढ़ापा = जरा—स्त्री० ।
बुद्धिमत्ता = कौशल्—न० ।
बुद्धिमान = प्रज्ञ—पु०, बुध, प्राज्ञ, पु०, धीमत्-गु०, मेधाविन्—गु०, धीर-गु० ।
बुरा = दुष्ट (निष्ठा) ।
बुराई = अनिष्ट—न०, अनर्थ-पु० ।
बुरा काम = दुष्कृत—न०, दुष्कृति—स्त्री० ।
बुरा चाहना = द्रुह् ४-प० ।

बुरी तरह से = तिरस्—अव्यय ।
बुरो दशा = दुर्दशा—स्त्री० ।
बुलाना = ह्वे (ह्वय्) १ गण-प०, मन्त्र्—१० गण-आ०प०(नि-) ।
बुहारना = सम्मार्जन—न० ।
बूढ़ा = जरठ—पु०, जीर्ण-गु० ।
बूढ़ा होना = जॄ—१-४-प० १० उ०प० ।
बूंद = बिन्दु—पु० ।
बेइज्जती करना = अवधीरणा-स्त्री०
बेकदरी = असारता ।
बेटा = पुत्र-पु०, तनय-पु०-सूनु-पु०
बेटी = पुत्री—स्त्री०, दुहितृ-स्त्री०, आत्मजा—स्त्री० ।
बेटे की बहू = वधू—स्त्री० ।
बेफायदे = वृथा—अव्यय ।
बेल = लता—स्त्री० (बचस्-न० ।
बेसवाद = अप्रिय—गु० ।
बेहोश होना = मुह्—४ गण-प०, मूर्च्छ्-१-प० ।
बैठक = आसन—न० ।
बैठना = विश्-६ गण-प० (उप्-)
बैठा हुआ = निषण्ण (नि + सद् का निष्ठा) तस्थिवस्—गु० ।
बैरी = अरि-पु०, द्वेष्टृ पु०-शत्रु-पु० ।

बैल = वृष—पु० ।

बोझ = भार—पु० ।

बोझा = वृक्ष—पु०, तरु-पु० ।

बोना = आरोपण—न० ।

बोलना = वद—१ गण-प०, जल्प्, भाष-१ गण-आ०प०, वच् (केवल कर्मवाच्य), लप् १-प० ।

बोलनेवाला = वक्तृ—गु० ।

बोली = वाचा—स्त्री०, वाणी-स्त्री० वाच् – स्त्री० ।

बोली का मीठापन = प्रियवादित्व—न० ।

ब्याह = विवाह—पु० ।

ब्राह्मण (बामन) = ब्राह्मण-पु० ।

भ

भजना = भज्—१ गण-प० ।

भड़कना = क्षुभ्-४ गण-प० ।

भयानक = चण्ड-गु०, दारुण-गु० ।

भरना = भृ (भर्)—१-उ० ।

भरोसा = श्रद्धा—स्त्री० ।

भला = पुण्यवत्—गु० ।

भलाई = सत्व—न०, कीर्ति-स्त्री० ।

भाई = भ्रातृ—पु० ।

भागना = धाव्—१ ग गण-प० ।

भाग्य = विधि - पु० ।

भायली = सखी—स्त्री ।

भिखारी = भिक्षुक— पु०, याचक पु० ।

भी = अपि—अव्यय ।

भीतर = आभ्यन्तर—गु० ।

भीतर जाना = विश्-६ गण-प० ।

भुजा = बाहु—पु०, दोस्-पु० ।

भूखा = क्षुधित ।

भूंठा = कुण्ठित—(निष्ठा) ।

भूत = राक्षस—पु०, रक्षस् ।

भूतनी = निशाचरी—स्त्री० ।

भूनना = भ्रस्ज् - ६-उ०प० ।

भेजना = हि (प्र-) (केवल कर्म वा भाववाच्य में) ।

भेट = उपहार—पु० ।

भैंसा = महिष—पु० ।

म

मक्खी = अलि—पु०, – भ्रमर ।

मंगता = भिक्षुक, याचक —पु० ।

मछली = मत्स्य—पु० ।

मच्छ = मत्स्य —पु० ।

मजबूत = प्रबल—गु० ।

मजबूती = दृढ़िमन्—पु० ।

मजा = रस—पु० ।

मण्डल = बिम्ब—न० ।
मत् = मा माङ्—अव्यय ।
मदरसा = पाठशाला—स्त्री० ।
मन = हृदय—न०-मनस्—न०, चित्त—न० ।
मनुष्य = जन पु०, नर—पु०, पुरुष—पु०,-मानव-पु० ।
मरना = मृ (म्रिय्) ६ गण-आ०प०
मल्लाह = नाविक—पु० ।
महरबानी = प्रसाद—पु०, कारुण्य—न०, कृपा—स्त्री० ।
महल = प्रासाद-पु०, हर्म्य—न० ।
महल के ऊपर की छत = प्रासादतल—न० ।
महादेव = धूर्जटि—पु० ।
महीना = मास—पु० ।
मस्ती = मद—पु० ।
मा = जननी—स्त्री०, मातृ-स्त्री० ।
मांगना = भिक्ष्, याच्—१ गण-आ०प० ।
माजरा = अर्थ—पु० ।
मांडा (विवाह का) = मण्डप-पु० ।
माता = जननी—स्त्री०, मातृ-स्त्री०
मानना = गण्—१०-प०, मन्-४ आ० (अनु-) ।
मानिन्द = वत् अव्यय ।

माफ़करना = क्षम् [क्षाम्] ४ गण प० ।
माफी = क्षमा—स्त्री० ।
मा बाप = पितृ (द्वि-में) पु० ।
मारना = तड्-१० गण—प०, हृ (हर)-प्र के साथ-१ गण-प०, सद्-१० गण-आ०प. (नि-) (निषूद) हत् केवल कर्मयाभावमें) खिद् ६-प० व्यध्-४ प० ।
मारना = वध—पु० ।
मारने की इच्छा करना = द्रुह् ४ प० ।
माराहुआ = प्रतिहत (प्रति + हन् का निष्ठा) ।
माला बनाना = ग्रन्थन—न० ।
मालिक = अधिपति-पु०, प्रभु-पु० ।
मिट्टी = मृद्—स्त्री० ।
मिठाई = मोदक—पु० ।
मिठास = माधुर्य न० ।
मित्र = वयस्य—पु०, सुहृद्-पु० ।
मिलना (बांध घाल कर) = कुस्-४ गण-प०, श्लिष् ।
मिलना (मिल कर बहना) = गम् [गच्छ्] १ गण-प० (सम्-) ।
मीठापन = माधुर्य—न० ।
मीठेपने से = मधुरम्—अव्यय ।

मुक्ति = मोक्ष—पु० ।
मुट्ठी भर = मुष्ठि—पु० ।
मुड़ा हुआ = वक्रित—गु० ।
मुलायम = मृदु—गु० ।
मुसाफ़िर = पान्थ—पु० ।
मूंह = मुख—न० ।
मूंह फेरे = विमुख—गु० ।
मूंडना = तक्ष् – १ – प० ।
मूरख = मूर्ख—पु० ।
मूरती = मूर्ति—स्त्री० ।
मूर्छित होना = मुह्—४ गण-प०, मूर्छ्—१—प० ।
मूर्तीवाला = मूर्तिमत्—गु० ।
मेवा = फल—न० ।
मेहनत = उद्यम—पु० ।
मेहनत करना = श्रम्-४ गण-प० ।
मेहनती = दक्ष—गु० ।
मेहमान = अतिथि—पु० ।
मैलापन = श्यामिका ।
मोक्ष = मोक्ष—पु०, मुक्ति-स्त्री० ।
मोती = मुक्ता—स्त्री० ।
मोर = मयूर—पु० ।
मोहब्बत = स्नेह-पु०, प्रीति-स्त्री० ।
मोहर = निष्क—पु० ।
मौत = मृत्यु—पु०, यम—पु० ।

—***—

य

यकीन = विश्वास—पु० ।
यज्ञ करना = हु (आ-)-१-प० ।
यज्ञ करनेवाला = होतृ—पु० ।
यति = योगिन्—पु० ।
यत्न करना = यत्-१ गण-आ०प० ।
यश = कीर्ति—स्त्री०, यशस्-न० ।
यशवाला = यशस्वत्—गु० ।
यहां = अत्र, इह—अव्यय ।
यहां से = अतः—अव्यय ।
या = वा, उत—अव्यय ।
यात्री = यात्रिक—पु० ।
याद = स्मृति—स्त्री० ।
याद रखना = स्मृ—१ गण-प० ।
योग्य मनुष्य या चीज = पात्र—न०
योग्य होना = अर्ह—१ गण-प०, कल्प्-१-आ० ।

र

रखना = धा (धी) केवल कर्मवाच्य (नि-) रूप्-१० गण-प० (आ०)
रखा हुआ = निवेशित (नि + विश् का निष्ठा) ।
रंग = वर्ण—पु० ।
रंगना = रञ्ज्—१-४-उ०प० ।

रचना = रच्—१० गण-प० ।
रचनेवाला = स्रष्टृ—पु०—गु० ।
रथवान = सारथि-पु०, सव्येष्टृ-पु ।
रस = रस—पु० ।
रसोइया = सूद—पु० ।
रस्ते की थकावट = अध्वखेद-पु०।
रस्सी = रज्जु—स्त्री०, हिंजीर-पु०।
रहता हुआ = वसत्—(शतृ प्रत्ययान्त) अध्युषिवस्—गु० ।
रहना = वस्—१ गण—प० ।
रहने की जगह = वास—पु० ।
राक्षस = निशाचर—पु०, असुर—पु०, रक्षस्—न० ।
राक्षसी = निशाचरी—स्त्री० ।
राजतिलक = अभिषेक—पु० ।
राजतिलक किया गया = अभि-(अभि + सिच् का निष्ठा) ।
राजमन्त्री = अमात्य—पु० ।
राजा = भूप—पु०, पार्थिव-पु०-भूभृत्-पु०, राजन्-पु०, नृप-पु०, नृपति—पु० ।
राजी करना = आराधन—न० ।
राजी होना = तुष्—४ गण-प० ।
राज्य करता हुआ = शासत्- (शतृ प्रत्ययान्त) ।
राज्यनीति = नीति—स्त्री० ।

रात = निशा—स्त्री०, रजनी-स्त्री० तमिस्रा-स्त्री०, रात्री स्त्री० ।
रात में = दोषा—अव्यय ।
राज्ञी (जो गद्दी पर हो) = महिषी—स्त्री०, राज्ञी—स्त्री० ।
रास्ता = मार्ग—पु०, वर्त्मन्—पु०, अध्वन्—पु० ।
रिश्तेदार = बन्धु – पु०, ज्ञाति-पु०
रीति = विधि—पु० ।
रीधना = पच्—१ गण-प० ।
रुकना = रुध्-४ गण-आ०प०(नि-)
रुकावट = विघ्न—पु० ।
रुका हुआ = कुण्ठित (निष्ठा) ।
रुपया = द्रव्य—न० ।
रुई = तूल पु० ।
रेत = पांसु पु०, रजस् न० ।
रैयत = प्रजा—स्त्री० ।
रोक = विघ्न—पु०, आवरण-न० ।
रोका जाना = रुध-४ गण-आ०प० (नि—) ।
रोका हुआ = प्रतिहत (प्रति + हन् का निष्ठा) ।
रोग = व्याधि—पु० ।
रोजी = जीविका—स्त्री० ।
रोना = रुद् (केवल कर्म या भाववाच्य में)।

ल

लकड़ी (जलाने की) = इन्धन—न०, काष्ठ—न० ।

लगभग = प्रायस्—अव्यय ।

लगाना = आरोपण – न०, आरोप—पु० ।

लगाना = रूप् - १०-प० (आ-) ।

लँगड़ा = खञ्ज—पु० ।

लड़की = कन्या—स्त्री० ।

लड़ना = युध्—४ गण-आ०प० ।

लड़ाई = कलि—पु०, युद्ध—न०, विग्रह—पु० ।

लड़ाई का मैदान = समराङ्गण-न०

लड्डू = मोदक—पु० ।

लज्जित होना = लज्ज्-६-आ० ।

लम्बा = गुरू—गु०, दीर्घ—गु० ।

लाज = लज्जा—स्त्री० ।

लाना = नी—१ गण-प०, आ के साथ ।

लाभ = हित—न० ।

लाभदायक = हितकर—गु० ।

लायक = समर्थ—गु० ।

लायक होना = अर्ह-१ गण-प० ।

लाल = रतन—पु० ।

लालच = लोभ—पु० ।

लावणी करना = छो-४-प०, दो-४-प० ।

लाश = शव—न० ।

लिये = कृते—अव्यय ।

लीपना = लिप्—६—उ०प० ।

लुगाई = नारी—स्त्री० ।

लेजाना = नी—१ गण-प०, वह, हृ, आ के साथ भी ।

लेजाना = हरण—न० ।

लेपना = लिप्—६-उ-प० ।

लोटना = लुट्—४ गण-प० ।

लोभकरना = लुभ्—४ गण-प० ।

लौटना = गम् (गच्छ्) (प्रति—) और (आ-), १ गण-प०, वृत् (वर्त्)-१ गण-आ०प० (नि-) ।

व

वकील = दूत—पु० ।

वक्त = काल – पु० ।

वरदान = वर—पु० ।

वर्णन करना = वर्ण—१०गण-प० ।

वसन्तऋतु = वसन्त—पु० ।

वहां = तत्र—अव्यय ।

वहां से = ततः – अव्यय ।

वाकअ = अर्थ—पु० ।

वास्ते = अर्थ—पु०, कृते-अव्यय ।

विचार = ध्यान—न० ।

विचार करना = चिन्त्—१० गण-प०, ध्मा-१-प० ।

विद्यार्थी = छात्र—पु० ।

विरोधी = विमुख—गु० ।

वेद = छन्दस्—न० ।

व्रह्मा = वेधस् – पु० ।

श

शक = शङ्का—स्त्री० ।

शक करना = शङ्क—१ गण-आप०

शकवाला = साशङ्क – गु० ।

शक्ति = उत्साह पु० ।

शक्तिमान = समर्थ—गु० ।

शङ्ख बजाना = ध्मा—१—प० ।

शरम = लज्जा—स्त्री० ।

शरमिन्दा होना = लज्ज् – ६ आ०

शराब = मदिरा—स्त्री० ।

शरीर = देह—न० ।

शहद = मधु—न० ।

शहर = नगर—न०, पुरी—स्त्री०

शादी = विवाह—पु० ।

शान्ति होना = शम्-४ गण प० ।

शिकारी = व्याध—पु० ।

शिकारी जानवर = श्वापद—पु०, व्याल—पु० ।

शिक्षित करना = नी-१ प० (वि-)

शिर = शिरस्—न० ।

शिला = दृशद्—स्त्री० ।

शिष्य = छात्र—पु० ।

शुभ = कल्याण—न० ।

शुरू = आरम्भ—पु० ।

शुरू करना = रभ्—१ गण-आप० (आ—) ।

शेर = सिंह – पु० ।

शोच = चिन्ता—स्त्री० ।

शोचना = शुच् – १—प० ।

शोषना = शुष्—४ गण-प० ।

शोहरत = कीर्ति—स्त्री० ।

स

संसार = लोक—पु०, विश्व – न० सृष्टि—स्त्री०, जगत्—न० ।

संसार का करनेवाला = जगत्कर्तृ-पु० ।

सकना = कल्प्—१—आ० ।

सख़ी = रुक्ष—गु० ।

संग्रह = संघात—पु० ।

सचमुच = अद्धा—अव्यय, द्रढा ।

सचाई = ऋजुता – स्त्री०, सत्व—न०, तत्व—न० ।

सज़ा = दण्ड—पु० ।

सज़ा देना = दण्ड्—१० गण-प०।
सड़क = रथ्या—स्त्री०, मार्ग-पु०।
सत्कार = आदर—पु०।
सदा = सदैव—अव्यय।
सन्तोष रखनेवाला = धीर - गु०।
सन्देसा = सन्देस—पु०।
सन्देह = शङ्का - स्त्री०।
सन्देह करना = शङ्क्-१ गण-आ०प
सफ़ाई = विशुद्धता—स्त्री०।
सफेद = श्वेत—गु०।
सब = अखिल—गु०, सम, सर्व, विश्व, (सर्वनाम)।
सबक़ = पाठ—पु०।
सब जगह = सर्वत्र - अव्यय।
सबब = कारण—न०।
सबर = क्षमा—अव्यय।
सबूत = प्रमाण—न०।
सभा = समाज—पु०।
समझ = मति स्त्री०।
समझना = बुध—१ गण-प० गम् [गच्छ] अव के साथ-१ गण-प० चित्-१-प०, १०-आ०।
समय = काल—पु०।
समाज इकट्ठा होना = अवचय-पु०
समान = इव—अव्यय, प्रशान्।
समुद्र = समुद्र, उदधि—पु०, जलधि—पु०।

समूह = संघात पु०।
सम्बन्धी बन्धु पु०।
सम्बोधन का पद = भोस्—अव्यय।
संभालना = संभार—पु०।
सरकना = सृ-(सर) १० गण-प०।
सराहने योग्य = प्रशस्य—गु०।
सलाह = उपदेश—पु०।
सलाह करना = मन्त्र - १०-आ० १—प०।
सलाह देनेवाला = अमात्य—पु०।
सवेरा = प्रातर्—अव्यय।
सवेरे = प्रातर्—अव्यय।
सहज = मन्द—गु०।
सहज सहज = शनैस्—अव्यय।
सहना = सह्-१ गण-आ०-४-प०।
सहारा = आधार—पु०।
सहेली = सखी—स्त्री०।
साँझ में (को) = सायम्—अव्यय।
सांड = वृष—पु०।
साँप = सर्प—पु०, व्याल—पु०।
साथ = सह—अव्यय।
साथ चलनेवाली = सहचरी-स्त्री०।
साथी = वयस्य—पु०।
साधू = यति—पु०।
सानना = लिप्—६—उ०प०।
साफ = विस्पष्ट—गु०।

साफ करना = संमार्जन न० ।
सामग्री = संभार—पु० ।
सामने में = पुरतस्—अव्यय ।
सास / सासू } श्वश्रू—स्त्री० ।
सिखाना = दिश्-६ गण-प० (उप्-)
सिपाही = योधा—पु०, सैनिक-पु०
सिर = शीर्ष—न० ।
सिरा = अग्र—गु० ।
सिल = शिला—स्त्री० ।
सिवाय = ऋते—अव्यय ।
सीखना = शिक्ष्—१ गण-आ०प०
पठ्—१ गण-प० ।
सींचना = सिच्—६ गण-प० ।
सुख = शम्—अव्यय ।
सुगन्ध देना = धूप्—१ प० ।
सुगन्धवाला = सुरभि—गु० ।
सुदी = शुक्ल-पक्ष ।
सुनना = श्रु—(केवल कर्म या भाववाच्य में) ।
सुनना = श्रुति—स्त्री०, श्रवण-न० ।
सुननेवाला = श्रोतृ—पु० ।
सुनार = सुवर्णकार—पु० ।
सुन्दर = रम्य—गु० ।
सुन्दरता = शोभा—स्त्री० ।

सुन्दर लगना = राज-१० गण-प० वि के साथ, शुभ् (शोभ) १ गण आ०प० ।
सुपना = स्वप्न—पु० ।
सुस्ती = जाड्य—न० ।
सुअर = किरि—पु०, बराह-पु० ।
सुआ = शुक—पु० ।
सूंघना = घ्रा [जिघ्र]-१-प० ।
सूखना = शुष् ४ गण-प० ।
सूरज = सूर्य—पु०, रवि, आतप, भानु—पु० ।
सृष्टि करनेवाला = धातृ—पु० ।
सेना = बल—न० ।
सेवा करना = सेव्—१ गण-आप०
सोच = ध्यान – न० ।
सोना = सुवर्ण—न०, हेमन्-न० ।
सौ = शत—न० ।
स्त्री पुरुष = जायापती—पु० (द्वि बचन में ही) ।
स्थान खाली = अवकाश—पु० ।
स्थापित करता हुआ = प्रवर्तन-न०
स्थिर = अबिचलित—(अ + वि + चल् का निष्ठा) ।
स्नेह = प्रीति—स्त्री०, भक्ति—स्त्री०
स्वभाव = प्रकृति—स्त्री० ।
स्वरूप का बदलना = विकार-पु० ।

स्वामी = अधिपति—पु०, प्रभु—पु०, भर्तृ-पु०, पति-पु०, स्वामिन्—पु०।

ह

हँसना = स्मि (स्मय्) १ गण-आ० प० (वि-) हस्-१-आ-(वि-)।

हठ = निबन्ध—पु०।

हथियार = अस्त्र—न०, शस्त्र-न०।

हद = सीमन्—स्त्री०।

हमेशा = सदा—अव्यय, सदैव—अव्यय।

हल चलाना = कृष्—६ गण-प०।

हल चलानेवाला = हालिक—पु०

हवा = पवन—पु०, वात—पु०, मारुत-पु०, वायु-पु०, मरुत्-पु०

हवा खाना = चर-१ गण-प०।

हां = सम्यक्—गु०, वाढम्-अव्यय

हाँकता हुआ = चोदयत् (शतृ-प्रत्ययान्त)।

हाथ = कर—पु०, पाणि।

हाथी = गज—पु०, नाग—पु०।

हाथी का बच्चा = करभक—पु०।

हानि = अपाय—पु०, अहित-न०

हाल = वार्ता—स्त्री०।

हिन्दुस्तान का रहनेवाला = भारतवर्षीय—पु०।

हिरन = हरिण—पु०, मृग-पु०।

ही = एव—अव्यय।

हुक्म = शासन—न०, आदेश-पु०, आज्ञा—स्त्री०।

हुनर = कला—स्त्री०।

हृदय = अन्तःकरण—न०।

होता हुआ = सत् (शतृ-प्रत्ययान्त)

होना = भू-१ गण-प०, अस्-१-गण-प०, वृत् (वर्त) १ गण आ० प०, विद्-४ आ०प०।

होनेवाला = भाविन्—गु०।

होम = हविस्—न०।

॥ इति ॥

संस्कृत शीघ्रबोधिनी ।

शुद्धिपत्रम् ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	५	पुरुप	पुरुष ।
३	१४	भण्डार	भण्डारकर ।
७	१८	हुआ	हुआ हो ।
८	५	मे	में ।
१०	४	[गच्छ]	[गच्छ्]
१३	७	अत्य:	अत्य ।
१३	६	त्तुभ्यथ:	त्तुभ्यथ ।
१४	२	[पिव]	[पिव्] ।
१४	२१	मिलते है	मिलते हैं ।
१७	७	पकते	पकाते ।
१६	१०	भीतर	भीतर ।
२०	१६	पहलो, दूसरो, चौथो, छठो, दशवों	पहले, दूसरे, चौथे, छठे, दशवें ।
२२	४	अभि + को	अभि—को ।
२३	५	को	की ।
२३	१८	जैले	जैसे ।
२४	१	पुलिङ्ग	पुल्लिङ्ग ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
२४	१३	परण्य	अरण्य ।
२४	१३	कपल	कमल ।
२४	१४	पन्न	अन्न ।
२४	१५	प्रर्घ	अर्घ ।
२९	३	ईश्वर पूजते हैं	ईश्वर को पूजते हैं
२९	११	ढूँढ़ता है	ढूँढ़ता हूँ ।
३२	८	कपिर्मासं	कपिर्मांसं ।
३३	१८	"द्रून्"	"द्रून" ।
३६	२०	का	के ।
३८	२०	एव के	एव अस् ।
३९	१३	कड़	कड ।
३९	२०	हुआ चाँद	हुआ; चाँदी ।
४०	२४	पर्वातात्पतति	पर्वतात्पतति ।
४१	१	हार	हरि ।
४१	४	भेजता है	भजता है ।
४७	१४	अर्थ को	अर्थ की ।
४८	४	आवे	आवें ।
४८	१५	म् क्या	म् का क्या ।
५१	२	(डय)	(डय्)
५१	५	(मोद)	(मोद्) ।
५१	१८	(म्रिय)	(म्रिय्) ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
५१	२१	डुथ्	डुय् ।
५१	२२	रिष्	रिय् ।
५८	३	टेर	ढेर ।
६१	१०	कूरूप	कुरूप ।
६१	११	(विरूप व सन्देश के बीच में भूल गये)	विश्व—न० संसार ।
६१	१३	वालां	वाला ।
६१	२०	चल	चल देना ।
६२	५	आ—	आ० ।
६३	२	जान्ता	कान्ता ।
६३	५	पृष्वी	पृष्वो ।
६४	१०	जंगले	जंगल ।
६४	१९	प्रतिङ्गापन	प्रतिष्ठापन ।
७२	४	जो	को ।
७२	६	को	[redacted] ।
७४	१९	आ + ईच्छत	अ + ईच्छत ।
७४	२०	देखो	* देखो ।
७५	७	उज्ज्वलम्–गु	उज्ज्वल–गु ।
७६	१४	कथयाम् *	प्रथयम् ।
७७	१७	भैंस	भैंसे ।
७९	८	अनिष्ठ	अनिष्ट ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
८०	११	रुक्मं	रुक्मं ।
८२	५	रूप लेजाओ	लङ् लकार के रूप लेजाओ ।
८३	१७	आता है।	आता है)।
८५	३	सख्येयन्नृ	सखीभिर्नृ ।
९०	७	को	का ।
९१	२	कर्त्ता	कर्तृ ।
९२	१०	पथ्य—पु०	पथ्य—गु० ।
९३	७–८	नान्येवामम	नान्यवाम ।
९३	१३	मैदन	मैदान ।
९४	४	प्रयों	प्रत्ययों ।
९५	१	जड़ता	जुड़ता ।
९५	१४	ङ्गल	अङ्गल ।
९५	१८	अच्छी	अच्छा ।
९६	५	नपुण	निपुण ।
९६	१२	पात्र–पु०	पात्र–न० ।
९८	१	अन्नृतम्मा	अन्तृतम्मा ।
९८	१	आङ्गलानां	अङ्गलानां ।
९८	१६	बालकों	बालको ।
१०२	२	आङ्गलभूमि	अङ्गलभूमि ।
१०४	२	सुष्ट्वा	सुष्ठ्वा ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध।
१०६	६	देलना	देखना।
११२	२०	व्यञ्जनों ले	व्यञ्जनो से।
११६	२	पचमानः	पचमान।
१२१	७	मे	में।
१२१	८	सें	में।
१२८	८	लिङ्ग	लिङ्।
१२८	२२	यूयाम्	इयाम्।
१२८	२२	इूतम्	इूताम्।
१२८	२२	अथाम्	आथाम्।
१२९	२०	चल	चल्।
१३३	५	महिमन	महिमन्।
१३५	२०	पुलिङ्ग	पुल्लिङ्ग।
१३९	३	भिन्नो	भिन्नोः।
१३९	५	दुराचारस्य अस्य	दुराचारस्यास्य।
१३९	६	ले अमुष्मिन्	लयमुष्मिन्।
१३९	९	यदेवं	यद्येवं।
१३९	१९	पूरुषौ	पुरुषौ।
१४०	१३	पनिले	पहिले।

१४१— सब से नीचे यह नोट चाहिये—

* इस उ के पहले यदि कोई 'इ' आवे तो वह गिर जाती है।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
१४२	४	नें	में ।
१४२	१८	वीधस्	वेधस् ।
१४७	४	शोभ	शोभन् ।
१४८	२१	का	को ।
१५४	३	वक्छ्	विच्छ् ।
१५४	१०	व्रश्च	ब्रश्च ।
१५५	१०	लिम्पति	लिम्पन्ति ।
१५६	१५	धर्म्म	धर्म्मं ।
१५७	१७	सच्म	सुच्म ।
१५९	७	कीनकिच्छृ	कीनचिच्छृ ।
१६०	१५	पाश	पाशं ।
१६१	८	त्वयात्मा	त्वमात्मा ।
१६१	८	संदर्शय	संदर्श्य ।
१६१	९	तिष्ट	तिष्ठ ।
१६१	१३	म्यनोह्मा	म्यनाह्मा ।
१६१	१५	सत्वमुत्थाय ।	सत्वरमुत्थाय ।
१६१	१६	भयत्राणां	भयत्राणं ।
१६१	१९	शर्म्मकृत	शर्म्मणाकृतः ।

संस्कृत शब्दावली।

शुद्धीपत्रम्।

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध।
१	१ला	७	पु०	प०।
१	२रा	९	पु०	प०।
१	१ला	१४	सिर	सिरा।
१	२रा	१७	अध्युषि-यस्	अध्युवि-बस्।
१	२रा	१९	कावट-पु०	थका-वट)-पु०
२	१ला	५	करताहुआ	करना
२	,,	६	करताहुआ	करना
२	,,	२४	गाम	नाम।
२	२रा	२४	(प्र०)	(प्र—)
३	१ला	१३	समाज	०
३	,,	१४	होना	करना
४	,,	२४	ह्लादक	आह्लादक
४	२रा	२२	उप्-)	(उप—)
६	१ला	७	औषधि	औषध
६	,,	१५	काँपना	प्रशंसा-करना।
७	,,	७	काष्ठ	काष्ट
७	,,	१६	कहां से	कहां
७	,,	१७	कंवारी	कुंवारी
७	२रा	२६	क्राड़	क्रोड़
८	१ला	३	क्रोस	क्रोश

पृष्ठ	का०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२रा	५	(उद्)	(उद्—)
८	१ला	७	(चाम्)१ गण-आ० प०-प०	१ग०आ० प० ४ [चाम्]प०
८	१ला	१५	२ गण	१ ग०
९	,,	२२	गुरू	गुरु
१०	२रा	११	(जा	[जा]
११	१ला	२१	जा	ज्ञा
११	२रा	३	(डय)	(डय्)
१२	१ला	१४	क्त०	त्म
१२	२रा	२३	(कर्मवाचमें 'दो') (प्र-)-देना	(दातृशब्द से पहिले समझो)
१४	१ला	८	द्विज	द्विज—
१४	,,	१९	धनुष	धनुस्
१४	,,	२४	घान्य	धान्य
१४	२रा	५	(अव्-	(अव०-)
१५	१ला	१२	नन्द	नन्द्
१५	२रा	१२	निरति-शय	निरति-शयं—
१५	,,	१८	निर्वृत्ति-मत्	निर्वृति-मत्

पृष्ठ	का०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	१ला	१	निश्चेष्ट	निश्चेष्ट—
१६	,,	८	आ-)	(आ-)
१६	,,	८	वि-)	(वि-)
१६	,,	१३	नीचौरा-ख्य	नीचौरा-ख्य—
१६	,,	१५	ऐ	ऐसे
१६	२रा	१९	पथ्य	पथ्य—
१६	,,	२४	पढ़ना, सीखना,	प्रशंसा करना
१७	,,	१९	पित्र	पित्ट
१८	,,	९	प्रतिहत्	प्रतिहत
२०	१ला	१६	, गण	१ गण
२०	२रा	१९	उ०-प०-	आ०प०
२१	१ला	१५	भोज	भोजन-
२१	२रा	१४	मधुरम्-गु०	मधुरम्—अव्यय
२१	,,	१५	(अव्)	(अव—)
२२	,,	१२	मूर्च्छ	मूर्च्छ्
२४	१ला	१७	रथ्यारुह-मान	रथ्यारु-ह्यमान
२४	,,	१९	शनच्	शानच्
२४	२रा	२०	रिच्-११०	रिच्-१-१०

पृष्ठ	का०	पंक्ति	अ०	शु०
२५	१ला	८	सम्बाधन	सम्बोधन
२५	,,	१३	लक्ष्मी-पु,	लक्ष्मी-स्त्री.
२५	,,	१७	लङ्ग	लङ्ग्
२५	२रा	२०	(केवलक-संवाच्यमें)	(केवलक-संवाच्यमें उच्)
२६	२रा	१	(वच्	(वञ्
२६	,,	१८	रङ्ग	रंग
२६	२रा	२२	वासुदेव	वसुदेव (वसुशब्द के आगे)
२८	१ला	१४	व्रश्च	व्रश्च्
२८	,,	१९	शङ्क	शङ्क्
२९	२रा	४	स्नम	स्नम्
३०	,,	१५	सम्यक्नेत्ट	सम्यङ्नेत्ट
३१	,,	११	१ गण	१० गण
३२	१ला	२२	(तिष्ट)	(तिष्ठ्)
३२	,,	१९	स्पन्द	स्पन्द्
३२	,,	२१	स्पर्ध	स्पर्ध्
३३	,,	९	(प—)	(प्र -)
३३	२रा	१	हिरुक्	हिरुक—
३३	,,	८	हृदय	हृदय—

भाषा शब्दावली ।

शुद्धिपत्रम् ।

पृ०	का०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१ला	७	(स्मय)	(स्मय्)
१	२रा	१३	(अ—)	(आ—)
२	१ला	३	अम्बर्	अम्बर
२	,,	१६	गण पु०	गण प०
२	२रा	२४	इङ्गलेण्ड	इङ्गलेण्ड
३	,,	१५	यम्	यस्
४	,,	१७	कक	काक
४	,,	१८	(प्रायस- पु०)	कुछनहीं चाहिये
४	,,	१९	(च्यय्)	कुछनहीं
५	१ला	४	वृति	वृत्ति
५	२रा	११	प्रयत्न,पु०	प्रयत्न,पु० प्रयास,पु०
६	१ला	१८	सुखभाज	सुखभाज्
६	,,	१८	निर्वृत्ति	निर्वृति
६	,,	२६	नन्द	नन्द्
६	२रा	१	(मोद)	(मोद्)
६	,,	१२	भृशंस	नृशंस
६	,,	१९	वेयात्य	वैयात्य
७	,,	३	मदप-,०	मद-पु०

पृष्ठ	का०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	,,	८	गल	गल्
८	१ला	२२	चल	चल्
८	,,	२५	विच्छ	विच्छ्
८	२रा	१३	स्पृह	स्पृह्
९	१ला	८	चुर	चुर्
९	,,	१५	(सञ्च)	(सिञ्च्)
९	,,	१७	(निर)	(निर्)
९	२रा	३	मुच	मुच्
१०	१ला	५	बुध	बुध्
१०	,,	११	ब्रज्र	ब्रज्
१०	,,	१२	(ऋच्छ)	(ऋच्छ्)
१०	१ला	१७	दित्	दिश्
१०	२रा	१	जीतहुआ	जीताहुआ
११	१ला	६	भङ्ग	भङ्ग
११	,,	१७	इद्धा	इद्धो
११	२रा	४	आप	आप्
११	,,	२१	तप	तप्
११	,,	२३	तथा	तदो
१२	१ला	६	इव	इव—
१२	२रा	२	तुल	तुल्

पृष्ठ	का०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१२	,,	१७	कञ्चुकिन	कञ्चुकिन्
१३	१ला	१०	पीड़	पीड़्
१३	,,	१२	जगत	जगत्
१३	,,	१३	अप्रिय	अप्रिये
१३	,,	१८	त्वत	त्वत्
१३	२रा	१	[पश्य]	[पश्य्]
१३	,,	७	[यच्छ]	[यच्छ्]
१३	,,	२२	धाव	धाव्
१४	१ला	१०	पृत्वी	पृथ्वी
१४	,,	१५	अव्यय	स्त्री०
१४	,,	२०	(वच्	(वच्)
१३	२रा	६	चफरत	नफरत
१४	,,	२०	नृत	नृत्
१४	,,	२४	नाड़=क-ण्ठ-पु०	कुछनहीं चाहिये
१५	,,	२	बयस	वयस्
१५	,,	१७	पखत	पखत्
१६	१ला	१३	[गच्छ]	[गच्छ्]
१६	२रा	२३	[प्रच्छ्]	[पृच्छ्]
१६	,,	२५	पूज	पूज्
१७	१ला	८	सम (सर्व-नाम)सिम	कुछनहीं चाहिये
१७	,,	१७	जन	जन्
१७	२रा	१३	[प्रीण]	[प्रीण्]
१७	,,	१४	रुच	रुच्

पृष्ठ	का०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८	१ला	१८	अच्च	अच्
१८	,,	२०	प्रतान	प्रतान्
१९	,,	१८	बसति	बसति-स्त्री०
१९	,,	२२	(हर)	(हर्)
१९	२रा	१४	भुजा-पु०	भुजा-स्त्री०
१९	,,	१८	खञ्ज	खञ्ज्
२०	१ला	२	बाहरका-इत्यादि	कुछनहीं चाहिये
२०	१ला	१७	कौशल्	कौशल
२०	२रा	१७	(बचस-न०	कुछनहीं चाहिये
२१	१ला	५	वद	वद्
२१	,,	६	भाष	भाष्
२१	,,	१२	त्व-न०।	त्व-न०व-चस्-न०।
२१	,,	२४	१गगण	१ ग०
२२	,,	१८	स्रौ०	स्त्री०
२२	२रा	८	सद	सूद्
२२	,,	८	हत	हन्
२३	,,	१६	अर्ह	अर्ह्
२४	,,	१९	रुध	रुध्
२५	१ला	८	आ-)	(आ-)
२५	,,	१४	समराङ्गण	समराङ्गण
२५	,,	१७	गुरू	गुरु
२५	,,	२४	अर्ह	अर्ह्

पृष्ठ	का०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५	१ला	२५	रतन-पु०	रतन-स्त्री.
२५	२रा	७	वह	वह्
२५	,,	२०	वर्ण	वर्ण्
२५	,,	२५	अ,य	अव्यय
२६	,, १ला	१०	शङ्क	शङ्क्
२७	,,	८	शङ्क	शङ्क्
२७	,,	२१	[गच्छ]	[गच्छ्]
२७	२रा	२	सम्बन्धी	सम्बन्धी—
२७	,,	५	(सर)	(सर्)
२७	,,	८	मन्त्र	मन्त्र्

पृष्ठ	का०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८	१ला	२	स:मग्री	सामग्री
२८	,,	६	नुप्)	नुप—)
२८	२रा	१	राज	राज्
२८	,,	२	(शोभ	(शोभ्)
२८	,,	८	(जिघ्र)	(जिघ्र्)
२९	१ला	१६	चर	चर्
२९	२रा	६	भारतष-पीय	भारतव-र्षीय
२९	,,	१६	(वर्त)	(वर्त्)

पुस्तक वितरण की तिथि नीचे अङ्कित है । इस तिथि सहित १५ वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए अन्यथा .६ नये पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा ।